5-3

श्री काशी संस्कृत ग्रन्थमाला २७१

स्मार्त-

यज्ञदीपिका

सम्पादकः

डॉ० कैलाशचन्द्र दवे

चौखम्भा संस्कृत संस्थान
पोस्ट बाक्स नं० ११३९
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

॥ श्रीः ॥

काशी संस्कृत ग्रन्थमाला
२७१

स्मार्त्त-

यज्ञदीपिका

[यज्ञप्रयोजन-पुरश्चरण-पञ्चाङ्ग-मण्डपपूजनादिहोम-देव-प्रतिष्ठा-न्यासान्तक्रमसंवलिता, पूजनादिनियम निर्देशपरिशिष्ट चित्र सहिता]

सम्पादकः
डॉ० कैलाशचन्द्र दवे
व्याकरणाचार्य, वेदाचार्य, एम० ए०, पी-एच्० डी०
वेद प्राध्यापक
संस्कृतविद्या धर्मविज्ञानसङ्काय, काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्भा संस्कृत संस्थान
पोस्ट बाक्स नं० ११२९
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

THE
KASHI SANSKRIT SERIES
271
*****

SMARTAYAJNADEEPIKA

[The valued monograph is a scholarly work of performing ritual sacrifices, shows ways of incantating gods and goddesses, give details about the almanac of Hindu Astrology, describes various laws of worships, holocausts etc. with full instructions and choiced appendices]

Edited by
Dr. KAILASH CHANDRA DAVE
Vyakaranacharya, Vedacharya, M. A., Ph. D.
Senior Lecturer,
Faculty of Sanskrit Learning & Theology
Banaras Hindu University
Varanasi (U. P.)

CHAUKHAMBHA SANSKRIT SANSTHAN
Publishers and Distributors of Oriental Cultural Literature
P. O. Chaukhambha, Post Box No. 1139
Jadau Bhawan, K. 37/116, Gopal Mandir Lane
VARANASI-221 001 (INDIA)

स्मार्त्त-

यज्ञदीपिका

भूमिका

इस संसार में जन्म लेने वाला प्राणी विभिन्न योनियों को प्राप्त करता हुआ प्रत्येक योनि में विशेष रूप से सुख की लिप्सा कर दुख से मुक्त होना चाहता है। किसी सुख के न मिलने पर प्रयत्नपूर्वक उसको प्राप्त करता है। यत्किञ्चित् सुख प्राप्त होने पर उससे भी अधिक सुख प्राप्त करने के लिए अनवरत प्रयास करता है। मनुष्य में जैसे-जैसे ज्ञान का उत्कर्ष होता है वैसे-वैसे वह अत्यधिक सुख की कामना करता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर नानाप्रकार के सुखों का उपभोग करता हुआ वह प्राणी हर्ष का अनुभव करता है। पशु-पक्षी हो या मनुष्य सबकी प्रायः यही स्थिति है। चालाक मनुष्य प्राणी अपनी सुख-सुविधा के लिए सबसे आगे दौड़ लगाता है। दौड़ लगाकर थक जाने पर भी जब उसको अपने अभिलषित फल की प्राप्ति नहीं होती है तो वह सोचता है कि केवल प्रत्यक्ष साधनों से ही इच्छित फल प्राप्त नहीं होता प्रत्युत और भी कोई अदृष्ट कारण इसमें अवश्य है। ऐसा मूर्ख मनुष्य इस अदृष्ट कारण को मात्र भाग्य की संज्ञा देकर उसके भरोसे रहकर अकर्मण्य भी हो जाता है। अहंकारी मनुष्य कभी-कभी अपनी बुद्धि से अदृष्ट, अश्रुत एवं अप्रचलित साधनो से अपने साध्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और उसके न प्राप्त होने पर दुखी भी होता है। कभी वह विपरीत साधन को ही सही साधन मान कर अपनी कल्पनानुसार कुछ कर्म करता है इससे भी जब इष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती तो फिर और अधिक दुखी होता है। किन्तु विवेकी ज्ञानवान्-मनुष्य देव नामक चेतन तत्त्व को अदृष्ट कारण मानकर विवेचन पूर्वक यह निश्चित करता है कि इस चेतन तत्त्व 'देव' की प्रसन्नता से ही अभिलषित फल

की प्राप्ति होती है। वह उस देवता की आराधना को ही सही साधन समझ कर उस देव-तत्त्व के स्वरूप, स्वभाव एवं गुणादिकों को जानने का प्रयत्न करता है। ध्यान, धारणा एवं तपस्यादि के द्वारा देव-तत्त्व के स्वरूप स्वभावादि का ज्ञान प्राप्तकर उसकी आराधना के लिए प्रवृत्त होता है। आराधना की प्रवृत्तियाँ यद्यपि विविध हैं किन्तु श्रुति एवं स्मृति के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग की प्रवृत्ति ही श्रेष्ठ है। अतः इस प्रकार की प्रवृत्ति के द्वारा जो देवाराधन किया जाता है वही याग एवं यज्ञ है।

देवाराधन के लिए किये जाने वाले विभिन्न धार्मिक कर्मों में यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है—"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" [शत० ब्रा० १।७।१।५] पूज्य एवं आराध्य होने के कारण वेद में देवता को भी यज्ञ के नाम से अभिहित किया गया है—"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः" [मा. सं. ३१।१६] अर्थात् एक चेतन तत्त्व किसी दूसरे उत्कृष्ट चेतन-तत्त्व के लिए जो यजन करता है, वही यज्ञ है।

प्राच्य वैदिक जगत् की यह मान्यता है कि सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् एवं सर्वथा समर्थ परम पिता परमेश्वर ने भी अपने बुद्धि बल से इस यज्ञ-तत्त्व की सर्जना नहीं की अपितु अनादिनिधना भगवती श्रुति [वेद] का आश्रयण करके ही पूर्व कल्पानुसार इस कल्प में भी यज्ञादि पदार्थों को कल्पित किया "धाता यथापूर्वमकल्पयत्"। इसी श्रुति या वेद में समस्त संसार के मांगलिक साधन निहित हैं। इसी श्रुति ने संसार के हित के लिए विविध यज्ञों का विधान किया।

शनैः-शनैः जिस प्रकार सृष्टि एवं सृष्टि में साधनो का विकास हुआ और मनुष्य में ऊहापोह की कुशलता एवं बौद्धिक क्षमता का विस्तार हुआ वैसे ही यज्ञों का विधान भी विस्तृत होता गया। सृष्टि के आदि काल में भगवान् परमेष्ठी (प्रजापति) के द्वारा अनुष्ठित प्रथम यज्ञ देवताओं को प्राप्त

हुआ। देवताओं से ऋषियों को एवं ऋषियों से परम्परया हम भारतीयों को यह यज्ञ सम्पदा प्राप्त हुई। श्रीमद्भगवद् गीता में इस यज्ञ-तत्व की महिमा का स्पष्ट वर्णन किया गया है—

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥

गीता—अ० ३ श्लो. १४

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥

गीता—अ० ३ श्लो. १०

यज्ञ के द्वारा ऐहिक तथा आमुष्मिक सब प्रकार की कामनाएँ पूर्ण होती है। प्राचीन काल से ही यज्ञ-कर्म के द्वारा मानव को उसके अभिलषित फल की प्राप्ति होती रही है। कामनाओं को पूर्ण करने वाला यज्ञ ही एक उत्तम मार्ग है। चाही जाने वाली सब कुछ वस्तु यज्ञ में निहित है। अतएव विभिन्न उक्तियाँ यज्ञ के सन्दर्भ में चरितार्थ हुईं—

"सर्वं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।"
"नह्यतोऽन्यः शिवः पन्था विशतः संसृताविह"
"यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।"
"यज्ञो वै विष्णुः।" इत्यादि।

प्राचीन काल में सोमयाग, वाजपेय, राजसूयादि याग प्रायः होते थे। वे श्रौत याग अत्यधिक नियम साध्य, श्रम साध्य एवं समय साध्य होने के कारण आज के आधुनिक व्यस्त समय में प्रायः क्वचित् कदाचित् ही होते हैं। स्मार्त यज्ञों में प्रायः समय एवं कर्त्ता का विशेष बन्धन न होने के कारण ये सामूहिक रूप से भी सरलता पूर्वक सम्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार

के स्मार्त यज्ञों की लोकप्रियता एवं इसकी अपेक्षा को दृष्टि में रखकर ही हमने स्मार्त्त यज्ञ दीपिका नामक ग्रन्थ को याजकों के सामने प्रस्तुत किया है। यद्यपि विभिन्न यज्ञों एवं देव-प्रतिष्ठादि कर्मों को साङ्ग सम्पन्न कराने हेतु बहुत सी यज्ञ-पद्धतियाँ एवं विविध निबन्ध ग्रन्थ हैं, किन्तु वे सब पृथक्-पृथक् किसी एक यज्ञ के लिए ही उपयुक्त हैं। कर्मकाण्डप्रदीपादि कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें प्रायः सभी यज्ञों का संग्रह है, किन्तु वे बृहत्काय एवं अत्यधिक मूल्य वाले हैं। इस स्मार्तयज्ञ दीपिका में प्रायः रुद्र, विष्णु, देवी, सूर्यादि देवों के यज्ञ सम्बन्धी आवश्यक कर्म-कलापों के साथ देव-प्रतिष्ठा सम्बन्धी आवश्यक कर्मों का भी विधान है। तत्तद्देवताओं के विशेष न्यास एवं सर्वदेव सामान्य न्यास भी याजको की सरलता के लिए दिये गयेहैं। ग्रन्थ बहुत बृहत्काय न हो जाय इसलिए मन्त्रों का प्रतीक रूप में उल्लेख किया गया है।

अन्त में इस ग्रन्थ के प्रकाशक चौखम्भा संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष श्री मोहनदास गुप्त शतशः धन्यवाद के योग्य हैं, जिन्होंने सहर्ष इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में चौखम्भा संस्कृत संस्थान में कार्यरत पण्डित श्री गणपति शङ्कर जी त्रिपाठी का श्रम एवं सहयोग प्रशंसनीय है, जिन्होंने तत्परता के साथ शीघ्रातिशीघ्र इसका प्रकाशन करवाया।

आशा है कि याजकगण एवं यज्ञ के जिज्ञासु जन इसको स्वीकार कर हमारी त्रुटियों की उपेक्षा करते हुए हमें अनुगृहीत करेंगे।

दोषान्निरस्य गृह्णन्तु सारमस्य मनीषिणः।

विद्वज्जनानुचर

कैलाशचन्द्र दवे

विद्वत्सम्मतयः

यज्ञानां दीपिकेयं जयति बुधवरैः श्रीदवेवंशजातैः
श्रीश्रीकैलाशचन्द्रैः समुपचितगुणा कर्मकाण्ड प्रवीणैः ।
स्मार्त्तानामानुपूर्वी विलसति पुरतः कर्मणां यामवेत्य
मन्त्राभ्यासोज्ज्वलेभ्यो यजनविधिविदामग्रणीभ्यो यथावत् ॥

रेवाप्रसादो द्विवेदी

भू. पू. सङ्काय प्रमुखः
स. वि. ध. वि. सङ्काय
काशी हिन्दू विश्व विद्यालय

विदितमेवैतत्सर्वेषां यद् भगवतो निश्वासभूतो वेदस्तावत् काण्डद्वयात्मकः । तत्र पूर्वाचार्यैः प्रथमं कर्मकाण्डस्यैव गणना कृताऽस्ति । यथैकं शुष्कं काष्ठखण्डं कारुयन्त्रकर्मद्वारा संस्कृतं सत् काञ्चिद्विशिष्टां संज्ञां प्राप्य बहुमूल्यं जायते तथैव कर्मकाण्डानुष्ठानेन संस्कृतशरीरः पुमान् ज्ञानकाण्डस्याधिकारी भवति ।

श्रुत्या प्रतिपादितेषु कर्त्तव्यभूतेषु नानाकर्मसु "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" [श. ब्रा. १।७।१।५] इति श्रुत्यैव यज्ञकर्मणः श्रेष्ठतमत्त्वं प्रतिपादितम् । यज्ञश्च जनतायाः कल्याणाय कल्पत इति निर्विवादम् । तथा च श्रुतिः— "यज्ञोऽपि तस्यै जनतायै कल्प्यते [ऐ. ब्रा. १।२।३]

यद्यपि यज्ञादिकं कर्म सम्पादितुं बह्व्यः पद्धत्यो ग्रन्थाश्च सन्ति परं तथापि विष्णवादिदेवानां यज्ञपद्धत्यो देवप्रतिष्ठादिविषयाश्च नैकस्मिन्नल्पकाये ग्रन्थे साकल्येन सारल्येन च सम्पादिताः समुपलभ्यन्ते । विष्णवादिदेवानां यज्ञपद्धत्यश्च पृथग्भूताः सन्ति ।

अतः सौविध्येन स्मार्त्तयज्ञकर्माणि देवप्रतिष्ठादिकर्माणि च सम्पादयितुं तद्विदां प्रेप्सावतां याज्ञिकानाञ्च साहाय्यार्थं हिन्दू विश्वविद्यालयस्थवेदविभागीयेन वेदप्राध्यापकेन पण्डित श्रीकैलाशचन्द्रदवे महाभागेन सम्पादिता "स्मार्त्तयज्ञदीपिका" प्रकाश्यत इति विज्ञाय सुभृशं तुष्यामि । दवेमहोदयस्य प्रयासः सफलो भविष्यतीत्याशासे ।

श्री रामनाथमिश्रः

[सारस्वतः] घसपाठी

ग्रन्थसम्पादन प्रशस्तिः

वेद कर्मकाण्ड एवं व्याकरणशास्त्र के प्रथितयश विद्वान् तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के वेदविभाग के वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. कैलाशचन्द्रदवे महोदय ने कुछ वर्ष पूर्व "ग्रह-शान्ति प्रयोगपद्धतिः" का संपादन किया था जो लोक में अत्यन्त उपयोगी रहा। उनका द्वितीय सम्पादित ग्रन्थ "स्मार्त यज्ञ दीपिका" प्रकाशित हो रहा है। अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आपने इस ग्रंथ में पुरश्चरणादि प्रयोग, मण्डप पूजन, विष्णु शिव गणेश सूर्य लक्ष्मी आदि प्रधान देवताओं की याग विधि आवरण-न्यासादि सहित संगृहीत किया है जो अपने में अपूर्व है।

भारत में एवं भारत से बाहर भी कर्मकाण्ड के क्षेत्र में प्रत्यक्ष कार्य करने वाले विद्वानों के लिए यह संग्राह्य ग्रन्थ है। मुझे विश्वास है कि आपका यह प्रयास सफल होगा। आगे भी आपके द्वारा अनेक कृतियों का संपादन तथा प्रकाशन होता रहे यही इस प्रसंग में मेरी शुभकामना है।

डॉ. विश्वनाथ वामन देव
धनपाठी, वेदाचार्य
वेद विभागाध्यक्ष,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय

विषयसूची

प्रथमः परिच्छेदः

इति प्रथमः परिच्छेदः

—००:०:००—

द्वितीयः परिच्छेदः

इति द्वितीयः परिच्छेदः

—००:०:००—

प्रतिष्ठाप्रयोगात्मकस्तृतीयः परिच्छेदः

परिशिष्टम्

।। श्री मङ्गलमूर्त्तये नमः ।।

यज्ञदीपिका

रक्तो रक्ताङ्ग रागांशुक कुसुमयुत स्तुंदिलश्चन्द्रमौले-
र्नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन करचरणो बीजपुष्पान्तनासः ।।
हस्ताग्रक्लृप्तपाशांकुशरद वरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो-
देवः पद्मासनो नो भवतु सुरनुतो भूतये विघ्नराजः ।।

इति शिखाबन्धनम्। 'अथ दिग्बन्धः' अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता-भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे। तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि। 'तालत्रयकरणम्' सर्वभूतानिवारकाय शार्ङ्गाय सशराय सुदर्शनायाऽस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा। (अनेन मन्त्रेण तालत्रयं कृत्वा)। (स्वस्य परितः सर्वदिक्षु) अस्त्रमुद्रां प्रदर्शयेत्। (ततः स्वदक्षिणभागे)। ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः। ॐ पूर्वसिद्धेभ्यो नमः। ॐ आचार्येभ्यो नमः। (स्ववामभागे) ॐ गणेशाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ योगिनीभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रेशाय नमः। 'भूमिताडनम्' अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन भूशुद्ध्यादि समारभे। स्ववामपार्ष्णिना (त्रिवारं भूमिं ताडयेत्)। 'भूशुद्धिः' भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। मातृका देवता। प्रस्तारपङ्क्तिश्छन्दः। भूशुद्धौ विनियोगः। भूमौ हस्तौ कृत्वा। (पश्चाद्ब्रूयात्तद्यथा)––ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि व्विश्श्वधाया व्विश्श्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं य्यच्छ पृथिवीन्दृꣳह पृथिवीम्माहिꣳसीः। 'भैरवनमस्कारः'––यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषिः। नारायणो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भैरवनमस्कारे विनियोगः––ॐ यो भूतानामधिपतिर्य्यस्मिम्मल्लोकाऽअधिश्श्रिताः। यऽईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहम्मयि गृह्णामि त्वामहम्। इति भूशुद्धिः।

अथ 'भूतशुद्धिः'––(मूलाधारात्समुत्थाप्य कुण्डलीं परदेवताम्। सुषुम्नामार्गमाश्रित्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत्। जीवं ब्रह्मणि संयोज्य हंसमन्त्रेण साधकः।) ॐ हंसः सोऽहम्। 'मातृकोपसंहारः' स च। 'क्ष' लयो 'ह' कारे। 'ह' लयः 'स' कारे। 'स' लयः 'ष' कारे। 'ष' लयः 'श' कारे। 'श' लयो 'व' कारे। (इत्यादि प्रकारेण अकारपर्यन्तं 'लयं' भावयित्वा। अकारः सहस्राम्बुजे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि

'लयम्' गत इति भावयेत्।) तच्च भावनम् ॐ 'क्ष' कारम् 'ह' कारे उपसंहरामि। ॐ 'ह' कारम् 'स' कारे उप०। ॐ 'स' कारम् 'ष' कारे उप०। ॐ 'ष' कारम् 'श' कारे उप०। ॐ 'श' कारम् 'व' कारे उप०। ॐ 'व' कारम् 'ल' कारे उप०। ॐ 'ल' कारम् 'र' कारे उप०। ॐ 'र' कारम् 'य' कारे उप०। ॐ 'य' कारम् 'म' कारे उप०। ॐ 'म' कारम् 'भ' कारे उप०। ॐ 'भ' कारम् 'ब' कारे उप०। ॐ 'ब' कारम् 'फ' कारे उप०। ॐ 'फ' कारम् 'प' कारे उप०। ॐ 'प' कारम् 'न' कारे उप०। ॐ 'न' कारम् 'ध' कारे उप०। ॐ 'ध' कारम् 'द' कारे उप०। ॐ 'द' कारम् 'थ' कारे उप०। ॐ 'थ' कारम् 'त' कारे उप०। ॐ 'त' कारम् 'ण' कारे उप०। ॐ 'ण' कारम् 'ढ' कारे उप०। ॐ ढ' कारम् 'ड' कारे उप०। ॐ 'ड' कारम् 'ठ' कारे उप०। ॐ 'ठ' कारम् 'ट' कारे उप०। ॐ 'ट' कारम् 'ञ' कारे उप०। ॐ 'ञ' कारम् 'झ' कारे उप०। ॐ 'झ' कारम् 'ज' कारे उप०। ॐ 'ज' कारम् 'छ' कारे उप०। ॐ 'छ' कारम् 'च' कारे उप०। ॐ 'च' कारम् 'ङ' कारे उप०। ॐ 'ङ' कारम् 'घ' कारे उप०। ॐ 'घ' कारम् 'ग' कारे उप०। ॐ 'ग' कारम् 'ख' कारे उप०। ॐ 'ख' कारम् 'क' कारे उप०। ॐ 'क' कारम् 'अः' कारे उप०। ॐ 'अः' कारम् 'अं' कारे उप०। ॐ 'अं' कारम् 'औ' कारे उप०। ॐ 'औ' कारम् 'ओ' कारे उप०। ॐ 'ओ' कारम् 'ऐ' कारे उप०। ॐ 'ऐ' कारम् 'ए' कारे उप०। ॐ 'ए' कारम् 'ॡ' कारे उप०। ॐ 'ॡ' कारम् 'ऌ' कारे उप०। ॐ 'ऌ' कारम् 'ॠ' कारे उप०। ॐ 'ॠ' कारम् 'ऋ' कारे उप०। ॐ 'ऋ' कारम् 'ऊ' कारे उप०। ॐ 'ऊ' कारम् 'उ' कारे उप०। ॐ 'उ' कारम् 'ई' कारे उप०। ॐ 'ई' कारम् 'इ' कारे उप०। ॐ 'इ' कारम् 'आ' कारे उप०। ॐ 'आ' कारम् 'अ' कारे उप०। ॐ 'अ' कारः' (सहस्रदलाम्बुजाकारे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि 'लयम्' गत इति भावयेत्), 'भूतोपसंहारः'—(पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं सवज्रकम्। लम्बीजाढ्यं स्वर्णवर्णं स्मरेदवनिमण्डलम्। जान्वोरानाभि चन्द्रार्धनिभं पद्मद्वयाकृति। वँ बीजयुक्तं

श्वेताभं मँ सोमं मण्डलं स्मरेत् । नाभेर्हृदयपर्यन्तं त्रिकोणं स्वस्तिकासनम् । रँ बीजेन युतं रक्तं स्मरेत्पातकमण्डलम् । हृदो भ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दुलाञ्छितम् । यँ बीजयुक्तं धूम्राभं वायव्यं मण्डलं (नभस्वत्) स्मरेत् । आब्रह्मरन्ध्र भ्रूमध्याद्वृतं स्वच्छं मनोहरम् । हँ बीजयुक्तमाकाशमण्डलं च विचिन्तयेत् । एवं भूतानि संचिन्त्य प्रत्येकं प्रविलापयेत् । भुवं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ नभस्यगुम् । विलाप्य 'खमहङ्कारे' महत्तत्वेप्यहंकृतम् महान्तं प्रकृतौ मायामात्मनि प्रविलापयेत् । शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा चिन्तयेत्पापपुरुषम् । वामकुक्षिस्थितं कृष्णमङ्गुष्ठपरिमाणकम् । विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकम् । मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुतम् । तत्संयोगिपदद्वन्द्वमुपपातकरोमकम् । स्वङ्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं च दुःसहम् । वायुबीजं स्मरन्वायुं सम्पूर्यैनं विशोषयेत् यथा——यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ, यँ. (इति षोडश (१६) वारं जपित्वा)। वह्निबीजं (स्मरन्नित्यं निर्दहेत्पापपूरुषम्), रँ, (इति चतुःषष्टि (६४) वारं जपयित्वा) ।
वायुबीजेन (तद्रक्षां बहिर्निष्कास्य यत्नतः) । यँ, (इति द्वात्रिशद्वारं (३२) जपित्वा) । सुधावीजेन (देहोत्थं भस्म संप्लावयेत्सुधीः) । वँ, वँ, वँ, वँ, वँ. वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, वँ, (इति षोडश (१६) वारं जपित्वा) । भूबीजेन (घनीकृत्य भस्म तत्कनकाण्डवत्) लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, लँ, (इति षोडश (१६) वारं जपित्वा । विशुद्धमुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं स्मरेत् । आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्ततः । अखण्डं ब्रह्म तस्मात्स्यात्प्रेरकः पुरुषस्तथा । प्रकृतेर्महदाकारस्ततोऽहं त्रिगुणात्मकः । तस्माद्वा एतस्मा-

दात्मन आकाशः सम्भूतः । आकाशाद्वायुः । वायोरग्निः । अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधयः । ओषधीभ्योऽन्नम् । अन्नाद्रेतः । रेतसः पुरुषः । स वा ऽएष पुरुषोऽन्नरसमयः हँ सः सोऽहम् । कुण्डली-जीवमादाय परसङ्गात्सुधामयीम् । संस्थाप्य हृदयाम्भोजं मूलाधार-गतं स्मरेत् । इति भूतशुद्धिः ।

अथ 'प्राणप्रतिष्ठाः'—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य । ब्रह्मविष्णु-महेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि । जगत्सृष्टिः प्राणशक्ति-र्देवता । आँ बीजम् । ह्रीँ शक्तिः । क्रोँ कीलकम् । प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः—ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्य-जुःसामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे । जगत्सृष्टयै प्राणशक्त्यै नमः हृदये । आँम् बीजाय नमः लिङ्गे । ह्रीँ शक्तये नमः पादयोः । क्रोँ कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु । एवं न्यासं कृत्वा । ॐ अँ, कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, आँ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ इँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, ईँ, शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः । ॐ उँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, ऊँ, त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणाऽत्मने मध्यमाभ्यां नमः । ॐ एँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, ऐँ, वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओँ, पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, औँ बचनादान-गतिविसर्गानन्दाऽत्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ अँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, क्षँ, अः मनोबुद्धयहङ्कारचित्तविज्ञानात्मने 'करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादि । (नाभेरारभ्य पादान्तम् । 'आँ' इति) पाशबीजम् । हृदयादारभ्य नाभ्यन्तं 'ह्रीँ' इति । शक्तिबीजम् । (मस्तकादारभ्य हृदयान्तम्) 'क्रौँ' इति, अङ्कुशबीजम् न्यसेत् । अथ 'ध्यानम्'—रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् । बिभ्राणा-सृक्कपाल त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः । (शिरसि तथा हृदि करं दत्त्वा) ॐ आँ, ह्रीँ, क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः सोऽहम् प्राणा इह प्राणाः । ॐ आँ, ह्रीँ, क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः जीव इह स्थितः ।

ॐ आँ, ह्रीँ, क्रोँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानीहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, ॐ, (इति प्रणवस्य पञ्चदशावृत्तीः (१५) कृत्वा) अनेन मम देहस्य पञ्चदशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम्। इत्युक्त्वा पश्चात् 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' (इति त्रीन्प्राणायामान्कृत्वा। यथा पर्वतधातूनां दोषान्दहति पावकः। एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते।) इति प्राणप्रतिष्ठा।

'अथान्तर्मातृकान्यासाः'—अस्य श्रीअन्तर्मातृकामन्त्रस्य। ब्रह्मा ऋषिः। मातृका सरस्वती देवता। गायत्री छन्दः। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयः। 'क्षँ' कीलकं। मातृकान्यासजपे विनियोगः—अं ब्रह्मऋषये नमः आं शिरसि। इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं वदने। उं मातृकासरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये। एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये। ओं स्वरशक्तिभ्यो नमः औं पादयोः। अं, क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गेषु। इति मातृकाऋष्यादिन्यासाः। ॐ अँ, कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, आम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इँ, चँ, छँ, जँ, झं, ञँ, ईँ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उँ, टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, ऊँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, ऐँ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अँ, ओँ, पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, औँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अँ, यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि। अथ 'ध्यानम्' पञ्चाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्मवक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम्। मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये। (ततो दक्षिणकनिष्ठिकायाः आद्यं पर्वारभ्य वामाङ्गुष्ठाद्यपर्वपर्यन्तं षोडशसु पर्वसु षोडश स्वरान्विन्यस्य वामतर्जनीमारभ्य दक्षिणतर्जन्यन्तमङ्गुल्यग्रेषु चतुरश्चतुरो वर्णान् क्रमेण कादिसान्तान्विन्यस्याङ्गुष्ठयोः "हलौ" सर्वाङ्गुल्यग्रेषु क्षकारं विन्यसेत्) यथा——ॐ अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, ऋँ, ॠँ, लृँ, ॡँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ, अँ, अः।

कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, । चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, । टँ, ठँ, डँ, ढँ, णँ, । तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, । पँ, फँ, बँ, भँ, मँ, । यँ, रँ, लँ, वँ, शँ, षँ, सँ, हँ, ळँ, क्षँ, इत्युक्त्वा पुनः पूर्वोक्तं मातृकान्यासं कुर्यात्)। ॐ अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, ऋँ, ॠँ, लृँ, लॄँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ, अँ, अः=इति षोडश-पत्रके कण्ठे। ॐ कँ, खँ, गँ, घँ, ङँ, चँ, छँ, जँ, झँ, ञँ, टँ, ठँ, इति द्वादशपत्रके हृदि। ॐ डँ, ढँ, णँ, तँ, थँ, दँ, धँ, नँ, पँ, फँ, इति दश-पत्रके नाभौ। ॐ बँ, भँ, मँ, यँ, रँ, लँ, इति षट्पत्रके लिङ्गे। ॐ वँ, शँ, षँ, सँ, इति चतुष्पत्रके गुदे। ॐ हँ, क्षँ, द्विपत्रके भ्रुवोर्मध्ये। 'अथ ध्यानम्' आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के। वासान्ते बालमध्ये ड–फ–क–ठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हँ, क्षँ तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥

इति अन्तर्मातृकाः ॥

अथ 'बहिर्मातृकाः' ॐ अँ नमः केशान्ते। ॐ आँ नमः मुखे। ॐ इँ नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ ईँ नमः वामनेत्रे। ॐ उँ नमः दक्षिण-कर्णे। ॐ ऊँ नमः वामकर्णे। ॐ ऋँ नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ ॠँ नमः वामनासापुटे। ॐ लृँ नमः दक्षिणगण्डे। ॐ लॄँ नमः वामगण्डे। ॐ एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐँ नमः अधरोष्ठे। ॐ ओँ नमः ऊर्ध्व-दन्तपङ्क्तौ। ॐ औँ नमः अधोदन्तपङ्क्तौ। ॐ अँ नमः मूर्ध्नि। ॐ अः नमः आस्ये। ॐ कँ नमः दक्षिणबाहुमूले। ॐ खँ नमः दक्षिण-कर्पूरे। ॐ गँ नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ घँ नमः दक्षिणकराङ्गलि-मूले। ॐ ङँ नमः दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे। ॐ चँ नमः वामबाहुमूले। ॐ छँ नमः वामकर्पूरे। ॐ जँ नमः नमः वाममणिबन्धे। ॐ झँ नमः वामाङ्गुलिमूले। ॐ ञँ नमः वामकराङ्गुल्यग्रे। ॐ टँ नमः दक्षिण-पादमूले। ॐ ठँ नमः दक्षिणजानुनि। ॐ डँ नमः दक्षिणगुल्फे। ॐ ढँ नमः दक्षिणपादाङ्गुलिमूले। ॐ णँ नमः दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ तँ नमः वामपादमूले। ॐ थँ नमः वामजानुनि। ॐ दँ नमः वाम-गुल्फे। ॐ धँ नमः वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ नँ नमः वादापादाङ्गु-

ल्यग्रे। ॐ पँ नमः दक्षिणकुक्षौ। ॐ फँ नमः वामकुक्षौ। ॐ बँ नमः पृष्ठे। ॐ भँ नमः नाभौ। ॐ मँ नमः उदरे। ॐ यँ त्वगात्मने नमः हृदि। ॐ रँ असृगात्मने नमः दक्षिणांसे। ॐ लँ मांसात्मने नमः ककुदि। ॐ वँ मेदात्मने नमः वामांसे। ॐ शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि वामहस्ताग्रान्तश्। ॐ षँ मज्जात्मने नमः दक्षिणपादाग्रान्तम्। ॐ सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादि पादान्तम्। ॐ हँ आत्मशक्त्यात्मने नमः हृदयादि जठरे। ॐ ळँ जीवात्मने नमः नाभ्यादि हृदयान्तम्। ॐ क्षँ परमात्मने नसः हृदयादि मस्तकान्तम्। ॐ छन्दः पुरुषाय नमः शिरसि। इति बहिर्मातृकाः। 'अर्पणम्' अनेन यथाशक्त्या कृतेन भूशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकान्याساख्येनकर्मणा अमुकर्माङ्गदेवतास्वरूपी परमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

इति भूशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृका
बहिर्मातृका न्यास प्रयोगः।

अथ लक्ष्मीविनायकमन्त्राङ्गभूतविघ्नेशादि-कलामातृकान्यासः

तद्यथा—सङ्कल्पः—ॐ अस्य श्री विघ्नेशादि कलामातृकान्यासस्य गणकऋषिः निचृत् गायत्री छन्दः विनायकोदेवता हलो वीजानि स्वराः शक्तयः मम सर्वेष्टसिद्धये न्यासे विनियोगः।

अथ षडङ्गन्यासः—ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा। ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं कवचाय हुम् ॐ गौं नेत्रत्रयाय वषट्। ॐ गः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ गुणांकुशवराभीति पाणिं रक्ताब्जहस्तया।
प्रिययालिङ्गितं रक्तं त्रिनेत्रं गणपं भजे॥

अथ कलान्यासः—१. ॐ अं विघ्नेशह्रीभ्यां नमः ललाटे। २. ॐ आं विघ्नराजश्रीभ्यां नमः मुखवृत्ते। ३. ॐ इं विनायकपुष्टिभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे। ४. ॐ ईं शिवोत्तमशान्तिभ्यां नमः वामनेत्रे। ५. ॐ उं विघ्नकृत्स्वस्तिभ्यां नमः दक्षिणकर्णे। ६. ॐ ऊं विघ्नहर्तृसरस्वतीभ्यां नमः वामकर्णे। ७. ॐ ऋं गणस्वाहाभ्यां नमः दक्षिणनासापुटे। ८. ॐ ॠं एकदन्तसुमेधाभ्यां नमः वामनासापुटे। ९. ॐ लृं द्विदन्तकान्तिभ्यां नमः दक्षिणगण्डे। १०. ॐ ॡं गजवक्त्रकामिनीभ्यां नमः वामगण्डे। ११. ॐ एं निरंजनमोहिनीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। १२. ॐ ऐं कपर्दिनटीभ्यां नमः अधरोष्ठे। १३. ॐ ओं दीर्घजिह्वपार्वतीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। १४. ॐ औं शंकुकर्णज्वालिनीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ। १५. ॐ अं वृषभध्वज नन्दाभ्यां नमः शिरसि। १६. ॐ अः गणेशसुरेशीभ्यां नमः मुखे। १७. ॐ कं गजेन्द्रकामरूपिणीभ्यां नमः दक्षिणबाहुमूले। १८. ॐ खं शूर्पकर्णोमाभ्यां नमः दक्षिणकर्पूरे। १९. ॐ गं त्रिलोचनतेजोवतीभ्यां नमः दक्षिणमणिबन्धे। २०. ॐ घं लम्बोदरसत्याभ्यां नमः दक्षांगुलिमूले।

२१. ॐ ङं महानन्दविघ्नेशीभ्यां नमः दक्षांगुल्यग्रे । २२. ॐ चं चतुर्मूर्तिसुरुपिणीभ्यां नमः वामबाहुमूले । २३. ॐ छं सदाशिवकामदाभ्यां नमः वामकर्पूरे । २४. ॐ जं आमोदमदजिह्वाभ्यां नमः वाममणिबन्धे । २५. ॐ झं दुर्मुखभूतिभ्यां नमः वामांगुलिमूले । २६. ॐ ञं सुमुखभौतिकीभ्यां नमः वामांगुलिअग्रे । २७. ॐ टं प्रमोदसिताभ्यां नमः दक्षपादमूले । २८. ॐ ठं एकपादरमाभ्यां नमः दक्षजानुनि । २९. ॐ डं द्विजिह्वमहिषीभ्यां नमः दक्षगुल्फे । ३०. ॐ ढं शूरमंजनीभ्यां नमः दक्ष पादांगुलिमूले । ३१. ॐ णं वीरविकरणाभ्यां नयः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे । ३२. ॐ तं षण्मुखभृकुटीभ्यां नमः वामपादमूले । ३३. ॐ थं वरदलज्जाभ्यां नमः वामजानुनि । ३४. ॐ दं वामदेव दीर्घघोषणाभ्यां नमः वामगुल्फे । ३५. ॐ धं वक्रतुण्डधनुर्धराभ्यां नमः वामाङ्गुलिमूले । ३६. ॐ नं द्विरदयामिनीभ्यां नमः वामाङ्गुल्यग्रे । ३७. ॐ पं सेनानीरात्रिभ्यां नमः दक्षपार्श्वे । ३८. ॐ फं कामान्धग्रामणीभ्यां नमः वामपार्श्वे । ३९. ॐ बं मत्तशशिप्रभाभ्यां नमः पृष्ठे । ४०. ॐ भं विमत्तलोललोचनाभ्यां नमः नाभौ । ४१. ॐ मं मत्तवाहनचञ्चलाभ्यां नमः जठरे । ४२. ॐ यं त्वगात्मभ्यां जटीदीप्तिभ्यां नमः हृदि । ४३. ॐ रं असृगात्मभ्यां मुण्डीसुमगाभ्यां नमः दक्षांसे । ४४. ॐ लं मांसात्मभ्यां खड्गीदुर्भगाभ्यां नमः ककुदि । ४५. ॐ वं मेदात्मभ्यां वरेण्यशिवाभ्यां नमः वामांसे । ४६. ॐ शं अस्थ्यात्मभ्यां वृषकेतनभगाभ्यां नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् । ४७. ॐ षं मज्जात्मभ्यां भक्तिप्रियभगिनीभ्यां नमः हृदयादि वामहस्तान्तम् । ४८. ॐ सं शुक्रात्मभ्यां गणेशभोगिनीभ्यां नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् । ४९. ॐ हं प्राणात्मभ्यां मेघनादसुभगाभ्यां नमः हृदयादिवामपादान्तम् । ५०. ॐ ळं शक्त्यात्मभ्यां व्याप्तिकालरात्रिभ्यां नमः जठरे । ५१. ॐ क्षं परमात्मभ्यां गजेश्वरकालिकाभ्यां नमः मुखे ।

ततो लक्ष्मीविनायकमन्त्रस्य जपसङ्कल्पं न्यायसङ्कल्पञ्च कुर्यात् । तद्यथा—

ॐ अस्य श्री लक्ष्मीविनायकमन्त्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः, गायत्री छन्दः, लक्ष्मीविनायको देवता, श्रीबीजम् स्वाहा शक्तिः, ममाभीष्ट-कार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । एवं विनियोगं कृत्वा न्यासान् कुर्यात् । यथा—ॐ अन्तर्यामिऋषये नमः शिरसि । ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे । ॐ लक्ष्मीबिनायकदेवतायै नमः हृदये । ॐ श्री बीजाय नमः गुह्ये । ॐ स्वाहा शक्तये नमः पादयोः । इति ऋष्यादिन्यासः । अथ षडङ्गन्यासः—ॐ श्रां गाँ हृदयाय नमः । ॐ श्रीं गीँ शिरसे स्वाहा । ॐ श्रूं गूँ शिखायै वषट् । ॐ श्रः गः कवचाय हुम् । ॐ श्रौं गौं नेत्रत्रयायवषट् । ॐ श्रं गँ अस्त्राय फट् । एवं षडङ्गन्यासान् विधाय श्री लक्ष्मीविनायकं ध्यायेत्—

ॐ दन्तामये चक्रवरौ दधानं कराग्रगं स्वर्णघटं त्रिनेत्रम् ।
धृताब्जयालिङ्गितमब्धिपुत्र्या लक्ष्मीगणेशं कनकाभमीडे ॥

स्वदेहे मण्डूकादिपरतत्त्वान्तदेवता विन्यस्य लक्ष्मीविनायकदेवता-पीठे मण्डूकादिपरतत्त्वान्तदेवताः क्रमेण संस्थाप्य पीठपूजां कुर्यात् । ततः पीठशक्तीः प्रतिष्ठाप्य ताः पूजयेत् । यथा—दिक्षुविदिक्षु मध्ये च पूर्वादिक्रमेण—१. ॐ तीव्रायै नमः । २. ॐ चालिन्यै नमः । ३. ॐ नन्दायै नमः । ४. ॐ भोगदायै नमः । ५. ॐ कामरूपिण्यै नमः । ६. ॐ उग्रायै नमः । ७. ॐ तेजोवत्यै नमः । ८. ॐ सत्यायै नमः । ९. ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः । ततः ॐ गं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः, इति नाम मन्त्रेणासनं दत्वा तत्रैव लक्ष्मीगणेशं संस्थाप्य षट्कोण-मण्डलमध्ये हृदयाद्यंगानि पूजयेत् । ततोऽष्टदलेषु—१. ॐ बलायै नमः । २. ॐ विमलायै नमः । ३. ॐ कमलायै नमः । ४. ॐ वन-मालिकायै नमः । ५. ॐ विभीषिकायै नमः । ६. ॐ मालिकायै नमः । ७. ॐ शाङ्कर्यै नमः । ८. ॐ वसुमालिकायै नमः । इत्यष्टौ शक्तीः समभ्यर्च्य तत्रैव दक्षिणपार्श्वे—ॐ शङ्खाय नमः—वामपार्श्वे—ॐपद्मनिभये नमः । इति पूजयेत् । ततो भूपुरे—पूर्वादिक्रमेण—१. ॐ लं इन्द्राय नमः । २. ॐ रं अग्नये नमः । ३. ॐ मं यमाय नमः । ४. ॐ क्षं निर्ऋतये नमः । ५. ॐ वं वरुणाय नमः । ६. ॐ यं वायवे

नमः। ७. ॐ कुं कुबेराय नमः। ८. ॐ हं ईशानाय नमः। ९. ॐ अं ब्रह्मणे नमः। १०. ॐ अं अनन्ताय नमः। ततो भूपुराद्बहिः अस्त्राणि–१. ॐ वं वज्राय नमः। २. ॐ शं शक्त्यै नमः। ३. ॐ दं दण्डाय नमः। ४. ॐ खं खड्गाय नमः। ५. ॐ पां पाशाय नमः। ६. ॐ अं अङ्कुशाय नमः। ७. ॐ गं गदायै नमः। ८. ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। ९. ॐ पं पद्माय नमः। १०. ॐ चं चक्राय नमः।

ततो लक्ष्मीगणेशं षोडशोपचारैः पूम्पूज्य ततश्चतुर्लक्षावृत्या मन्त्रजपः कार्यः। तत्र लक्ष्मीगणेशमन्त्रः [मन्त्रमहोदधौ] "ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा" इति अष्टाविंशतिवर्णो लक्ष्मीविनायकमन्त्रः। जपदशांशेन बिल्ववृक्षसमिद्भिर्होमः कार्यः। तद्दशांशतस्तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं दद्दशांशेनब्राह्मणाँश्च भोजयेत्।

एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति।
ऊरु मात्रे जले स्थित्वा मन्त्री ध्यात्वार्क मण्डले॥
एवं त्रिलक्षं जपतो धनवृद्धिः प्रजापते।
बिल्वमूलं समास्थाय तावज्जप्त्वे फलं हि तत्॥
अशोककाष्ठैर्ज्वलिते बह्नावाज्यक्त तण्डुलैः।
होमतो वशयेद्विश्वं अर्ककाष्ठे शुचावपि॥
खदिराग्नौ नरपतिं लक्ष्मीं पायसहोमतः।

इति मन्त्र महोदध्युक्त लक्ष्मीविनायकपुरश्चरणम्

अथ महामृत्युञ्जयजपविधिः

जपकर्त्ता आचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात् :—विष्णुर्विष्णुर्विष्णुं अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य पूर्वोच्चारित ग्रहगुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम आत्मनः [यजमानस्य वा] श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं ममात्मनः [यजमानस्य वा] शरीरेऽमुकपीडा निरसनपूर्वक सद्यः आरोग्यलाभार्थं श्री महामृत्युन्जयदेवताप्रीत्यर्थं सङ्कल्पितसंख्यापूर्त्तये यथासंख्यं श्री महामृत्युन्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये [करिष्यामि वा] एवं सङ्कल्प्य न्यासान् कुर्यात् । तत्रसङ्कल्पः—ॐ अस्य श्री महामृत्युन्जयमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः श्री महामृत्युन्जयरुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः ह्रौं बीजं, जूं शक्तिः, सः कीलकं श्री महामृत्युन्जयदेवताप्रीत्यर्थं न्यासे जपे च विनियोगः। न्यासाः—ॐ वसिष्ठ ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री महामृत्युन्जयदेवतायै नमः हृदये। ॐ ह्रौं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ जूं शक्तये नमः पादयोः। ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु। ॐ त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं उक्तक्रमेण हृदयादिषडङ्गन्यासान् कुर्यात्।

ध्यानम्

ॐ चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं महत्,
हस्ताब्जेन दधन्सुदिव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वग्निविलोकनं करतलैः पाशाक्षसूत्राङ्कुशां-
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युन्जयं तं स्मरेत्॥

ततो मानसोपचारैः सम्पूजयेत्—ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं सम०। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं सम०। ॐ रं तेजसात्मकं दीपं सम०। ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं

सम० । ॐ सं सर्वात्मकं मन्त्रपुष्पं सम० । अथ जपमन्त्रः—ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ । इति षट् प्रणवोपेतं महामृत्युञ्जयमन्त्रं जपेत् । अर्पणम्—अनेन यथाशक्ति महामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा तेन श्री महामृत्युञ्जयदेवता प्रीयतां तां न मम । ततः प्रार्थयेत्——

ॐ मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ।।

ॐ मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे ।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः ।।

मन्त्रहीनं क्रिया० । ॐ यस्यस्मृत्या च० । ततस्तत्तद्दशांसहोम-तर्पणमार्जनादिकं कुर्यात् ।

इति महामृत्युञ्जयजपविधिः
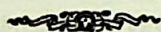
अथ प्रायश्चित्तम्

अथ यागं चिकीर्षुः यागाधिकारसिद्धचर्थं द्वादशाब्दं ३६० षडब्दं १८० सार्द्धाब्दं ९० त्र्यब्दं ४५ अब्दं वा गवां मूल्यं पुरतो निधाय प्रायश्चित्तं कुर्यात् ।

ॐ तत्सदद्येत्यादि स्मृत्वा अमुकगोत्रः शर्माऽहं अमुकयागाधिकारार्थं मत्सकलपातकनिवृत्यर्थं च विष्णुपूजनपूर्वकं देहशुद्धचर्थं अमुकप्रायश्चितमहं करिष्ये। तत्रादौ षाडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा विष्णुं सम्पूज्य ततः क्लिन्नवासः धर्माधिकारिणः सभ्यान् प्रदक्षिणीकृत्य साष्टाङ्गं प्रणमेत् । ततः सभ्याः पृच्छन्ति—

किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज ? ।
तत्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः ॥
अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं बलम् ।
यदि त्वं रक्षसे नित्यंनियतं प्राप्स्यते भवान् ॥
यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्धचसि कर्हिचित् ।

ततोऽञ्जलिं बध्वा ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्—

समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः । समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः ॥
अपारसंसारसमुद्रसेतवः । पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ १ ॥
आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः । समीहितार्थार्पणकामधेनवः ॥
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयः । रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥२॥

विप्रौघदर्शनात् क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः ।
वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम् ॥ ३ ॥

आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्रचनाशनम् ।
श्रीः पुष्टि कीर्तिदं वन्दे विप्राणां पादपङ्कजम् ॥ ४ ॥

ततो गोवृषनिष्क्रयद्रव्यसङ्कल्पः—

ॐ तत्सत् करिष्यमाणामुकप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रयद्रव्यं सभ्येभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये । तेन श्रीपापापहामहाविष्णुः प्रीयताम् । प्रार्थयेत्—

गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

सङ्कल्पितं द्रव्यं सभ्याग्रे निधाय ततः प्रायश्चित्ती ब्रूयात्—अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य यावत् ज्ञाताज्ञात कामाकाम-सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्मपातकसङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकर प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं मामनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः । प्रार्थना—

सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः ।
मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः ॥
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम् ।
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत ॥
पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः ।

ततो मामनुगृह्णन्तु भवन्तः, इति पुनः प्रणमेत् ।

ततः प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन निबन्ध-सभ्यानुवादकानां पूजनं कृत्वा पूजाङ्गत्वेन किञ्चिद्द्रव्यञ्च निधाय ततोऽनुवादकं सम्पूज्य तस्मै पापानुसारेण दक्षिणां दद्यात् । ततः सभ्याः पुस्तकवाचनपूर्वकमनुवादकस्याग्रे कथयेयुः, अनुवादकश्च कर्त्तारं प्रति वदेत् । तद्यथा—सभ्यैरुपदिष्टोऽनुवादकः—अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणस्तव जन्मप्रभृति अद्य-

यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्मपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं अमुकप्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयद्रव्यदान-प्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितं त्वया आचरितव्यं तेन तत्र शुद्धिर्भविष्यति। अतस्त्वं सर्वेभ्यः पातकेभ्यः कृतार्थो भविष्यसि। इति विरुपदिशेत्। कर्त्ता—ॐ भवदनुग्रहः, इत्यङ्गीकृत्य प्रणम्य अनुवादकं विसृजेत्। तदनन्तरं तीर्थे गृहे वा कृताह्निको यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं मम जन्मप्रभृत्यादि। निरासार्थेत्यन्तं अमुकयागाधिकारार्थं सभ्योपदिष्टं अदः प्रायश्चित्तं प्राच्योदीच्याङ्गसहितं अमुकप्रत्याम्नायेन [सुवर्णरजतप्रत्याम्नायेन] अहमाचरिष्ये। तथा—वपनं, दन्तधावनं पञ्चगव्यादिदशविधस्नानानिच करिष्ये। इति सङ्कल्प्य प्रार्थयेत्—

> श्रृणु भो त्वमिदं विप्र ! तुल्यमादिश्यते व्रतम।
> तत्तु यत्नेन कर्त्तव्यं अन्यथा तद्वृथा भवेत्॥

ततः शिरसि हस्तं निधाय—

> आत्मनः शुद्धिकामा वा पितृणां तृप्तिहेतवे।
> वपनं कारयिष्मामि तीरेऽहं तव जाह्नवि !॥
> यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
> केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम्॥
> महापापोपपापाभ्यां केशलोमनखा द्विजाः।
> क्षुरादच्छिन्नसर्वाङ्गास्ते मे दोषाः पतन्त्वधः॥

इति श्लोकान् पठित्वा शिखाकक्षोपस्थ = वर्ज्यं नखलोमकेशादीनां क्रमेणोदक्संस्थं वपनम्। अत्र वपनाङ्गं स्नानम्। क्षौरान्ते द्वादश गण्डूषान् [कुल्ला] कृत्वा दन्तधावनकाष्ठं गृहीत्वा अभिमन्त्रयेत्—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ! ।।

ततो दन्तान् धावयित्वा पठेत्—

ॐ अन्नाद्यायव्यूहध्वᳯ सोमो राजाय मागतम् ।।
स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ।।
मुखदौर्गन्ध्य नाशाय दन्तानां च विशुद्धये ।
ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।

भस्मादिदशविधस्नानद्रव्याणि—

१. भस्मस्नानम्—ॐ प्रसद्यभस्मना०
२. मृत्तिकास्नानम्—ॐ स्योना पृथिवी०
३. गोमयस्नानम्—ॐ मानस्तोके०
४. पञ्चगव्यस्नानम्—ॐ गन्धद्वाशम्, गायत्र्या, पयः पृथिव्याम्०, दधिक्राव्ण:०, तेजोऽसि०, देवस्यत्वा०
५. गोरजस्नानम्—ॐ आयंगौः०
६. धान्यस्नानम्—ॐ धान्यमसि०
७. फलस्नानम्—ॐ याः फलिनीः०
८. सर्वौषधीस्नानम्—ॐ याः ऽओषधीः०
९. हिरण्यस्नानम्—ॐ हिरण्यगर्भः०
१०. गङ्गोदकस्नानम्—ॐ आपो हिष्ठा०

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य० अङ्गीकृतप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विष्णुपूजनपूर्वकं विष्णुश्राद्धं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । शालिग्रामशिलायां श्वेतचन्दनादिभिर्विष्णुं सम्पूज्य । देशादि स्मृत्वा विष्णुप्रीत्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्गं विष्णुश्राद्धसम्पत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाविभागं विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये । तेन पापापहा महाविष्णुः प्रीयताम् । ततः पूर्वोच्चारित० पूर्वाङ्गगोदानमहं करिष्ये । गोनिष्क्रयद्रव्यमादाय । देशकालौ सङ्कीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं

प्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितं गोदानप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतम् अमुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये। प्रार्थना—गावो ममाऽग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। ततो व्याहृतिभिराज्येनाऽष्टोत्तरशतमष्टाविंशति र्वा होमं करिष्ये।

तत्र पञ्चभूसंस्कारपूर्वकबिटनामाग्नेः प्रतिष्ठापनं करिष्ये। तद्यथा। रत्निमात्रस्थण्डिले कुशैः परिसमूह्य। तान् कुशानैशान्यां परित्यजेत्। गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य। स्फ्यमूलेनोल्लिख्य। अनामिकाङ्गुष्ठेन मृदमुद्धृत्य। जलेनाभ्युक्ष्य। ॐ अग्निन्दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे। देवाँ ऽआसादयादिह। इत्यग्निं स्थापयेत्। ब्रह्मवरणम्। अस्मिन्व्याहृत्यादिहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततः कुशकण्डिका। अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ततः परिस्तरणम्। आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। अग्नेरुत्तरतः पात्रासादनम्। पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम् पवित्रार्थं कुशपत्रद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। मन्त्रसाधितपञ्चगव्यम्। ब्रह्मकूर्चम्। पूर्णपात्रम्। पवित्रकरणम्। तत्र क्रमः। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छिन्द्य द्वौ ग्राह्यौ त्रिस्त्याज्यः। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय। त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम्। अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीं निधाय। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। अधिश्रयणम्। ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। स्रुवप्रतपनम्। संमार्गकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः

स्रुवं संमार्ज्य । प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निदध्यात् । आज्यमुद्वास्याग्नेरुत्तरतः प्रणीतापश्चिमतो निधाय । आज्योत्पवनम् । आज्यावेक्षणम् । सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम् । पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । आज्यमग्नेः पश्चिमतो निधाय उपयमनकुशान् वामहस्ते कृत्वा घृताक्ताः समिधस्तिस्रः दक्षिणहस्तेनादायोत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत् । ततः प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रकरेण ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणंजान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये० । इति हुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । एवं सर्वत्र । ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय० । ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय० । अनन्वारब्धः—

इति प्रायश्चित्तम्

अथ व्याहृतिहोमः

अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वा । ॐ भू० स्वाहा । इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । इदं प्रजापतये० । एव सप्तविंशतिवारं कृतेऽष्टोत्तरशतमाहुतयः । सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः । ततो ब्रह्मकूर्चेन पञ्चगव्यहोमः । ॐ इरावती धेनुमती हि भूतꣳ० सूयवसिनो मनवे दशस्या व्व्यस्कभ्ना रोदसी व्विष्णवे ते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा । इदं पृथिव्यै० । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा । इदं विष्णवे० । ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान्न् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे स्वाहा । इदं रुद्राय० । उदकोपस्पर्शः । ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा । इदमद्भ्यो० । (ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः स्वाहा । इदं ब्रह्मणे०) । इति केचित्पठन्ति । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते नमम ।

इति व्याहृतिहोमः

अथ प्रायश्चित्ताहुतयः

ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य

हेडोऽअवयासिसीष्ठाः॑। यजिष्ठो व्वह्नितमः॑ शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाᳬंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम। ॐ स त्वन्नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणᳬं रराणो व्वीहि मृडीकᳬं सुहवो न ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मया ऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳬं स्वाहा। इदमग्नये अयसे०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नो ऽअद्य सवितोतविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्वि मध्यम ᳬश्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। ॐ सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः॑ सन्तु। इति प्रणीतोदकेन मार्जयेत्। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्। अद्य प्रायश्चित्ताङ्गहोमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं अमुकनामगोत्राय ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। अथाग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः। ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च व्वयं द्विष्मः॑। ततः तारकोदये व्रतग्रहणं करिष्ये। हवनशेषं पञ्चगव्यं पिबेत्। तत्र मन्त्रः। यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्। ततः प्रधानगोनिष्क्रयसङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् 'ज्ञाताऽज्ञात-कामाऽकाम-सकृदसकृत्कृतकायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टा-ऽस्पृष्ट-भुक्ताऽभुक्त-पीताऽपीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातसङ्करीकरण-मलिनीकरण-अपात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पानानां निरासार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पर्षदुपदिष्टं गोनिष्क्रयद्रव्यदान-प्रत्याम्नायद्वाराऽङ्गीकृताऽमुकप्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थं यथायथा-

नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये। प्रार्थना। गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च। इति प्रधानसङ्कल्पः। सङ्कल्पितद्रव्यं अर्द्धम् आचार्याय अर्द्धं सभ्येभ्यो दद्यात्। अद्येत्यादि० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं आचीर्णस्याऽमुकप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गानि करिष्ये। ततः पूर्ववत् व्याहृतिहोमं अष्टाविंशतिः कुर्यात्। तद्यथा। देशकालौ सङ्कीर्त्य० अङ्गीकृतप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन व्याहृतिहोमं करिष्ये। ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय०। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये०। एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः। ततः अङ्गीकृतप्रायश्चित्त-स्योत्तराङ्गत्वेन विष्णपूजनं विष्णुश्राद्धं च करिष्ये। यथोपचारैर्विष्णुं सम्पूज्य पूजनान्ते यथाशक्ति द्रव्यमादाय देशादि स्मृत्वा श्रीविष्णु-प्रीत्यर्थं प्रायश्चित्ताङ्गविष्णुश्राद्धसम्पत्तये श्रीविष्णूद्देशेन युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्तमामान्नचतुष्टयनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं चतुर्भ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाविभागं विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये। तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्। ततः उत्तराङ्गगोदानम्। देशादि स्मृत्वा गोत्रः शर्मा प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतया विहितं ,गोदानप्रत्याम्नायद्वारा यथाशक्तिगोनिष्क्रयभूतं द्रव्य रजतं चन्द्रदैवतम् अमुकगोत्राया ऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये। प्रार्थना। गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः। देशकालौ सङ्कीर्त्य कृतस्य सर्वप्राय-श्चित्तकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं द्वादशसङ्ख्या-कान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।

इति प्रायश्चित्ताहुतयः
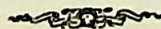
अथ दशदानानि

गो-भू-तिल-हिरण्याज्यं वासो धान्यगुडानि च। रौप्यं लवण-मित्याहुः दश दानानि पण्डिताः। इति प्रथमदिनकृत्यम्।

संक्षेपतो नूतनयज्ञोपवीत धारणक्रमः

तत्रादौ आचम्य प्राणानायम्य मासपक्षतिथिवासरादिकं संस्मृत्य मम श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थं नूतनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये। इत्येवं सङ्कल्पं कृत्वा "इदं विष्णुः" इत्यादिना मन्त्रेण यज्ञोपवीतं त्रिगुणी कृत्वा "आपोहिष्ठा०" इत्यादिभिस्त्रिभिर्मन्त्रैः यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य दशगायत्रीमन्त्रैर्यज्ञोपवीतमभिमन्त्र्य नवतन्तुदेवतानामावाहनं कुर्यात्। तद्यथा—

१. प्रथम तन्तौ ॐकारं आवाहयामि। न्यसामि।
२. द्वितीय " ॐ अग्निदूतम्० " अग्नि आवा०।
३. तृतीय " ॐ नमोऽस्तु० " सर्पान् आवा०।
४. चतुर्थ " ॐ वयᳬसोम० " सोमम् आवा०।
५. पञ्चम " ॐ उदीरतामवर० " पितॄन् आवा०।
६. षष्ठ " ॐ प्रजापतेन० " प्रजापतिम् आवा०।
७. सप्तम " ॐ आनोनियुद्भिः० " अनिलम् आवा०।
८. अष्टम " ॐ सुगावोदेवाः० " यमम् आवा०।
९. नवम " ॐ विश्वेदेवासः० " विश्वान्देवान् आवा०।

ततो ग्रन्थिमध्ये—

१. ॐ ब्रह्मयज्ञानम्० " ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावा०।
२. ॐ इदं बिष्णुर्वि० " विष्णवे० विष्णुमावा०।
३. ॐ त्र्यम्बकंयजामहे० " रुद्राय० रुद्रमावा०।

प्रणवाद्यावाहिततन्तुदेताभ्यो० ग्रन्थिदेवताभ्यो० सर्वोप० गन्धाक्षत० सम० । इत्येवं मानसोपचारैः सम्पूज्य ध्यानं कुर्यात् ।

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पाससूत्रोद्भव ब्रह्मसूत्रम् ।
ब्रह्मत्वसिद्धयै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम् ॥

"ॐ युवासुवासा०" । ततो मध्ये-मध्ये द्विर्द्विराचम्य पृथक्-पृथक् यज्ञोपवीतस्य धारणं कुर्यात् ।

धारणमन्त्रः—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रम्
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्च प्रतिमुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

जीर्णयज्ञोपवीतत्यागमन्त्रः—

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात् त्वत् परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

शिरोमार्गेण तं निःसार्य यथाशक्ति गायत्री मन्त्रजपं कुर्यात् । जपं सवित्रे समर्प्य । यस्य स्मृत्या० ।

॥ इति ॥

अथ मधुपर्कः

देशकालौ सङ्कीर्त्य यजमानः वृतान् ऋत्विजः मधुपर्केणाऽहं अर्चयिष्ये । इति सङ्कल्पं कृत्वा मधुपर्कं कुर्यात् ।

आसनेषु प्राङ्मुखान् अर्च्यानुपवेश्य यजमानः स्वयं उदङ्मुखः कृताञ्जलिः सन् प्रार्थयेत्—ॐ साधु भवान् [भवन्तः] आस्ताम् [आसताम्] अर्चयिष्यामो भवन्तम् [भवतः] ॐ अर्चय [इति ब्राह्मणाः वदेयुः] आचार्यो यथासङ्ख्यं विष्टरान् गृहीत्वा=ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः, इनि ब्रूयात् यजमानः—विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम् । ब्राह्मणाः—विष्टरान् प्रतिगृह्णीमः । ततो यजमानहस्ताद्विष्टरान् गृहीत्वा—ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ।। इमं न्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ।। इति मन्त्रेण ब्राह्मणाः प्रत्येकं विष्टरं स्वस्वासनतले उदगग्रं स्थापयेयुः । ततः पाद्यपात्रमादाय—ॐ पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि—इति आचार्यो ब्रूयात् । यजमानः—पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम् । ब्राह्मणाः—पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः ।

ततो यजमानः पाद्यपात्रमादाय——

ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः । इति मन्त्रेण प्रथमं दक्षिणचरणं ततो वामचरणं च क्रमेण प्रक्षालयेत् यजमानः—विष्टरान् गृहीत्वा, आचार्यः—ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः । यजमानः—विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम् । ब्राह्मणाः—प्रतिगृह्णीमः । ब्राह्मणाः विष्टरानादाय स्वस्वचरणयोरधस्थात् उतराग्रं स्थापयेयुः । आचार्यः—ॐ अर्घाः अर्घाः अर्घाः । यजमानः—अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम् । ब्राह्मणाः—अर्घान् प्रतिगृह्णीमः । ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि । इति मन्त्रेण ब्राह्मणाः अर्घपात्रं शिरसाभिवन्द्य—ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ।

अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेंचिमत्पयः। इति मन्त्रं पठन् ऐशान्यां दिशि क्षिपेत्। आचार्यः-आचमनीयानि आचमनीयानि आचमनीयानि। यजमानः-आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम्। ब्राह्मणाः-आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः। यजमानहस्तात् आचमनीयपात्रमादाय-ॐ आ मा गन्यशसा सꣳ सृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्। इति सकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णीमाचामेयुः। ततो दात्रा मधुपर्कं समादाय-मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्को-इत्यन्येनोदीरिते-यजमानः-मधुपर्काः-प्रतिगृह्यन्ताम्। ब्राह्मणाः-मधुपर्कान् प्रतिगृह्णीमः। दातृहस्तस्थमेव समुद्घाटितं मधुपर्कं-ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे, इति मन्त्रेण वीक्ष्य ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् इति प्रतिगृह्य तत्पात्रं सव्यहस्ते कृत्वा दक्षिणानामिकया-ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्तऽ आविद्धं तत्ते निष्कृन्ताभि-प्रादक्षिण्येन मधुपर्कमालोड्य किञ्चिद्भूमौ क्षिप्त्वा पुनरेवं द्विवारं उक्तमन्त्रेणालोड्य भूमौ निक्षिपेत्। ततः पात्रं भूमौ निधाय अनामिकाङ्गुष्ठेन-ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमोमधव्योऽन्नादोसानि। इति मन्त्रावृत्या त्रिः प्राश्नाति। मधुपर्कशेषं असञ्चरदेशे धारयेत्। शिष्यादिभ्यो दद्यात् जले वा क्षिपेत्। ततः शुद्ध्यर्थमाचम्य स्वाङ्गानि स्पृशेत्-ॐ वाङ्म आस्येऽस्तु, इति कराग्रेण-मुखालम्भनम्। ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु। इति दक्षिणवामनासापुटद्वये युगपत्। ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु, दक्षिणोत्तरौ कर्णौ। ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु, इति उभौ बाहू। ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु, इति युगत् ऊरू। ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु। इति शिरः प्रभृत्यङ्गानि पाणिभ्यामालभेत्। ततो गावो गावो गावः, इति दाता वदेत्। ब्राह्मणा-ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः॥ प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट। मम चामुष्य यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः, उत्सृजत तृणान्यत्त्विति ब्रूयात्।

गोदानसङ्कल्पः—कृतस्य मधुपर्काद्यर्चनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं

इमानि गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये । ततो ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्--

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्त्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥
ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः ।
वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः शुभैः ।
देवानां च पितॄणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम् ।
ते मां रक्षन्तु सततं जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
देवध्यानपरा नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥
माऽश्लीलभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः ।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥

[अतः परं जलयात्रा रुद्रकल्पद्रुमे]

इति मधुपर्कः

-o-

जलयात्रा

सङ्कल्पः—तद्यथा—"देशकालौ सङ्कीर्त्य"—"करिष्यमाणहोमात्मक-अमुकयागाङ्गभूतत्वेन जलयात्रां करिष्ये" तदङ्गत्वेन गणेशवरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्। ततो मण्डलाद्दक्षिणस्यां प्रतीच्यामुदीच्यां च पूर्ववत् काण्डानुसमयेन त्रयाणां कलशानां स्थापनं पूजनम्. एवमीशानादिवायव्यान्तेषु चतुर्षु कोणेषु चतुर्णां कलशानां च तन्मध्ये वरुणं च पूजयेत्।

ततः प्रार्थना—"एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेनपर्जन्यसहाप्सरोभिः।

विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते।

तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।
प्रचण्डपाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः।

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्। प्रतीचीशं जगत्प्राण-सेवितं पाशहस्तकम्"।

इति मन्त्रैः कलशे वरुणं आवाह्य पूजयेत्। ततः नाममन्त्रेण जलमातृः पूजयेत्—

तद्यथा आग्नेयकोणे वस्त्रास्तृते कृतसप्ताक्षतपुञ्जेषु उदक्संस्थेषु ॐ भर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः १ ॐ भू० कूर्म्यै नमः २ ॐ भू० वाराह्यै नमः ३ ॐ भू० दर्दुर्यै नमः ४ ॐ भू० मकर्यै नमः ५ ॐ भू० जलूक्यै नमः ६ ॐ भू० तन्तूक्यै नमः ७ इत्यावाह्य पूजयेत्।

ततः जीवमातृकापूजनम्—तत्रैव तत्पुरतः सप्ताक्षतपुञ्जान् कृत्वा तेषु—ॐ भू० ऊर्म्यै नमः १ ॐ भू० लक्ष्म्यै नमः २ ॐ भू० महामायायै

नमः ३ ॐ भू० पानदेव्यै नमः ४ ॐ भू० वारुण्यै नमः ५ ॐ भू० निर्मलायै नमः ७ ॐ भू० गोदायै नमः ८ इत्यावाह्य पूजयेत् ।

अत्रावसरे केचित् सप्तसागरस्य पूजनमिच्छन्ति–तद्यथा–अक्षत-पुञ्जेषु ।

ॐ "समुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ उदारदुपाᳬंशुना सममृतत्वमानट् । घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभि ÷ ॥ इत्यादिना मन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् । ततः इन्द्रादिदश-दिक्पालान् आवाह्य पूजयेत् । अत्रावसरे केचित् दिक्पालेभ्यो बलि-मिच्छन्ति । ततः जलाशयस्थितवरुणपूजनम् ।

तद्यथा–ॐ उरुᳬहि राजा व्वरुणश्चकार सूर्य्याय पन्था मन्नवेत वाऽउ । अपदेपादा प्प्रति धातवेकरुतापवक्ता हृदया व्विधश्चित् । नमो व्वरुणाया भिष्टिवतो व्वरुणस्य पाश ÷" ।

इति मन्त्रेण वरुणाय नमः इति नाममन्त्रेण वा षोडशोपचारैः पूजनं कृत्वा ततो वैदिकमन्त्रेण नाममन्त्रेण वा स्रुवेण द्वादशाहुतीर्जुहुयात् ।

तद्यथा—ॐ अद्भ्यः स्वाहा व्वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यᳬ स्वाहा स्रवन्तीभ्यᳬ स्वाहा स्यन्दमानाभ्यᳬ स्वाहा कूप्प्याभ्यᳬ स्वाहा सूद्याभ्यᳬ स्वाहा धार्य्याभ्यᳬ स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्द्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥

॥ इति मन्त्रेण ॥

(नाममन्त्रवक्षे तु—ॐ अद्भ्यः स्वाहा १ ॐ वार्भ्यः स्वाहा २ ॐ उदकायस्वाहा ३ ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा ४ ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा५ ॐ स्यन्दमानाय स्वाहा ६ ॐ कूप्याय स्वाहा ७ ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा ८ ॐ धार्य्याभ्यः स्वाहा ९ ॐ अर्णवाय स्वाहा १० ॐ समुद्राय स्वाहा ११ ॐ सरिराय स्वाहा १२ । इति) जुहुयात् ।

ततः–"ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।

सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते” इत्यनेन वरुणं नमस्कृत्य पार्थयेत् ।

ॐ प्रतीचीशनमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन ।
पवित्रं कुरु मां देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः ।
तत्सर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते ।

इति संप्रार्थ्य–ततः–सुवासिनोभ्यो हरिद्रासौभाग्यद्रव्यं ताम्बूलानि चणकांश्च दद्यात् । ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्तिदक्षिणां दद्यात् ।

ततः ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदा न व इन्द्र प्राशूर्भवा सचा” इति पठित्वा कलशान् उत्थाप्य सुवासिनीनां हस्ते दद्युः ।

ततो ब्राह्मणाः ॐ यथेमां वाचं, “अनो भद्रा०” इति सूक्तं पठन् यजमानश्च गीतवाद्यादियुक्तः सुवसिनीपुरः सरो यज्ञमण्डपं प्रत्यागच्छेत् । अर्द्धमार्गे आगते सति तदा किञ्चिद्भूमिमुपलिप्य क्षेत्रपालं पूजनं कृत्वा बलिं सम्पूज्य दद्यात्–

तत्र मन्त्रः–ॐ “नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर २ कपिल पिङ्गल ऊर्ध्वं केश–जिह्वा लालन छिन्दि २ भिन्धि २ कुरु २ चल २ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं बलिं गृहाण स्वाहा” इति पठेत् ।

ततः सपत्नीकेन यजमानेन बन्धुज्ञातिसमन्वितेन देवयजनं प्रतिगमनम्, मण्डपद्वारसमीपे शिष्टाचारात् । पूर्ववत् सर्वदोषप्रशमनार्थं क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । ततः प्रत्यागतं मण्डपस्य पश्चिमद्वारस्थितं यजमानं सुवासिन्यो नीराज्य पश्चिमेनैव द्वारेण मण्डपमध्ये नयेयुः ।

इति जलयात्रा ।

अथ गणपतिपूजनम्

सङ्कल्पः—तत्रादौ दक्षिणहस्ते कुशत्रयपूगगन्धाक्षतपुष्पजलान्यादाय—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सद्ब्रह्म श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्त्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्री श्वेतवाराहकल्पे स्वयंभुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्त्तमाने अष्टाविंशतमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पञ्चाशत्कोटियोजन विस्तीर्ण भूमण्डलान्तर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि नवखण्डानां मध्ये नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखण्डे तदन्तर्गते भारते वर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मवर्त्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे गङ्गायमुनयोर्यथादिग्भागे अमुकप्रदेशे देवब्राह्मणानां सन्निधौ विक्रमशके बौद्धावतारे प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकर्त्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा [वर्मा, गुप्तः] अहं आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे कलत्रादिभिः सह मम जन्मराशेः, सकाशान्नामराशेः सकाशात् च ये केचित् चतुर्थाष्टमद्वादशाद्यनिष्ट स्थानस्थिताः क्रूरग्रहाः, तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादशशुभस्थानस्थितवत् उत्तमफलप्राप्त्यर्थं तथा च दशामहादशान्तर्दशादिजनितपीडाऽल्पायुः आधिदैवाधिभौतिकाध्यात्मिकजनित क्लेशनिवृत्तिपूर्वक शारीरारोग्यार्थं अमुकदेवताप्रीत्यर्थं अमुकाख्यं कर्म अहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवा०……आचार्य–वरणादीनि च अहं करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्न……गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये ।

अथ पञ्चाङ्गपूजनम्

आदौ गणेशाम्बिकापूजनम्

ॐ गणानान्त्वा० गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि	आवाहनम्	
अम्बेऽअम्बिके० अम्बिकायै नमः···	"	"
मनोजूतिः० अस्यै प्राणाः०	प्रतिष्ठापनम्	
पुरुषऽएवेदम्०	आसनम्	समर्पयामि
एतावानस्य०	पाद्यम्	"
त्रिपादूर्ध्वं०	अर्घ्यम्	"
ततो विराडजायत०	आचमनम्	"
तस्माद्यज्ञात्०	स्नानम्	"
पञ्चनद्यः०	पञ्चामृतस्नानम्	"
पयः पृथिव्याम्०	पयस्नानम्	"
दधिक्राव्णः०	दधिस्नानम्	"
घृतं मिमिक्षे०	घृतस्नानम्	"
मधुवाता०	मधुस्नानम्	"
अपाᳬंरसमु०	शर्करास्नानम्	"
शुद्धवालः०	शुद्धोदकस्नानम्	"
युवा सुवासाः०	वस्त्रम्	"
सु जातो ज्योतिषा०	उपवस्त्रम्	"
यज्ञोपवीतं परमम्०	यज्ञोपवीतम्	"
त्वां गन्धर्वा०	गन्धम्	"
अक्षन्नमी०	अक्षतान्	"
ओषधीः प्रतिमोदध्वम्०	पुष्पमालाम्	"
काण्डात्काण्डात्०	दूर्वाङ्कुरान्	"
सिन्धोरिव०	सिन्दूरम्	"

अहिरिव०	नाना परिमल द्रव्याणि	समर्पयामि
धूरसि०	धूपम्	"
अग्निर्ज्योतिः०	दीपम्	"
अन्नपतेन्नस्य०	नैवेद्यम्	"
अठं. शुनाते०	करोद्वर्तनम्	"
यत्पुरुषेण०	ताम्बूलम्	"
याः फलिनीः०	फलम्	"
हिरण्य गर्भः०	दक्षिणाम्	"
इदठं. हविः०	नीराजनम्	"
यज्ञेन यज्ञम्०	पुष्पाञ्जलिम्	"
ये तीर्थानि०	प्रदक्षिणाम्	"
रक्ष रक्ष०	विशेषार्धम्	"
विघ्नेश्वराय०	प्रार्थनाम्	"

इति पञ्चाङ्गपूजनम्

अथ कलशस्थापनम्

महीद्यौः	भूमिस्पर्शः
धान्यमसि	सप्तधान्यविकिरणम्
आजिघ्र०	कलशस्थापनम्
वरुणस्योत्तम्भ०	कलशेजलपूरणम्
त्वां गन्धर्वा०	गन्ध प्रक्षेपः
या ओषधीः०	सर्वौषधि प्र०
काण्डात्काण्डात्०	दूर्वा प्र०
अश्वत्थेवः०	पञ्चपल्लव प्र०
पवित्रे स्थः०	पवित्र प्र०
स्योना पृथिवि०	सप्तमृत्तिका प्र०
याः फलिनीः०	पूगफल प्र०
परिवाजपतिः०	पञ्चरत्न प्र०
हिरण्य गर्भः०	हिरण्य प्र०
सुजातो ज्योतिषा०	वस्त्रवेष्टनम्
पूर्णादर्वि०	पूर्णपात्रन्यासः
याः फलिनीः०	नारिकेल स्थापनम्
तत्वा यामि०	वरुणावाहनम्

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः

इति वरुणपूजनम्

कलाः कला हि––गङ्गाद्यावाहनम्

मनो जूतिः––वरुणाद्यावाहितदेवताप्रतिष्ठापनम्

ततः षोडशोपचारैः सम्पूज्य

देवदानवसं०––प्रार्थयेत्

इति कलशस्थापनम्

अथ पुण्याहवाचनम्

अवनिकृतजानुमण्डलः—आशिषः प्रार्थयेत् । यजमान.—दीर्घा नागा नद्यः—दीर्घमायुरस्तु । विप्राः—अस्तु दीर्घमायुः । ॐ त्रीणि पदा० तेनायुः—पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरास्त्विवति द्विजाः । एवं द्विःशिरसि भूमौ निधाय । यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलं दद्यात् । शिवा आपः सन्त्विवति ब्राह्मणाः——

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु ते ॥

यजमानः—सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम्——

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथाऽस्तु नः ॥

विप्राः अस्तु सौ० ।

यज० अक्षतं चारिष्टं चास्तु, इत्यक्षतान्——

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥

वि० अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च ।

यज० गन्धाः पान्तु, इतिगन्धम्—विप्राः—सौमङ्गल्यञ्चास्तु । यज० अक्षताः पान्तु विप्राः—आयुष्यमस्तु । यज० पुष्पाणि पान्तु, विप्राः सौश्रियमस्तु । यज० सफलताम्बूलानि पान्तु, विप्राः—ऐश्वर्यमस्तु । यज० दक्षिणाः पान्तु, बिप्राः—बहुदेयं चाऽस्तु । यजमानः—पुनरत्रापः पान्तु, विप्राः—स्वर्चितमस्तु । यज० दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु । विप्राः—तथाऽस्तु । यज०—यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं

वाचयिष्ये। विप्राः—वाच्यताम्। करोतु स्वस्ति० इत्यादि श्लोकान् पठेयुः। ॐ द्रविणो दाः०। सविता त्वा० नतद्रक्षाꣳसि०। उच्चा ते०। उपास्मै०। व्रत-जप-नियम-तपः स्वाध्याय क्रतु-शम-दम-दया-दानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्, इति यजमानः। ब्राह्मणाः—समाहित मनसः स्मः। ततो यजमानो ब्रूयात्—शान्तिरस्तु। अस्तु, इति द्विजाः सर्वत्र प्रतिवचनं दद्युः। ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु। ॐ पुत्र-पौत्र समृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदमस्तु। बहिः—ॐ अरिष्ट निरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। अन्तः—ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण मुहूर्त्त नक्षत्र-ग्रह लग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरण मुहूर्त्त नक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। बहिः—हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परि-

पन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः। अन्तः-ॐशुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः०। ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहु-केतुसोमसहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये, इति यजमानः। ॐ वाच्यतामिति ब्राह्मणाः। ॐ **ब्राह्मं पुण्यम्०** भो ब्राह्मणाः इति यजमानः। ॐ पुण्याहमिति ब्रा०। एवं त्रिः पठेत्। ॐ पुनन्तु मा०। ॐ **पृथिव्यामुद्धृतायाम्०**। भो ब्रा०। ॐ कल्या० वि०। ॐ यथे-माम्०। ॐ **सागरस्य तु०**। भो ब्रा० ऋद्धिम्। ॐ कर्म ऋ० ब्रा०। ॐ सत्रस्य ऋद्धिः०। ॐ **स्वस्तिस्तु या०** भो ब्रा० स्व० भ० ब्रु०। ॐ आयु० ब्रा०। ॐ स्वस्ति नः०। ॐ **समुद्रमथनात्०** भो० ब्रा० श्रीर०, यज०। ॐ अस्तुश्रीः, ब्रा०। ॐ श्रीश्च ते०। ॐ **मृकण्ड-सूनोः०** इति यजमानः। शतं जी०, इति ब्रा०। ॐ शतमिन्नु०। ॐ **शिवगौरी०,** इति यजमानः। ॐ अस्तु श्रीरिति ब्रा०। ॐ मनसः कामम्०। ॐ **प्रजापतिर्लोकपालः०**। ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। ॐ प्रजापते न०। ॐ **आयुष्मते०,** इति ब्राह्मणाः। ॐ प्रति पन्थामपद्महि०। ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु। कृतस्य स्वस्ति-वाचनकर्मणः० इति सङ्कल्प्य स्वस्तिवाचकेभ्यो विभज्य दक्षिणां दद्यात्।

इति पुण्याहवाचनम्

अथाभिषेकः

ॐ पयः पृथिव्याम्० । पञ्च नद्यः० । वरुणस्योत्तम्भनम्० । देवस्यत्वा० । देवस्यत्वा । देवस्यत्वा० । विश्वानि देव० । धामच्छदग्निः० । त्वं यविष्ठ० । अन्नपतेन्नस्य० । द्यौः शान्तिः० । यतो यतः० ।

अविघ्नपूजनम्

मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा ।
अविघ्नो विघ्नहर्त्ता च षडेते विघ्ननायकाः ॥

मोदादि षड्विनायकेभ्यो नमः, इति तान् पूजयेत् ।

मण्डपपूजनम्

स्तम्भरोणम्

ॐ देवस्यत्वा०	इत्यभ्रिमादत्ते
इदमहम्०	इत्यवटं परिलिखति
मा वः०	इति खनति
सिञ्चति परिषिञ्चति०	इति तस्मिन्नवटे अप आसिञ्चति
यवोऽसि०	इति यवानावपति
	दर्भसिद्धार्थकांस्तूष्णीमावपति
काण्डात्काण्डात्०	इति दूर्वाङ्कुरान्
दधिक्राव्णः०	इति दधि
याः फलिनीः०	इति फलम्
हिरण्य गर्भः०	इति हिरण्यम्
उच्छ्रयस्व वनस्पते०	इति रक्तसूत्रबद्ध मदनफलसमन्वितस्तम्भोत्थानम् ।
ॐ ऊर्द्ध ऽऊषु०	इत्यवटे रोपणम्
स्थिरो भव०	इति मृत्पूरणेन स्थिरीकरणम् ।

एवं स्तम्भान् स्थिरीकृत्य सर्वेषु स्तम्भेषु रोपणक्रमेण एकैकं देव-मावाहयेत्--

ॐ नलिन्यै नमः नलिनीमा०
ॐ नन्दिन्यै नमः नन्दिनीमा०
ॐ मैत्रायै नमः मैत्रामा०
ॐ उमायै नमः उमामा०
ॐ पशुवर्द्धिन्यै नमः पशुवर्द्धिनीमा० इत्यावाह्य
ॐ मनो जूतिः—प्रतिष्ठापनम्
ॐ मण्डपदेवताभ्यो नमः, इति षोडशोपचारैः पूजयेत् ।

वृषाद्राशित्रये सूर्ये आग्नेय्याम्
सिंहाद्राशित्रये ईशान्याम्
वृश्चिकाद्राशित्रये वायव्याम्
कुम्भाद्राशित्रये नैरृत्याम् ।

इति मण्डपप्रतिष्ठा

अथ मातृकापूजनम्

ॐ गणानान्त्वा०	गणपतये	नमः
आयङ्गौः०	गौर्यै	"
हिरण्यरूपा उषसः०	पद्मायै	"
निवेशन. सङ्गमने०	शच्यै	"
मेधाम्मे०	मेधायै	"
सविता त्वा०	सावित्र्यै	"
विजयन्धनुः०	विजयायै	"
बह्वीनां पिता०	जयायै	"
इन्द्रऽ आसाम्०	देवसेनायै	"
पितृभ्यः स्वधायिभ्यः०	स्वधायै	"
स्वाहा प्राणेभ्यः०	स्वाहायै	"
आपोऽ अस्मान्०	मातृभ्यो	"
रयिश्च मे०	लोकमातृभ्यो	"
यत्प्रज्ञानम्०	धृत्यै	"
त्र्यम्बकं यजामहे०	पुष्टयै	"
अङ्गान्यात्मन्०	तुष्टयै	"
प्राणाय स्वाहा०	आत्मनः कुलदेवतायै नमः	

ॐ गणपत्यादि कुलदवतान्तमातृभ्यो नमः

इति षोडशोपचारैः सम्पूजयेत् ।

मनो जूतिः—प्रतिष्ठापनम्

गौरी पद्मेति प्रार्थयेत्

इति मातृकापूजनम्

—○○✻○○—

अथ वसोर्धारापूजनम्

वसोः पवित्रम्	सप्तधाराकरणम्	ॐ कामधुक्षः	गुडेनैकीकरणम्
मनसः कामम्०	श्रियै नमः	श्रीश्चते०	लक्ष्म्यै नमः
भद्र कर्णेभिः०	धृत्यै नमः	मेधाम्मे०	मेधायै नमः
प्राणाय स्वाहा०	स्वाहायै नमः	आयङ्गौः०	प्रज्ञायै नमः
पावकानः०	सरस्वत्यै नमः	मनोजूतिः०	प्रतिष्ठापनम्

यदङ्गत्वेन भो देव्यः, इति प्रार्थनान्तं ताः पूजयेत् ।

आयुष्यमन्त्रजपः

ॐ आयुष्यं वर्चस्यम् । नतद्रक्षाᳬसि । यदावध्नम्—मन्त्रपाठः । कृतस्यायुष्यमन्त्रजपकर्मणः, सङ्कल्प्य आयुष्यमन्त्रजपकर्त्तृभ्यो यथोत्साहं दक्षिणां दद्यात् ।

अथ साङ्कल्पिकेन विधिना नान्दीश्राद्धप्रयोगः

[सव्येन सर्वं कार्यम् । ऋजव एव कुशाः । तिलस्थाने यवा दातव्याः]

पाद्यम्——सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ।

ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः०···वृद्धिः ।
ॐ पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः " "
ॐ मातामह--प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः
सपत्नीकाः नान्दीमुखाः " "

आसनदानम्

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ···यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः··· ।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ···प्राप्नुवन्तो भवन्तः···प्राप्नुवामः ।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः······प्राप्नुवामः ।

ततोगन्धादिदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भू०······वृद्धिः ।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहा नान्दीमुखाः " "

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नोकाः नान्दीमुखाः " "

भोजननिष्क्रयदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भू०······वृद्धिः ।

ॐ पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः " "

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः " "

सक्षीरयवमुदकदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्

ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः "

ॐ पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः "

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः "

शिवा आपः सन्तु, इति जलम् । सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम् । अक्षतं चारिष्टञ्चाऽस्तु, इत्यक्षतान् । अघोराः पितरः सन्तु इति पूर्वाग्रां जलाधारां दद्यात् । इति समाचारः । केवलं पाठमात्रं वा ।

ततः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्—

गोत्रन्नो वर्द्धताम् । दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् । वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यपगमत् । बहुदेयं च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहु भवेत् । अतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु । मा च याचिष्म कञ्चन । एताः सत्या आशिषः सन्तु । ब्राह्मणाः—सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।

दक्षिणादानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

ॐ मातृपितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भू०……उत्सृजे ।
ॐ पितृपितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः " "
ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः
सपत्नीकाः नान्दीमुखाः " "

मन्त्रपाठः—उपास्मै० । इडामग्ने० । यजमानः०-अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् । ब्रा० सुसम्पन्नम् । वाजे वाजे ऽवत०, इति विसर्जनम् । आमावाजस्य०—अनुव्रज्य ।

विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्, इति विसृज्य । यजमानः—

मयाऽऽचरिते साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः, स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणेशप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु । ब्रा०—अस्तु परिपूर्णः ।

इति नान्दीश्राद्धप्रयोगः

अथ आचार्यादिवर्णम्

यजमानः---अमुकोऽहमिति सङ्कल्प्य एभिर्वरणद्रव्यै आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

यजमानः---आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ! ॥

ब्रह्मवरणम्---यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ! ॥

सदस्यव०---भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् सदस्यो भव सुव्रत ! ॥

गाणपत्यव०---वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितोऽसि सुराऽसुरैः।
निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्धयै त्वामहं गणपं वृणे ॥

उपद्रष्टृव०---भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ! ॥

ऋत्विग्व०---भगवन्... ... ...।
... ... ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥

व्रतेनदीक्षाम्०---रक्षासूत्रं बध्वा यजमानः प्रार्थयेत्---

अस्मिन् कर्मणि ये ये तु वृता गुरुमुखादयः।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम् ॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्त्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥

य०---यथाविहितं कर्म कुरुध्वम्।

ब्रा०---यथाज्ञानं करवाम।

इति वरणम्

मण्डपप्रवेशः

सपत्नीको यजमानो गन्धमाल्यफलादिभिरर्चितकलशहस्त ऋत्विक्समन्वितो मङ्गलवाद्यघोषेण भद्रं कर्णेभिरिति वेदमन्त्र-घोषेण च समन्वितो मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारदेशं समागत्य भूमि प्रार्थयेत्—

चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम् ।
पद्म-शङ्ख-चक्र-शूलधरां भूमिञ्च चिन्तयेत् ॥

एवं भूमिं विचिन्त्य अर्घं दद्यात्—

उधृतासिवराहेण कृष्णेन शतवाहुना ।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि ! विष्णुना शङ्करेण च ॥ १ ॥
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दं वैश्रवणेन च ।
यमेन पूजिते देवि ! धर्मस्य विजिगीषया ॥ २ ॥
सौभाग्यं देहि पुत्राँश्च धनं रूपं च पूजिता ।
गृहाणार्घमिमं देवि ! सौभाग्यं च प्रयच्छमे ॥ ३ ॥

ततः स्योना पृथिवीनो भवेत्यादिना मन्त्रेण भूमिं सम्पूज्य अर्घं च दत्वा, दक्षिणपादेन सऋत्विग्यजमानो मण्डपान्तः प्रविशेत् । दक्षिण द्वारेण पत्नीं वामपादेन प्राविशेत् । पूर्व द्वारेण द्रव्यानयनम् । ततः स्वस्तिन इन्द्रो० ३ बारं पठेत् । देवा आयान्तु, यातु धाना अपयान्तु इत्यनेन वाक्येनात्मनोऽनुलोमविलोमेन व्यापकं कृत्वा, विष्णो ! देवयजनं रक्षस्वेति वाक्येन कुण्डाग्रे भूमौ प्रादेशं कुर्यात् । इयं वेदि-रिति मन्त्रस्य पाठं पठेत् ।

तत आचार्यो वामहस्ते गौरसर्षपानादाय दिग्रक्षणं कुर्यात् ।

१. रक्षोहणं वलगहनम्० ।

२. रक्षोहणो वो वलगहनः० ।

३. रक्षसां भागोऽसि० ।

४. रक्षोहा विश्वचर्षणिः० ।

यदत्र सस्थितं भूतम् । अपसर्पन्तु ते भूताः । भूतानि रक्षसावाऽपि इति श्लोकाँश्च पठन् दिक्षुविदिक्ष् सर्षपान् विकिरेत् ।

पञ्चगव्यकरणम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्०	गोमूत्रम् ।
ॐ गन्धद्वाराम्०	गोमयम् ।
ॐ दधिक्राव्ण:०	दधि ।
ॐ तेजोऽसि०	आज्यम् ।
ॐ देवस्य त्वा०	कुशोदकम् ।

'ॐ' इति प्रणवेन आलोडनम् ।

ॐ आपोहिष्ठेत्यादिभिर्मन्त्रैश्च कर्मभूमिं प्रोक्षेत् ।

इति मण्डप प्रवेशः

अथ मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्

आग्नेयादि चतुर्दिक्षु शङ्कुरोपणम्

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥

दधिमाषभक्तबलिदानम्--

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ १ ॥

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ २ ॥

ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ३ ॥

ॐ रुद्द्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ४ ॥

ततो वेद्युपरि वस्त्रे सुवर्णशलाकया प्रागग्रा उदक्संस्था नव रेखाः कुर्यात्—

१ ॐ लक्ष्म्यै नमः २ ॐ यशोवत्यै नमः ३ ॐ कान्तायै नमः ४ सुप्रियायै नमः ५ ॐ विमलायै नमः ६ ॐ शिवायै नमः ७ ॐ सुभगायै नमः ८ ॐ सुमत्यै नमः ९ ॐ इडायै नमः ।

तत उदगग्राः प्राक्संस्था नव रेखाः कार्याः--

१ ॐ धान्यायै नमः २ ॐ प्राणायै नमः ३ ॐ विशालायै नमः ४ ॐ स्थिरायै नमः ५ ॐ भद्रायै नमः ६ ॐ जयायै नमः ७ ॐ निशायै नमः ८ ॐ विरजायै नमः ९ ॐ विभवायै नमः ।

इति रेखाकरणम्
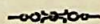
अथ शिख्यादिवास्तुमण्डलस्य देवानामावाहनम्

१. ईशानकोणेऽर्द्धपदे रक्तवर्णे ॐ तमीशानम्–शिखिने नमः।
२. तद्दक्षिणे सार्द्धपदे पीतवर्णे ॐ शन्नो वातः–पर्जन्याय नमः।
३. तद्दक्षिणे द्विपदे पीते ॐ मर्म्माणि ते–जयन्ताय नमः।
४. तद्दक्षिणे द्विपदे पीतवर्णे ॐ आयात्विन्द्रः–कुलिशायुधाय नमः।
५. तद्दक्षिणे द्विपदे रक्तवर्णे ॐ बण्महाँऽअसि–सूर्याय नमः।
६. तद्दक्षिणे द्विपदे शुक्ले ॐ व्रतेन दीक्षाम्–सत्याय नमः।
७. तद्दक्षिणे सार्द्धपदे कृष्णे ॐ आत्वा हार्षम्–भृशाय नमः।
८ तद्दक्षिणे अर्द्धपदे कृष्णे ॐ यावाङ्कशा–आकाशाय नमः।
९ तत्पश्चिमे अर्द्धपदे धूम्रे ॐ वायो ये ते–वायवे नमः।
१०. तत्पश्चिमे सार्द्धपदे रक्ते ॐ पूषन्तव–पूष्णे नमः।
११. तत्पश्चिमे द्विपदे शुक्ले ॐ तत्सूर्यस्य–वितथाय नमः।
१२. तत्पश्चिमे द्विपदे पीते ॐ अक्षन्नमी–गृहक्षताय नमः।
१३. तत्पश्चिमे द्विपदे कृष्णे ॐ यमायत्वा–यमाय नमः।
१४. तत्पश्चिमे द्विपदे रक्ते ॐ गन्धर्वस्त्वा–गन्धर्वाय नमः।
१५. तत्पश्चिमे सार्द्धपदे कृष्णे ॐ सौरीबलाका–भृङ्गराजाय नमः।
१६. तत्पश्चिमे अर्द्धपदे पीते ॐ मृगो न भीमः–मृगाय नमः।
२७. तदुत्तरे अर्द्धपदे रक्ते ॐ उशन्तस्त्वा–पितृभ्यो नमः।
१८. तदुत्तरे सार्द्धपदे रक्ते ॐ द्वे विरूपे–दौवारिकाय नमः।
१९. तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादि–सुग्रीवाय नमः।
२०. तदुत्तरे द्विपदे रक्ते ॐ नमो गणेभ्यः–पुष्पदन्ताय नमः।
२१. तदुत्तरे द्विपदे शुक्ले ॐ इमम्मे–वरुणाय नमः।
२२. तदुत्तरे द्विपदे पीते ॐ यमश्विना-असुराय नमः।
२३. तदुत्तरे सार्द्धपदे कृष्णे ॐ शन्नो देवीः–शेषाय नमः।
२४. तदुत्तरे अर्द्धपदे पीते ॐ एतत्ते–पापाय नमः।
२५. तत्पूर्वे अर्द्धपदे रक्ते ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते–रोगाय नमः।

२६. तत्पूर्वे सार्द्धपदे रक्ते ॐ अहिरिव भोगैः—अहये नमः ।
२७. तत्पूर्वे द्विपदे रक्ते ॐ अवतत्य धनुष्ट्वम्—मुख्याय नमः ।
२८. तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे ॐ इमा रुद्राय—भल्लाटाय नमः ।
२९. तत्पूर्वे द्विपदे शुक्ले ॐ सोमो धेनुम्—सोमाय नमः ।
३०. तत्पूर्वे द्विपदे कृष्णे ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यः—सर्पेभ्यो नमः ।
३१. तत्पूर्वे सार्द्धपदे पीते ॐ अदितिर्द्यौः—अदित्यै नमः ।
३२. तत्पूर्वे अर्द्धपदे पीते ॐ इडऽएह्यदिते—दित्यै नमः ।
३३. ईशानपदोत्तरार्द्धे पदे शुक्ले ॐ अप्स्वग्ने—अद्भ्यो नमः ।
३४. आग्नेयपदोत्तरार्द्धे शुक्ले ॐ हस्तऽआधाय—सावित्राय नमः ।
३५. नैऋत्यपदोत्तरार्द्धे शुक्ले ॐ अषाढं युत्सु—जयाय नमः ।
३६. वायव्यपदोत्तरार्द्धे रक्ते ॐ नमस्ते रुद्र—रुद्राय नमः ।
३७. तृतीयपङ्क्तौ पूर्वपदद्वये कृष्णे ॐ यदद्य सूर—अर्यम्णे नमः ।
३८. आग्नेयपददक्षिणार्द्धे रक्ते ॐ विश्वानि देव—सवित्रे नमः ।
३९. तत्पश्चिमे पदद्वये शुक्ले ॐ विवस्वन्नादित्यैषते—विवस्वते नमः ।
४०. नैऋत्यपद पूर्वार्द्धे रक्ते ॐ सबोधिसूरिः—विबुधाधिपाय नमः ।
४१. उत्तरे पदद्वये शुक्ले ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतः—मित्राय नमः ।
४२. वायव्यपद दक्षिणार्द्धे रक्ते ॐ नाशगित्री बलाशस्या—राजयक्ष्मणे नमः ।
४३. तत्प्राक् पदद्वये रक्ते ॐ स्योना पृथिवी—पृथ्वीधराय नमः ।
४४. ईशानपूर्वार्द्धे श्वेते ॐ आ ते वत्सो मनः—आपवत्साय नमः ।
४५. ततो मध्यपदचतुष्टये पीते—ॐब्रह्मयज्ञानम्—ब्रह्मणे नमः ।

मण्डलाद्‌वहिः

४६. ऐशान्यां कृष्णपरिधौ—ॐ यन्ते देवी—चरक्यै नमः ।
४७. आग्नेय्याम् „ ॐ अक्षराजाय—विदार्यै नमः ।
४८. नैऋत्यां „ ॐ इन्द्रस्य क्रोडः—पूतनायै नमः ।
४९. वायव्याम् „ ॐ यस्यास्ते घोरः—पापराक्षस्यै नमः ।
५०. बहिः पूर्वे ॐ यदक्रन्दः—स्कन्दाय नमः ।
५१. „ दक्षिणे ॐ यदद्यसूरऽउदिते—अर्यम्णे नमः ।

५२. वहिः पश्चिमे ॐ हिङ्काराय स्वाहा—जृम्भकाय नमः ।
५३. " उत्तरे ॐ कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः—पिलिपिच्छाय नमः ।
५४. पूर्वादि दिक्षु—ॐ त्रातारमिन्द्रम्—इन्द्राय नमः ।
५५. आग्नेये—ॐ त्वन्नोऽअग्ने—अग्नये नमः ।
५६. दक्षिणे ॐ यमाय त्वा—यमाय नमः ।
५७. नैऋत्ये ॐ असुन्वन्तमयजमानम्=नैर्ऋतये नमः ।
५८. पश्चिमे ॐ तत्वा यामि—वरुणाय नमः ।
५९. वायव्ये ॐ आनो नियुद्भिः—वायवे नमः ।
६०. उत्तरे—ॐ वयठं॰ सोम—सोमाय नमः ।
६१. ऐशान्ये—ॐ तमीशानम्—ईशानाय नमः ।
६२. ईशानेन्द्रयोर्मध्ये—ॐ अस्मे रुद्राः—ब्रह्मणे नमः ।
६३. निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये—ॐ स्योना पृथिवि—अनन्ताय नमः ।

ततः शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताभ्यः पायसबलिदानम्——ॐ शिखिने नमः एष पायसबलिर्न मम··· । ससुवर्णपायसबलिर्यथाशक्ति ।

ततः त्रिसूत्र्या जलदुग्धधारया च मण्डपवेष्टनम् । तत्र मन्त्राः—— ॐ कृणुष्वपाजः । तव भ्रमासः । प्रति स्पशो विसृज । उदग्ने तिष्ठ । ऊर्ध्वो भव । पुनन्तु मा पितरः । अग्नऽआयूठं॰ षि । पुनन्तु मा देवजनाः । पवित्रेण पुनीहि । यत्ते पवित्रम् । पवमानः सोऽअद्य नः । उभाभ्यां देव । वैश्वदेवी पुनती ।

इति वास्तुपूजनम्

—∞✕∞—
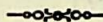
अथ मण्डपपूजनम्

तत्र ईशानकोणादारभ्य मध्ये चतुरः स्तम्भान् पूजयेत्—

(१) ब्रह्म यज्ञानम्— ब्रह्मणे नमः
(सावित्र्यै, वास्तुदेवतायै, ब्राह्मै, गङ्गायै)
ऊर्ध्वऽऊषुण ऊतये—नागमात्रे नमः
आयङ्गौः- शाखावन्धनम्
यतो यतः - स्तम्भाभिमन्त्रणम्
(एवं सर्वत्र)

(२) इदं विष्णुः- विष्णवे नमः
(लक्ष्म्यै, आदित्यै, नन्दायै, वैष्णव्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(३) नमः शम्भवाय च—शम्भवे नमः ।
(गौर्यै, माहेश्वर्यै, शोभनायै, भद्रायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(४) त्रातारमिन्द्रम्- इन्द्राय नमः (इन्द्राण्यै, आनन्दायै, विभूत्यै, अदित्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यत यतः ।

ततो मण्डपाद् बहिः ईशानादारभ्य द्वादशस्तम्भान् पूजयेत्—

(१) आ कृष्णेन, सूर्याय नमः ।
(सौर्यै, भूत्यै, सावित्र्यै, मङ्गलायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(२) गणानां त्वा-गणपतये नमः
(सरस्वत्यै, विघ्रहारिण्यै, जयायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(३) यमायत्वा- यमाय नमः
(पूर्वसंध्यायै, अञ्जन्यै, क्रूरायै, नियंत्र्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(४) नमोऽस्तु सर्पे—नागराजाय नमः ।
(मध्यमसन्ध्यायै, धरायै, पद्मायै, महापद्मायै)

ऊर्ध्वंऽऊषु,आयङ्गौः, यतो यतः ।

(५) यदक्रन्दः– स्कन्दाय नमः
(पश्चिमसन्ध्यायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(६) वायो येते– वायवे नमः
(वायव्यै, गायत्र्यै, मध्यम सन्ध्यायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु,आयङ्गौः, यतो यतः ।

(७) आप्यायस्व–सोमाय नमः
(सावित्र्यै, अमृतकलायै, विजयायै, पश्चिम-सन्ध्यायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः,यतो यतः ।

(८) इमम्मे– वरुणायनमः
(वारुण्यै, पाशधारिण्यै, वृहत्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु,आयङ्गौः, यतो यतः ।

(९) वसुभ्यस्त्वा– अष्टवसुभ्यो नमः
(विनतायै, अणिमायै, भूत्यै, गरिमायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः , यतो यतः ।

(१०) सोमोधेनुं–धनदाय नमः ।
(आदित्यायै, लघिमायै सिनीवाल्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(११) बृहस्पतेऽअति––बृहस्पतये नमः ।
(पौर्णमास्यै, सावित्र्यै, वास्तुदेवतायै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

(१२) विश्वकर्मन्ह–– विश्वकर्मणे नमः
(सिनीवाल्यै, वास्तुदेव-तायै, सावित्र्यै)
ऊर्ध्वंऽऊषु, आयङ्गौः, यतो यतः ।

अथ पूर्वादिक्रमेण तोरणपूजनम्

ॐ अग्निमीडे-तोरणनिधानम् । 'ॐ सुदृढतोरणाय नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् । दक्षिणे––ॐ राहवे नमः । वामे–ॐ बृहस्पतये नमः । तत्र कलशस्थापनविधिनैकं कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे ॐ ध्रुवाय नमः–इत्यावाह्य पूजयेत् ।

ॐ इषे त्वा-इति तोरणं निधाय ॐ सुभद्र तोरणाय नमः, पूजयेत्। दक्षिणे-ॐ सूर्याय नमः। वामे 'ॐ अङ्गारकायनमः। कलशं संस्थाप्य ॐ धरायै नमः-इत्यावाह्य पूजयेत्।

ॐ अग्न आयाहि-इति तोरणनिधानम्। ॐ सु (भीम) शर्म-तोरणाय नमः। दक्षिणे ॐ शुक्राय नमः। वामे ॐ बुधाय नमः। कलशं संस्थाप्य ॐ वाक्पतये नमः-इत्या०।

ॐ शन्नो देवी० ॐ तोरणाय नमः। ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः। दक्षिणे-ॐ सोमायनमः। वामे--ॐ केतुशनिभ्यां नमः। कलशं संस्थाप्य तत्र ॐ विघ्नेशाय नमः इति पञ्चोपचारैः पूजयेत्।

अथ द्वारपूजा

पूर्वद्वारे—कलशद्वयं संस्थाप्य तत्र ॐ ऐरावताय नमः-इति पूजयेत्। ऊर्ध्वं--द्वारश्रियै नमः। अधः--देहल्यै नमः। वामदक्षिण-स्तम्भयोः--गणेशाय नमः। स्कन्दाय नमः। कलशद्वये--गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः-इत्यावाह्य पूजयेत्। ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ अग्निमीडे--इति गन्धादिना पूजयेत्। द्वारकलशयोः--ॐ त्राता-रमिन्द्रमिति इन्द्रं पूजयेत् 'ॐ आशुः शिशानः' इति पीतां पताकां पीतं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। इन्द्राय बलिदानं च। तत आग्नेयीं गत्वा कलशं संस्थाप्य तत्र अमृताय नमः, पुण्डरीकाय नमः--इत्यावाह्य पूजयेत्। कलशे-अग्नये नमः इत्यग्निमावाह्य पूजयेत्।

'ॐ अग्नि दूतम्' इति रक्तां पताकां रक्तं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। ॐ त्वन्नोऽअग्ने--इत्यग्नि पूजयेत्। बलिदानं च।

दक्षिणद्वारे—कलशद्वयं स्थापयित्वा तत्र वामननामकदिग्गजाय नमः इति पूजयेत्। ऊर्ध्वं--द्वारश्रियै नमः। अधः--देहल्यै नमः। स्तम्भयोः--पुष्पदन्ताय नमः। कपर्दिने नमः। कलशद्वये--गोदायै नमः, कृष्णायै नमः। यजुर्वेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ 'इषे त्वोर्ज्जेत्वा' इति पूजयेत्। पुनः कलशद्वये--यमाय नमः इति यमं सम्पूज्यार्घ्यं दत्त्वा 'आयङ्गौः' इति कृष्णे ध्वजपताके समुच्छ्रयेत्। यमाय बलि-दानं च।

नैर्ऋतिं गत्वा कलशं स्थापयित्वा वरुणं सम्पूज्य कुमुदाय नमः, दुर्जनाय नमः इति पूजयेत्। तत्रैव निर्ऋतये नमः इति निर्ऋतिं सम्पूज्य ॐ 'मोषूणः' इति नीलवर्णे ध्वजापताके समुच्छ्रयेत्। निर्ऋतये सघृतकृष्णव्रीह्यन्नदानं च।

पश्चिमद्वारे—गत्वा कलशद्वयं स्थापयित्वा तत्र 'अञ्जनाख्यदिग्गजाय नमः–इति पूजयेत्। ऊर्ध्वं—द्वारश्रियै नमः। अधः—देहल्यै नमः। स्तम्भयोः नन्दने नम.। चण्डाय नमः। कलशद्वये—रेवायै नमः। तार्क्ष्यै नमः। सामवेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा 'ॐ अग्न आयाहि' इति पूजयेत्। द्वारकलशयोः—वरुणाय नमः–इति वरुणं सम्पूज्यार्घ्यं दत्त्वा 'ॐइमम्मे' इति श्वेतां पताकां श्वेतं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। वरुणाय नवनीतौदनबलिदानं च।

वायुकोणे गत्वा कलशं संस्थाप्य वरुणं पूजयित्वा पुष्पदन्ताय नमः। सिद्धार्थाय नमः इति सम्पूज्य वायवे नमः इति वायुं च सम्पूज्य 'ॐ वायो येते' इति धूम्रां पताकां धूम्रं ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। 'ॐ तववायवृहस्पते' इति वायुं सम्पूज्य यवौदनबलिं दद्यात्।

उत्तरद्वारि गत्वा कलशद्वयं संस्थाप्य वरुणं पूजयित्वा सार्वभौमनामकदिग्गजाय नमः०इति पूजयेत्। ऊर्ध्वं—द्वारश्रियै नमः। अधः–देहल्यै नमः। वामदक्षिणस्तम्भयोः–महाकालाय नमः, भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः—वाण्यै नमः। वेण्यै नमः। अथर्ववेदिनौ द्वारपालौ वृत्वा ॐ शन्नोदेवी०' इति पूजयेत्। पुनः द्वारकलशयोः—सोमाय नमः इनि सोमं सम्पूज्य 'ॐ आप्यायस्व' इत्यर्घं दद्यात्। 'ॐ-वयट० सोम' इति हरितां पताकां हरितं ध्वजं च समुच्छ्रयेत् सोमाय प्रैयङ्गवबलिं च दद्यात्।

ईशानकोणे गत्वा पूर्ववत्कलशं स्थापयित्वा वरुणं सम्पूज्य सुप्रतिकाय नमः। मङ्गलाय नमः–इति सुप्रतीकमङ्गलौ पूजयेत्। कलशे—ईशानाय नमः इति ईशानं सम्पूज्य 'ॐ तमीशानम्' श्वेतां पताकां ध्वजं च समुच्छ्रयेत्।

इशानपूर्वयोर्मध्ये—ब्रह्मणे नम इति ब्रह्माणमावाह्य 'ॐ अस्मे-

रुद्रा' इति रक्तां पताकां ध्वजं च समुच्छ्रयेत्। अनेनैव मन्त्रेण ब्रह्माणं सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात् । **नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये** अनन्ताय नमः इति अनन्तभावाह्य 'ॐ स्योना पृथिवी' इति अनन्तं सम्पूज्य मेघवर्णे ध्वजपताके च सम्पूज्य माषभक्तबलिं दद्यात् । ततो मण्डपमध्ये ईशाने वा--पञ्चवर्णं महाध्वजम् 'ॐ इन्द्रस्य वृष्णो' इति मन्त्रेण रोपयेत्। ॐ ब्रह्मयज्ञानम् इति मन्त्रेण महाध्वजं सम्पूज्य बलिदानं दद्यात् महाध्वजाय नमः इति ।

अथ प्रधानवेद्यां सर्वतोभद्रदेवतानामावाहनंपूजनं च

१. ब्रह्मयज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः	९. आ नो नियुद्भिः	वायवे
२. वयर्ट० सोम	सोमाय	१०. सुगावो देवाः	[1]अष्टवसुभ्यः
३. तमीशानम्	ईशानाय	११. रुद्राः सर्ठ०सृज्य--	[2]एकादश-रुद्रेभ्यः
४. त्रातारमिन्द्रम्	इन्द्राय		
५. त्वन्नोऽअग्ने	अग्नये	१२. यज्ञो देवानाम्	द्वादशादित्येभ्यः
६. यमायत्वाङ्गि	यमाय	१३. यावाङ्कशा	अश्विभ्यां
७. असुन्वन्तमयज	निर्ऋतये	१४. ओमासश्चर्ष--	सपैतृकवि-श्वेभ्यो देवेभ्यः
८. तत्वायामि	वरुणाय		

---

१. अष्टवसवः— १–ध्रुवाय० २–अध्रुवाय० ३–सोमाय० ४–अद्भ्यो० ५—अनिलाय० ६—अनलाय० ७—प्रत्यूषाय० । ८—प्रभासाय० ।

२. एकादश रुद्रा—१–अजैकपदे० । २–अहिर्बुध्न्याय० । ३–विरूपाक्षाय० । ४–पिनाकपाणये० । ५–वृषाय० । ६–कपर्दिने । ७–रैवताय० । ८–हराय । ९–बहुरूपाय० । १०–त्र्यम्बकाय० । ११–रुद्राय० ।

३. द्वादशादित्याः—१–मित्राय० । २–रवये० । ३–सूर्याय० । ४–भानवे० । ५–खगाय० । ६–पूष्णे० । ७–खगाय० । ८–हिरण्यगर्भाय० । ९–मरीचये० । १०–आदित्याय० । ११–सवित्रे० (अर्काय०) १२–भास्कराय० ।

४. सपैतृकविश्वदेवाश्चतुर्दश—

ऋतु दक्षौ सत्यवसुकालकाविति स्मृतौ ।
कुरुकुत्सौ वीतिहोत्रौ तथा च धूरिलोचनौ ॥
पुरुरवार्द्रवौ चैव विश्वदेवाश्चतुर्दश ॥

१५. अभित्यन्देवठं० सप्तयक्षेभ्य:
१६. नमोऽस्तु सर्पे भूतनागेभ्य:
१७. ऋताषाडृत गन्धर्वाप्स-रोभ्य:
१८. यदक्रन्द: स्कन्दाय
१९. आशु: शिशान: नन्दीश्वराय
२०. यत्ते गात्रा शूलाय
२१. अवरुद्र मदीमहि महाकालाय
२२. अदितिर्द्यौ: दक्षादिसप्त-गणेभ्य:
२३. अम्बेऽअम्बिके दुर्गायै
२४. इदं विष्णु: विष्णवे
२५. पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधायै
२६. परं मृत्यो मृत्युरोगेभ्य:
२७. गणानां त्वा गणपतये
२८. शन्नोदेवी: अभ्द्य:
२९. मरुतो यस्य मरुभ्द्य:
३०. स्योना पृथिवि पृथिव्यै
३१. पञ्चनद्य: गङ्गादिनदीभ्य:
३२. इमम्मे [1]सप्तसागरेभ्य:
३३. परित्वा मेरवे

ततो मण्डलाद्बहिरुत्तरा-दिक्रमेण—

३४. गणानान्त्वा गदायै नम:
३५. त्रिठं. शद्धाम त्रिशूलाय नम:
३६. महाँ२॥इन्द्रोवज्र-हस्त: वज्राय नम:
३७. वसुचमे शक्तये नम:
३८. इडऽख्ह्यदित दण्डाय नम:
३९. खड्गो वैश्वदेव: खड्गाय नम:
४०. उदुत्तमं वरुण पाशाय नम:
४१. अठं. शुभ्र अङ्कुशाय नम:

पुनरुत्तरादिक्रमेणैव—

४२. आयं गौ: गौतमाय नम:
४३. अयं दक्षिणा भरद्वाजाय नम:
४४. इदमुत्तरात् विश्वा-मित्राय नम:
४५. त्र्यायुषम् कश्यपाय नम:
४६. अयं पश्चात् जमदग्नये नम:
४७. अयं पुरोभुवस्तस्य वसिष्ठाय नम:
४८. अत्र पितर: अत्रये नम:
४९. तं पत्नीभिरनु अरुन्धत्यै नम:

मण्डलाद्बहि: पूर्वादिक्रमेण—

५०. अदित्यै रास्नासि ऐन्द्रयै नम:
५१. अम्बऽअम्बिके कौमार्यै नम:
५२. इन्द्रायाहि ब्राह्मयै नम:
५३. आयङ्गौ: वाराह्यै नम:
५४. अम्बेऽअम्बिके चामुण्डायै नम:
५५. आप्यायस्व वैष्णव्यै नम:
५६. याते रुद्र माहेश्वर्यै नम:
५७. समख्ये देव्या वैनायक्यै नम:

१. सप्तसागरा:—१–क्षारोदाय० । २–क्षीरोदाय० । ३–इक्षुदाय० । ४–दधिदाय० । ५–गुडोदाय० । ६–घृतोदाय० । ७–स्वादोदाय० ।

एता देवताः संस्थाप्य षोडशोपचारैश्च सम्पूज्य मण्डलमध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य तदुपरि स्थाप्यदेव-प्रतिमां अग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

ततो ब्रह्मादिदेवेभ्यः 'ॐ ब्रह्मणे नमः' पायसबलिं समर्पयामि। एवं भूतैर्नाममन्त्रैः पायसबलिं दद्यात्।

लिंगतोभद्रे विशेषः—

ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः।
ॐ रुरुभैरवाय।
ॐ चण्डभैरवाय।
ॐ क्रोधभैरवाय।
ॐ उन्मत्तभैरवाय।
ॐ कपालभैरवाय।
ॐ भीषणभैरवाय।
ॐ संहारभैरवाय।

एतत् अतिरिक्तानां देवानां रुद्रकल्पद्रुमादिषु निबन्धेषु स्थापनं नास्तीति।

अथाग्निस्थापनम्

तत्रादौ पञ्चभूसंस्कारान् कुर्यात्। तद्यथा त्रिभिः कुशैः प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा भूमिं त्रिः परिसमुह्य गोमयोदकाभ्यां प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा भूमिं त्रिरुपलिप्य, स्रुवेण प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य, अनामिकाङ्गुष्ठेन प्रथमरेखातः पांसूनुद्धृत्य वामहस्ते धृत्वा तथैव द्वितीयरेखातः पांसूनुद्धृत्य तानपि वामहस्ते कृत्वा तथैव तृतीयरेखातः समुद्धृत्य वामहस्ते कृत्वा तत्सर्वं दक्षिणहस्तेन ऐशान्यां प्रक्षिप्य, मोदकन्युब्जचुलुकेनाभ्युक्ष्य तैजसेन पात्रयुग्मेन सम्पुटीकृतं प्रदीप्तं बह्वङ्गारमग्निं स्वाभिमुखं मध्ये 'ॐ अग्निं दूतम्' इति मन्त्रेण स्थापयेत्। तदुपरि तद्रक्षार्थं किञ्चित्काष्ठं निदध्यात्। मेखलासु—

इदं विष्णुः	विष्णवे नमः
ब्रह्म यज्ञानम्	ब्रह्मणे नमः
इमा रुद्राय	रुद्राय नमः
योन्याम्—अम्बेऽअम्बिके	गौर्यै नमः

नाभौ—नाभिर्मे नाभ्यधिष्ठातृदेवतायै नमः
कण्ठे—नीलग्रीवाः शितिकण्ठा शितिकण्ठाय नमः

इत्यावाह्ययथोपचारैः सम्पूजयेत् । 'ॐ चत्वारिश्शृङ्गा' इत्यग्नि पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

प्रार्थयेच्चः—

अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतो मुखम् ॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षि शिरोमुखः ।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वं कर्मसु ॥

अथ ग्रहाणामावाहनं पूजनं च

ऐशान्यां वस्त्राच्छादिते पीठे नवग्रहमण्डलं विलिख्य सूर्यादिनव-ग्रहान् अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्रपाल-दशदिक्पाल-सहितानावाहयेत् । तद्यथा—

१. आ कृष्णेन सूर्याय नमः
२. इमन्देवा चन्द्रमसे नमः
३. अग्निर्मूर्द्धा भौमाय नमः
४. उद्बुध्यस्वाग्ने वुधाय नमः
५. बृहस्पतेऽअति बृहस्पतये नमः
६. अन्नात्परिस्रुतः शुक्राय नमः
७. शन्नोदेवीः शनिश्चराय नमः
८. कयानश्चित्र राहवे नमः
९. केतुं कृण्वन् केतवे नमः

ततोऽधिदेवतास्थापनं
ग्रहदक्षिणपार्श्वे—

१०. त्र्यम्बकं यजमाहे ईश्वराय नमः
११. श्रीश्चते उमायै नमः
१२. यदक्रन्दः स्कन्दाय नमः
१३. विष्णोरराटमसि विष्णवे नम
१४. आ ब्रह्मन् ब्रह्मणे नमः
१५. स योषा इन्द्र इन्द्राय नमः
१६. यमायत्वाङ्गि यमाय नमः
१७. कार्षिरसि कालाय नमः
१८. चित्रावसो चित्रगुप्ताय नमः

प्रत्यधिदेवतास्थापनं
ग्रहवामपार्श्वे—

१९. अग्निन्दूतम् अग्नये नमः
२०. आपो हि अद्भ्यो नमः
२१. स्योना पृथिवि पृथिव्यै नमः
२२. इदं विष्णुः विष्णवे नमः
२३. इन्द्र आसान्ने इन्द्राय नमः
२४. अदित्यै रास्ना इन्द्राण्यै नमः

२५. प्रजापतेनत्व प्रजापतये नमः
२६. नमोऽस्तु सर्पेभ्यो नमः
२७. ब्रह्मयज्ञानम् ब्रह्मणे नमः

लोकपालानां स्थापनं ग्रहणामुत्तरे—

२८. गणानां त्वा गणपतये नमः
२९. अम्बेऽअम्बिके अम्बिकायै नमः
३०. वायोखेते वायवे नमः
३१. घृतं घृतपावा आकाशाय नमः
३२. खावाङ्कशा अश्विभ्यां नमः
३३. वास्तोष्पते वातोष्पतये नमः
३४. नहिस्पशम क्षेत्राधिपतये नमः

मण्डलस्य बाह्ये इन्द्रादिदश-दिक्पालानामावाहनम्—

३५. त्रातारमिन्द्र इन्द्राय नमः
३६. त्वन्नोऽअग्ने अग्नये नमः
३७. यमायत्वाङ्गि यमाय नमः
३८. असुन्वन्तम निर्ऋतये नमः
३९. तत्त्वायामि वरुणाय नमः
४०. आनोनियुद्भिः वायवे नमः
४१. वयर्ठ० सोम सोमाय नमः
४२. तमीशानम् ईशानाय नमः
४३. अस्मे रुद्रा ब्रह्मणे नमः
४४. स्योना पृथिवि अनन्ताय नमः

मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूजयेत्। ततो ग्रहवेदीशाने कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य तत्र 'ॐ असंख्याता' इति मन्त्रेण असंख्यातरुद्रानावाह्य पूजयेत्।

क्वचित् पद्धतौ शेषादीनामप्यावाहनं तच्च सति संभवे एव कार्यं रुद्रकल्पद्रुमे तु नोक्तम्—ॐ शेषाय नमः रवेः पूर्वे १ ॐ वासुकये नमः सोमस्याग्रे २ ॐ कर्कोटकाय नमः बुधोत्तरे ३ ॐ पद्माय नमः बृहस्पत्यग्रे ४ ॐ महापद्माय नमः शुक्रोत्तरे ५ ॐ शङ्खपालाय नमः शनिपश्चिमे ६ ॐ कालाय नमः राहुपुरतः ७ ॐ कुलीशाय नमः केतुपुरतः ८ बहिः पूर्वे ॐ अश्विन्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः ९ तत्रैव ॐ विष्कुम्भादिसप्तयोगेभ्यो नमः १० तत्रैव ॐ ववबालवकरणाभ्यां नमः ११ तत्रैव ॐ सप्तद्वीपेभ्यो नमः १२ तत्रैव ॐ ऋग्वेदाय नमः १३ बहिर्दक्षिणे—ॐ पुष्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः १४ दक्षिणे एव ॐ धृत्यादिसप्तयोगेभ्यो नमः १५ तत्रैव ॐ कौलवतैतिलकरणाभ्यां नमः १६ तत्रैव ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः १७ तत्रैव ॐ यजुर्वेदाय नमः १८ पश्चिमे—ॐ स्वात्यादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः १९ तत्रैव—ॐ वज्रादिसप्तयोगेभ्यो नमः २० तत्रैव—ॐ गरवणिजकरणाभ्यां नमः २१

तत्रैव——ॐ सप्तपातालेभ्यो नमः तत्रैव–ॐ सामवेदाय नमः २३ अथोत्तरे——ॐ अभिजिदादिसप्तनक्षत्रेभ्यो नमः २४ ॐ साध्यादि-षड्योगेभ्यो नमः २५ ॐ विष्टिकरणाय नमः २६ ॐ भूरादिसप्त-लोकेभ्यो नमः २७ ॐ अथर्ववेदाय नमः २८ अथ वायव्याम्——ॐ ध्रुवाय नमः २९ ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः ३० ।

ततो यथावकाशम्–ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः ३१ ॐ सप्तकुला-चलेभ्यो नमः ॐ अष्टवसुभ्यो नमः ३३ ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः ३४ द्वादशादित्येभ्यो नमः ३५ ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः ३६ ॐ षोडशमातृभ्यो नमः ३७ ॐ षड्ऋतुभ्यो नमः ३८ ॐ द्वादशमासेभ्यो नमः ३९ ॐ द्वयनाभ्यां नमः ४० ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः ४१ ॐ षष्टिसंवत्सरेभ्यो नमः ४२ ॐ सुपर्णेभ्यो नमः ४३ ॐ नागेभ्यो नमः ४४ ॐ सर्पेभ्यो नमः ४५ ॐ यक्षेभ्यो नमः ४६ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ४७ ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ४८ ॐ अप्सरोभ्यो नमः ४९ ॐ रक्षोभ्यो नमः ५० ॐ मनुष्येभ्यो नमः ५१ इति संपूज्य प्रार्थयेत्—यत्कृतं पूजनं देव भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् । परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्याग्रहनायकाः १ आदित्यादिग्रहाः सर्वे नानावर्णाः पृथग्विधाः । सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा" इति ।

अथ योगिनीपूजनम्

आग्नेय्यां पीठे रक्तवस्त्राच्छादिते पूर्वभागे त्रीणि त्र्यस्राणि वि-लिख्य तेषु कलशत्रयं विधिना संस्थाप्य तदुपरि सौवर्णीस्तिस्रः प्रतिमाः कृताग्न्युत्तारणाः संस्थाप्य महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीरावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् । तदग्रे कोष्ठेषु वक्ष्यमाणा देवीरावाहयेत्——

१ ॐ अम्बेऽअम्बिके——ॐ महाकाल्यै नमः

२ ॐ श्रीश्चते——महालक्ष्म्यै नमः

३ ॐ पावकानः——महासरस्वत्यै नमः

१ तमीशानम्	गजाननायै नमः	४ सद्यो जातः	काकतुण्डिकायै
२ आ ब्रह्मन्	सिंहमुख्यै	५ आदित्यं गर्भम्	उष्ट्रग्रीवायै
३ महाँ इन्द्रः	गृध्रास्यायै	६ स्वर्णधर्मः	हयग्रीवायै

७ सत्यञ्चमे वाराह्यै
८ भार्यैदार्वा शरभाननायै
९ जिह्वा मे उलूकिकायै
१० हिङ्काराय स्वाहा शिवारावायै
(शिवारावाम्)
११ अग्निश्च मे मयूरायै
१२ पूषन्तव विकटाननायै
१३ वेद्या वेदि: अष्टवक्त्रायै
१४ अयमग्नि: सहस्रिण: कोटराक्ष्यै
१५ इम्ममे कुब्जायै
१६ यमायत्वा विकटलोचनायै
१७ यमेन दत्तं शुष्कोदर्यै
१८ मित्रस्य चर्षं ललज्जिह्वायै
(ललज्जिह्वाम्)
१९ अग्ने ब्रह्म श्वदंष्ट्रायै
२० भग प्रणेत: वानराननायै
२१ सुपर्णोऽसि ऋक्षाक्ष्यै
२२ पितृभ्य: स्वधा केकराक्ष्यै
२३ यातेरुद्र बृहत्तुण्डायै
२४ वरुण: प्राविता सुराप्रियायै
२५ हठंस: शुचि कपालहस्तायै
२६ सुसन्दृशन्त्वा रक्ताक्ष्यै
२७ प्रतिपदसि शुक्यै
२८ देवीरापो श्येन्यै
२९ हविष्मतीरिमा कपोतिकायै
३० श्रीश्चते पाशहस्तायै
३१ भुवोयज्ञस्य दण्डहस्तायै
३२ कदाचनस्त प्रचण्डायै
३३ भद्रं कर्णेभि: चण्डविक्रमायै
३४ इषे त्वोर्जेत्वा शिशुघ्न्यै
३५ देवीद्यावा पापहन्त्र्यै
३६ विश्वानि देव काल्यै
३७ असुन्वन्तमय रुधिरपायिन्यै
३८ अग्निश्चमऽआ वसाधयायै
३९ बह्वीनां पिता गर्भभक्षायै
४० नमस्ते रुद्र शवहस्तायै
४१ ऋतञ्च मे आन्त्रमालिन्यै
४२ तेआचरन्ती स्थूलकेश्यै
४३ वेद्या वेदि: बृहत्कुक्ष्यै
४४ पावकान: सर्पास्यायै
४५ अस्कन्नमद्य प्रेतवाहिन्यै
४६ तीव्रान्घोषान् दन्तशूककरायै
४७ महीद्यौ: क्रौञ्च्यै
४८ उपयामगृहीतोसि मृगशीर्षायै
४९ आप्यायस्व वृषाननायै
५० कार्षिरसि व्यात्तास्यायै
५१ त्र्यम्बकंयजामहे धूमनिश्वासायै
५२ अम्बेऽअम्बिके– व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे
५३ विष्णोरराटमसि तापिन्यै
५४ ब्राह्मणमद्य शोषणोदृष्टच्यै
५५ आ नो भद्रा: कोटर्यै
५६ एका च मे स्थूलनासिकायै
५७ ब्रह्माणि मे विद्युत्प्रभायै
५८ असङ्ख्याता बलाकास्यायै

५९ अहिरिव	मार्जार्यै	६२ इदं विष्णुः	कामाक्ष्यै
६० तिस्रस्त्रेधा	कटपूतनायै	६३ वृष्णऽऊर्मिरसि	मृगाक्ष्यै
६१ सरस्वतो योन्या	अट्टाट्टहासायै	६४ मृगो न भीमः	मृगलोचनायै

इत्यावाह्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ।

अथ क्षेत्रपालपूजनम्

वायव्यां श्वेतवस्त्राच्छादिते पीठे चतुरस्रं विलिख्य तिर्यङ्मान्यां पार्श्वमान्यां च सूत्रद्वन्द्वं समान्तराले दद्यात् । एवं समानि नव कोष्ठानि संपद्यन्ते । मध्ये कोष्ठेऽष्टदलं विलिख्य कलशं संस्थाप्य पूर्णपात्रे कृताग्न्युत्तारणं सौवर्ण क्षेत्रपालं "ॐ नहिस्पशम" इत्यावाह्य स्थापयेत् । पूर्वादिकोष्ठेषु षट्दलानि सम्पाद्य, मध्ये चैकं दलं कुर्यात्––

पूर्वकोष्ठे षट्सु दलेसु—

१. इमौ ते पक्षा अजरायनमः (अजरम्)
२. प्रथमा वाम् व्यापकाय नमः
३. इन्द्रस्य वज्रः इन्द्रचौराय नमः
४. एवेदिन्द्रम् इन्द्रमूर्तये नमः
५, उक्षा समुद्रः उक्षणे (उक्षाणम्)
६. यद्देवा देव कूष्माण्डाय नमः

आग्नेयषट्सु दलेषु—

७. स नऽइन्द्राय वरुणाय नमः
८, बाहू मे वटुकाय नमः
९. मुञ्चन्तु मा विमुक्ताय नमः
१०. कुर्वन्नेवेह लिप्तकाय नमः
११. सन्नः सिन्धुः नीललोकाय नमः
१२. नमो गणेभ्यः एकदंष्ट्राय नमः

दक्षिणषट्के—

१३. अर्मेभ्यो हस्तिपम् ऐरावताय नमः
१४. ओषधीः प्रति ओषधीघ्नाय नमः
१५. त्र्यम्बकं यजामहे बन्धनाय नमः
१६. देवसवितः दिव्यकराय नमः
१७. सीसेन तन्त्रम् कम्बलाय नमः
१८. आशुः शिशानो भीषणाय नमः

नैर्ऋत्यषट्के—

१९. इमठं साहस्रम् गवयाय नमः
२०. कुम्भो वनिष्ठुः घण्टाय नमः
२१. आक्रन्दयबल व्यालाय नमः
२२. इन्द्रायाहि अंशवे नमः

२३. चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा चन्द्रवारणाय नमः
२४. गणानान्त्वा घटाटोपाय नमः

पश्चिमे दलषट्के—

२५. उग्रं लोहितेन जटिलाय नमः
२६. पवित्रेण पुनीहि ऋतवे नमः
२७. आजिघ्र कलशम् घण्टेश्वराय नन
२८. वायो शुक्रः विटङ्काय नमः
२९. दैव्या होतारा मणिमानाय नमः
३०. त्रीणितऽआहुः गणबन्धाय नमः

वायव्यादि कोष्ठे षट्सुदलेषु क्रमेण—

३१. प्रतिश्रुत्कायाऽ मुण्डाय नमः
३२. शुद्धवालः बर्बूकराय नमः
३३. वनस्पते वी सुधापाय नमः
३४. सुपर्णं वस्ते वैनाय नमः
३५. अग्नेऽअच्छा पवनाय नमः
३६. भद्रं कर्णेभिः ढुण्ढिकरणाय मनः

उत्तरादिकोष्ठेषु—

३७. अपां फेनेन स्थविराय नमः
३८. वातं प्राणेन दन्तुराय नमः
३९. इदठं हविः धनदाय नमः
४०. खड्गो वैश्वदेवः नागकर्णाय नमः
४१. मृगो न भीमः महाबलाय नमः
४२. इन्दुर्दक्षः फेत्काराय नमः

ईशानादि दलेषु क्रमेण—

४३. तीव्रान्घोषान् सिंहाय नमः
४४. अग्निन्दूतम् मृगाय नमः
४५. अदित्यास्त्वा यक्षाय नमः
४६. द्यौस्ते पृथिव्य मेघवाहनाय नमः
४७. सर्वहिरङ्क्ताम् तीक्ष्णाय नमः
४८. पवमानः सोऽअद्य अनलाय नमः
४९. अभ्यर्षत सुष्टुतिम् शुक्राय नमः

इत्येवमजरादिक्षेत्रपालानावाह्य मनो जूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः संपूजयेत् ।

—ooःoःoo—

अथ कुशकण्डिका प्रयोगः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्।

ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। 'यावत्कर्म समाप्यते तावत्वं ब्रह्मा भव'। 'भवामि' इति ब्रह्मावदेत्। ब्रह्मणानुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। प्रणीतापात्रं **पुरतः** कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य। प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।

ततः परिस्तरणम्। यथा—आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्नि-पर्यन्तम्। नैऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् इतरथा-वृत्तिः।

अथ पात्रासादनम्। यथा—अग्नेरुत्तरतः पश्चिमतो वा साग्रं कुशपत्रत्रयम्, कुशपत्रद्वयश्च पृथक्-पृथक्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्य-स्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रय दक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

अथ पवित्रकरणम्। यथा—द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ त्रिस्त्याज्यः। सपवित्र-करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय। अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिण-हस्तेन गृहीतपवित्रेण त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्ष-णम्। असञ्चरे [जनसञ्चारवर्जितदेशे] प्रोक्षणीं निधाय। आज्य-

स्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुल-प्रक्षेपः। अग्नौ दक्षिणत आज्याधिश्रयम्। आज्यस्योतरतश्चरोरधिश्रयणम्। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। [प्रणीतोदकस्पर्शः] अर्द्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः सम्मार्जनम्, प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनम्। अग्नेर्दक्षिणतो निधानम्। आज्योद्वासनम्। शृतं चरुं स्रुवेणाभिघार्य चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यं प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। अज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पुवनम्। पवित्रे प्रोक्षण्यां निधाय वामहस्ते उपयमनकुशानादाय, दक्षिणेन पाणिना घृताक्ताः समिधस्तिस्रः, तिष्ठन् तूष्णीं अग्नावभ्याधायोपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशान-पर्यन्तं पर्युक्ष्य, पुनः पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणं जान्वाच्य कुशैर्ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्रुवेण तूष्णीं आज्याहुतिं जुहुयात् [अत्र न स्वाहाकारः] अग्नेरुत्तर-भागे –ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये=न मम–इति प्रोक्षण्यां संस्रवप्रक्षेपः। अग्नेर्दक्षिणप्रदेशे––ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय=न मम। आज्यभागौ––ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये = न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

ततो यजमानः हस्ते जलाक्षतानादाय–अस्मिन् [ग्रहशान्ति] कर्मणि इमानि उपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाण-देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम, यथा दैवतानि सन्तु।

इति कुशकण्डिकाविधिः

अथ व्याहृतिहोमः, उत्तरपूजनश्च

ततो यजमानः—"ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे०" इत्यनेनाग्निं ध्यात्वा ॐ चत्वारि शृङ्गा० इति मन्त्रेणग्निं सम्पूज्य—ॐ गणानान्त्वा० ॐ अम्बेऽअम्बिके० मन्त्राभ्यां पूर्वं वराहुतिं हुत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्। ततः प्रधान होमः। ततः स्थापनक्रमेण वास्तुहोमपूर्वकं चतुःषष्टियोगिनीनां, क्षेत्रपालानां, ब्रह्मादिमण्डलदेवतानां च आज्यादिद्रव्यद्वारा तत्तन्मन्त्रैर्होमं कुर्यात्।

ततः कृतकर्मसु न्यूनातिरिक्तादिप्रायश्चित्तनिवृत्यर्थं प्रायश्चितहोमः—१—ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये नमम। २—ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम। ३—ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। ४—ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारं होमे कृते सति अष्टाविंशत्याहुतयो भवन्ति। सप्तविंशतिवारं होमे कृते अष्टोत्तरशताहुतयो भवन्ति।

हस्ते साक्षतजलमादाय—कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं गणेशादिस्थापितदेवतानां अग्नेश्च उत्तरपूजनमहं करिष्ये। एवं सङ्कल्प्य स्थापितदेवतानां यथोपचारैः पूजनं कृत्वा अग्निपूजनं कुर्यात्—ॐ अग्ने नय०।

ततः स्विष्टकृद्धोमः—सर्वाणि समित्तिलचर्वाज्यद्रव्याणि हुतशेषाण्यादाय—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।

भूरादिनवाहुतयः—१—ॐ भूःस्वाहा, इदं अग्नये न मम। २—ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे नमम। ३—ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय नमम। ४—ॐ त्वन्नोऽअग्ने० इदं अग्नीवरुणाभ्यां न मम। ५—ॐ सत्वन्नोऽअग्ने० इदं अग्नीवरुणाभ्यां नमम। ६—ॐ अयाश्चाग्ने० इदमग्नये अयसे न मम। ७—ॐ येतेशतम्० इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम। ८—ॐ उदुत्तमम्० इदं वरुणायादित्यायादितये न मम। ९—ॐ प्रजापतये स्वाहा; इदं प्रजापतये न मम।

इति नवाहुतयः

अथ दशदिक्पालबलिः

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा० । इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरि०··· इमान् सदीपदधिभाषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

नवग्रहबलिः—ॐ ग्रहाऽऽऊर्ज्जाहुतयः० सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरि०···अधिदेवता – प्रत्यधिदेवता - गणपत्यादिलोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः इमान् सभक्त०···सम० । भो भो सूर्यादिग्रहाः, मम सकुटुम्बस्य सपरि०···आयुः कर्त्तारः क्षेम०···वरदा भवत । अनेन० सूर्यादिग्रहाः० प्रीयन्ताम्, न मम ।

क्षेत्रपालबलिदानम्—वंशपात्रे सदक्षिणं भाष-भक्तदध्योदन-जलपात्रसहितं चतुर्मुखं दीपं प्रज्वलय्य ॐ नहिस्पशम० इनि मन्त्रेण क्षेत्रपालं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप ।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतुसर्वदा ।
आयुरारोग्यं मे = देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ।
मा विघ्नं माऽस्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ।।
ततो हस्ते जलं गृहीत्वा—क्षेत्रपालाय

साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-बेताल-भूत - प्रेत-पिशाच-डाकिनी - शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गणसहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो क्षेत्रपाल, स्वां दिशं रक्ष मम सकु० वरदोभव । अनेन०··· क्षेत्रपालः प्रीयताम् न मम । ततोदुर्ब्राह्मणेन नापितेन वा बलिं हारयेत् । यजमानः पृष्ठतो द्वारपर्यन्तं जलाक्षतं क्षिपेत् ॐ हिङ्काराय स्वाहा० । ततो यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्य पूर्णाहुतिं कुर्यात् ।

इति बलिदानम्

अथ पूर्णाहुतिः

यजमानः कुण्डस्य पश्चिमदिशि उपविश्याचम्यप्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात्–देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकोऽहम् कृतस्य [रुद्र-महारुद्र-अतिरुद्र, विष्णु-महाविष्णु-अतिविष्णु, शतचण्डी-सहस्रचण्डी-यागस्य] कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं, तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये [होष्यामि]। ततः स्रुच्यां स्रुवेण वारचतुष्टयं आज्यमादाय उपरि रक्तवस्त्रवेष्टितं नारिकेलफलं संस्थाप्य—ॐ पूर्णादर्वि० इत्यादिना मन्त्रेण "पूर्णाहुत्यै नमः" इति लब्धोपचारैः पूर्णाहुतिं सम्पूज्योत्थाय वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैः पूर्णाहुतिं कुर्यात्—१–ॐ समुद्राद्वर्मिः। २–व्वयं नाम प्रब०। ३–चत्वारि शृङ्गा०। ४–त्रिधा हितं पणिभिः० ५–एताऽअर्षन्ति०। ६–सम्यक्स्रवन्ति०। ७–सिन्धोः रिव०। ८–अभिप्रवन्त०। ९–कन्याऽइव०। १०–अभ्यर्षतसुष्टु-तिम्०। ११–धामन्ते विश्वम्०। १२–पुनस्त्वाऽऽदित्या०। १३–मूर्द्धानं दिवः०। १४–पूर्णादर्वि०…शतक्रतो स्वाहा, इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते आग्नेऽद्भ्यश्च न मम—प्रोक्षण्यां संस्रवप्रक्षेपः।

इति पूर्णाहुतिः

वसोर्द्धाराहोमः

यजमानो बाहुमात्रप्रमाणां सलक्षणां घृतपूरितां स्रुचं हस्ते धृत्वा वक्ष्यमाणमन्त्रैर्वसोर्द्धारांजुहुयात्। तत्र मन्त्राः–१–ॐ सप्ततेऽअग्ने०। २–शुक्रज्योतिश्च०। ३–ईदृङ्चान्यादृङ्च०। ४–ऋतश्चसत्यश्च०। ५–ऋतजिच्चसत्यजिच्च०। ६–ईदृक्षासऽएता०। ७–स्वतवांश्चप्रघासीच०। इन्द्रन्दैवीर्विशो०। ९ इमर्ठ्ठस्तनमू०। १०–घृतम्मिमिक्षे०।

११—व्वसोः पवित्रमसि० ··· सुव्वाकामधुक्षः-स्वाहा, इदमग्नये न मम ।

ततोऽग्नि प्रदक्षिणीकृत्य अग्नेः पश्चादुपविशेत् । **भस्मधारणम्**—ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः—इति ललाटे । कश्यपस्यत्र्यायुषम्—इति ग्रीवायाम् । यद्देवेषुत्र्यायुषम्—इति हृदि । ततः संस्रवप्राशनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । **ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानम्**ः—सङ्कल्पः—कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं इदं सदक्षिणाकं पूर्णपात्रं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । ब्रह्मा—पूर्णपात्रं प्रतिगृह्णन् ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु—इति पठेत् । अग्नेः पश्चात्प्रणीताविमोकः—ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ताँस्ते कृण्वन्तु भेषजम्—भूमौ पातितेन प्रणीताजलेन यजमानमभिषिञ्चेत् । तत उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ब्रह्मग्रन्थिविमोकः ।

श्रेयोदनम्—आचार्यः—कृतस्य अमुकाख्यस्य कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य यजमानस्य दक्षिणहस्ते—शिवा आपः सन्तु-जलम्, मौमनस्यमस्तु—पुष्पम्, अक्षतञ्चारिष्टं चास्तु—इति अक्षतांश्च दद्यात् । तत आचार्यो हस्ते जलाक्षतपूगफलान्यादाय—"भवन्नियोगेन मया अस्मिन् कर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्रह्म गाणपत्य-सदस्योपद्रष्टृ-जापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जपहोमादिकञ्च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् अमुना साक्षतजलपूगफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव—इति यजमानाय दद्यात् । "भवामि" इति यजमानो ब्रूयात् ।

इति श्रेयोदानम्

दक्षिणादानसङ्कल्पः—ततः सपत्नीको यजमानः हस्ते साक्षतजलमादाय देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्माऽहं [वर्माऽहं वा गुप्तोऽहम्] कृतस्य···कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिवृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

गोदानसङ्कल्पः—कृतस्य··कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं च गोनिष्क्रयभूतमिदं द्रव्यं अमुकगोत्राय = शर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

भूयसीदक्षिणाप्रदानम्—कृतेऽस्मिन्··कर्मणि न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यः शर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः – कृतस्य··कर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्स-म्पूर्णफलावाप्तये च यथाकालं यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नेन [आमान्नेन वा] भोजयिष्ये, तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्ताम्, नमम ।

अभिषेकः—तत आचार्यादयः सर्वे ब्राह्मणाः रुद्रकलशस्य प्रधान-कलशस्य वा जलं पात्रान्तरे उद्धृत्य दूर्वापञ्चपल्लवैः प्राङ्मुखस्थं सपरिवारं यजमानं अभिषिञ्चेयुः——ॐ देवस्यत्त्वा०···सरस्वत्यै० । देवस्यत्त्वा च०·· सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्य०। देवस्यत्त्वा०··अश्विनो-भैंष० । द्यौः शान्तिः० । विश्वानि देव० ।

इत्यभिषेकः

घृतपात्रदानम् – घृतपूरितपात्रे यजमानो मुखावलोकनं कुर्यात्—ॐ रूपेणवो रूप० इदं सदक्षिणाकं [ससुवर्णम्, सरजतम्] घृतपात्रं सपरिवारस्यममसर्वारिष्टनिवृत्तये यथानामगोत्राय [ब्राह्मणाय, दुर्ब्राह्मणाय] तुभ्यमहं सम्प्रददे [दातुमहमुत्सृजे]

क्षमापनं देवविसर्जनञ्च

आवाहनं न जानामि० । मन्त्रहीनम्० । जपश्छिद्रम् । अपराध-सहस्राणि० ज्ञानतोऽज्ञानतोवाऽपि० । कर्मप्रधानदेवतायै कर्मार्पणं कुर्यात् ।

ततो यजमानः हस्तेऽक्षतानादाय——ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० । यज्ञयज्ञं गच्छ० । यान्तुदेवगणाः सर्वे० । गच्छ-गच्छ सुरश्रेष्ठ० ।

अञ्जलिं बध्वा––ॐ प्रमादात् कुर्वताम्० यस्य स्मृत्या च०। चतुर्भिश्च-चतुर्भिश्च०।

यजमानाय तिलकाशीर्वादः––ॐ स्वास्तिनऽइन्द्रो०। ॐ पुनस्त्वा०। रक्षाबन्धनम्––ॐ यदाबध्नन्दाक्षा०। श्रीर्वर्चस्व०। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु०। मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु०।

इति प्रथमः परिच्छेदः

अथ द्वितीयः परिच्छेदः

विष्णोः पूजनविधिः

१—ॐ इदं विष्णुः०	आवाहनम् ।
२—ॐ सहस्रशीर्षा०(१)	आवाहनपूर्वकं ध्यानम् ।
३—ॐ पुरुषऽएव०(२)	आसनम् ।
४—ॐ एतावानस्य०(३)	पाद्यम्
५—ॐ त्रिपादूर्ध्व०(४)	अर्घ्यम् ।
६—ॐ ततोविराड०(५)	आचमनीयम् ।
७—ॐ तस्माद्यज्ञात्०(६)	स्नानम् ।
८—ॐ पञ्चनद्यः०	पञ्चामृतस्नानम् ।
९—ॐ देवस्यत्वा०	शुद्धोदकस्नानम् ।
१०—ॐ गन्धद्वाराम्०	गन्धोदकस्नानम् ।
११—ॐ अंशुनाते०	उद्वर्तनस्नानम् ।

ततः पुरुषसूक्तेन अभिषेकः ।

१२—ॐ तस्माद्यज्ञात्०(७)	वस्त्रम् सम० ।
१३—ॐ तस्मादश्वा०(८)	यज्ञोपवीतम् सम० ।
१४—ॐ तं यज्ञम्०(९)	गन्धम् सम० ।
१५—ॐ ॐ अक्षन्नमी०	अक्षतान् सम० ।
१६—ॐ यत्पुरुषम्०(१०)	पुष्पाणि सम० ।
१७—ॐ काण्डात्का०	दूर्वांकुरान् सम० ।
१८—ॐ विष्णोः कर्माणि०	तुलसीपत्राणि सम० ।
१९—ॐ अहिरिव०	सौभाग्यद्रव्याणि सम० ।
२०—ॐ ब्राह्मणोऽस्य०(११)	धूपं सम० ।
२१—ॐ चन्द्रमा मनसो०(१२)	दीपं सम० । [हस्त प्रक्षा०]
२२—ॐ नाभ्याऽआ०(१३)	नैवेद्यं सम० ।

ॐ प्राणापानव्यानोदानसमानाः स्वाहेति पृथक्-पृथक् ।उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं आचमनीयं सम० ।

२३–ॐ यत्पुरुषेण०(१४) ताम्बूलं सम० । [पूगफलञ्च]
२४–ॐ याः फलिनी० ऋतुफलानि सम० ।
२५–ॐ हिरण्यगर्भः० दक्षिणां सम० ।
२६–ॐ इदछहविः० कर्पूरारार्तिक्यं सम० ।
२७–ॐ सप्तस्यासन्०(१५) प्रदक्षिणां सम० ।
२७–ॐ यज्ञेनयज्ञम्०(१६) मन्त्रपुष्पाञ्जलिं सम० ।

ॐ शान्ताकारम्० इत्यादिश्लोकैः प्रार्थनां कृत्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत् ।

इति विष्णोः पूजनविधिः

—००:००—

अथ विष्णोरङ्गपूजा

वामहस्ते गन्धपात्रं गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनार्चयेत्—१. ॐ सत्यपरब्रह्मणे नमः पादौ पूजयामि। २. ॐ सङ्कर्षणाय० गुल्फौ पूज०। ३. ॐ कालात्मने० जानुनी पूज०। ४. ॐ विश्वरूपाय० जंघे पूज०। ५. ॐ विश्वस्मै० कटिं पूज०। ६. ॐ विष्णुरूपधृषे० मेढ्रं पूज०। ७. पद्मनाभाय० नाभिं पूज०। ८. ॐ परमात्मने० हृदयं पूज०। ९. ॐ वैकुण्ठाय० कण्ठं पूज०। १०. ॐ सर्वास्त्रधारिणे० बाहू पूज०। ११. ॐ वाचस्पतये० मुखं पूज०। १२. ॐ हरये० जिह्वां पूज०। १३. ॐ दामोदराय० दन्तान् पूज०। १४. ॐ सहस्राक्षाय० नेत्रे पूज०। १५. ॐ सर्वात्मने० शिरः पूज०। १६. ॐ श्री लक्ष्मी सहितनारायणाय नमः सर्वाङ्गं पूज०।

विष्णोः पीठपूजनमावरणपूजनञ्च

तत्रादौ सर्वतोभद्रमण्डले देवानावाह्य सम्पूज्य मध्ये सविधि कलशं संस्थाप्य तत्र सुवर्णरजताद्यन्यतमपट्टे विष्णुयन्त्रमालिखेत्। तद्यथा—अष्टगन्धेन चन्दनेन=वा फलकमध्ये बिन्दुं कृत्वा ततस्त्रिकोणं विरच्य ततः षट्कोणं, अष्टारं, दशारं, द्वादशारं, चतुर्दशारं षोडशारं च=क्रमेण विरच्य परितो रेखात्रयं दिक्षु द्वारयुतं च कुर्यात्। एवं यन्त्रं विलिख्य पीठे विष्णुप्रतिमां संस्थाप्य प्रत्यङ्मुखीं गरुडप्रतिमां च संस्थाप्य शंखाद्युपकरणानि च पुरतो निधाय मध्ये नानारत्नखचितं मुक्ताद्यलंकारालंकृतं सिंहासनं ध्यायेत्। ततो यन्त्रस्य पूर्वद्वारे। १—ॐ भद्राय नमः। २—ॐ सुभद्राय नमः। ३—गङ्गायै नमः। ४—ॐ यमुनायै नमः। दक्षिणद्वारे—१ ॐ बलाय०। २—ॐ प्रबलाय०। ३—ॐ चिच्छक्त्यै० ४—ॐ आनन्दायै०। पश्चिमद्वारे—१ ॐ चण्डाय०। २—ॐ प्रचण्डाय०। ३—ॐगौर्यै०। ४—ॐ श्रियै०। उत्तरद्वारे— १—ॐ जयाय०। २—ॐ विजयाय०। ३—ॐ शंखाय०। ४—ॐ पद्मनिधये०। इत्येवं द्वारपालानवाह्य पूजयित्वा स्वशरीरे पुरुषसूक्तेन

न्यासाँश्च कुर्यात् । ततः पूजा कलशार्चनं कुर्यात् । तद्यथा—स्ववामभागे पूजाकलशं संस्थाप्य "इमम्मे०" इत्यादिना मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य गायत्र्या दशवारमभिमन्त्र्य तत्र गंगेच यमुने० इत्येवं तीर्थान्यावाह्य विष्ण्वादिदेवानावाहयेत् । तद्यथा—१—ॐ विष्णवे नमः । २—ॐ रुद्राय० । ३—ॐ ब्रह्मणे० । ४—ॐ मातृगणेभ्यो० । ५—ॐ सागरेभ्यो० । ६—ॐ सप्तद्वीपवसुन्धरायै० । ७—ॐ ऋग्वेदाय० । ८—ॐ यजुर्वेदाय० । ९—ॐ सामवेदाय० । १०—ॐ अथर्ववेदाय० । ११—ॐ वेदाङ्गेभ्यो० । १२—ॐ गायत्र्यै० । १३—ॐ सावित्र्यै० । १४—ॐ शान्त्यै० । १५—ॐ सरस्वत्यै० । इत्येवभावाह्य, पूजयेत् । ततः स्वात्मनि विष्णुं ध्यायेत् । ततो भगवतः श्रीविष्णोः पुरतश्चतुष्पादिकां संस्थाप्य तस्या उपरि पट्टवस्त्रं च प्रसार्य कुंकुमादिना नवकोष्ठां भूमिं संपाद्य पूर्वादितो मध्ये च पंचामृतपदार्थान् दुग्धदध्यादीन् निधाय विदिक्षुसुगन्धिततैलमाम्लकचूर्णसुगन्धिपिष्टोष्णोदकानि विन्यस्य स्थापनक्रमेण नवसु सद्रव्येषु पात्रेषु नवदेवताः समावाह्य पूजयेत् । तद्यथा—

१—ॐ विद्यायै नमः । २—ॐ अविद्यायै० । ३—ॐप्रकृत्यै० । ४—ॐ मायायै० । ५—ॐ तेजस्विन्यै० । ६—ॐ प्रबोधिन्यै० । ७—ॐ सत्याय० । ८—ॐ रजसे० । ९—ॐ तमसे० । इति सम्पूज्य गायत्र्याभिमृशेत् ।

विष्णोः पीठपूजनम्

पीठमध्ये कलशसंस्थापितयन्त्रोपरि गन्धाद्युपचारान् दद्यात्—मध्ये १ ॐ आधारशक्तये नमः । २—ॐ प्रकृत्यै० । ३—ॐकूर्माय० । ४—ॐ अनन्ताय० । ५—ॐ बाराहाय० । ६—ॐ पृथिव्यै० । ७—ॐ क्षीरनिधये० । ८—ॐ श्वेतदीपाय० । ९—ॐ रत्नोज्वलितस्वर्णमण्डपाय० । १०—ॐ कल्पवृक्षाय० । ११—ॐ स्वर्णवेदिकायै० । १२—ॐ सिंहासनाय० । इति सम्पूज्यपीठदक्षिणे—१—ॐ गुरुभ्यो० । वामे—२—ॐ दुर्गायै० । ३—ॐ विघ्नेशाय० । ४—क्षेत्रपालाय० । अग्रे—१—ॐ गरुड़ाय० । ईशान्याम् । २—ॐ विष्वक्सेनाय० । ३—ॐ पंचाशद्व-

र्णाढ्यकर्णिकायै०। ४–ॐ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय०। ५–ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय०। ६–ॐ दशकलात्मने वह्निमण्डलाय०। ७–ॐ शक्तिमण्डलाय०। ८–ॐ ब्रह्मणे०। ९–ॐ विष्णवे०। १०–ॐ ईशानाय०। ११–ॐ कुवेराय०। १२–ॐ ऋग्वेदाय०। १३–ॐ यजुर्वेदाय०। १४–ॐ सामवेदाय०। १५–ॐ अथर्ववेदाय०। १६–ॐ आत्मने०। १७–ॐ अन्तरात्मने०। १८–ॐ पं परमात्मने०। १९–ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने०। २०–ॐ कृताय०। २१–ॐ त्रेताय०। २२–ॐ द्वापराय०। २३–ॐ कलये०। २४–ॐ सं सत्वाय०। २५–ॐ रं रजसे०। २६–ॐ तं तमसे०। २७–ॐ अणिमायै०। २८–ॐ महिमायै०। २९–लघिमायै०। ३०–ॐ गरिमायै०। ३१–प्राप्त्यै०। ३२–ॐ प्राकाम्यै०। ३३–ईशित्वायै०। ३४–ॐ वशित्वायै०। **ततः पूर्वादि पत्रेषु**। ३५–ॐ विमलायै०। ३६–ॐ उत्कर्षिण्यै०। ३७–ॐ ज्ञानायै०। ३८–ॐ क्रियायै०। ३९–ॐ योगायै०। ४०–ॐ प्रह्वत्यै०। ४१–ॐ सत्यायै०। ४२–ॐ ईशानायै०। **पुनर्मध्ये०**। ४३–ॐ अनुग्रहायै०। ततो ॐ मनोजूतिर्जुष० इति मन्त्रेण पीठदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य। आवाहित-पीठदेवताभ्यो नमः, इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय योगपीठात्मने नमः, इति कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। "सच्चिद्ज्ञानानन्दरूपं" परं धामैव सकलं पीठम्, इति संचिन्तयेत्।

इति पीठपूजनम्

—oo:o:oo—

अथ प्रतिमायामग्न्युत्तारणम्

तद्यथा–देवं सुवर्णादिधातुनिर्मितपत्रं संस्थाप्य मधुघृताभ्यामभ्यज्य गोदुग्धमिश्रितजलधारां देवोपरि ददन् अग्न्युत्तारणमन्त्रान् पठेत्। १–ॐ समुद्रस्यत्वा०। २–ॐ हिमस्यत्वा० १–३–ॐ उपज्मन्नुप०। ४–ॐ अपामिदम्०। ५–ॐ अग्नेपावक०। ६–ॐ सनः पावक०। ७–ॐ पावकया०। ८–ॐ नमस्ते०। ९–ॐ नृषदेवेट्०। १०–ॐ ये देवादेवानाम्०। ११–ॐ ये देवादेवेषु०। १२–ॐ प्राणदाऽअपान०। इत्यनुवाकेन अभिषेकं कुर्यात्। ततः स्वदेहे न्यासान् कृत्वा देवस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। ततः पुरुषसूक्तमन्त्रैर्ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैर्देवं साङ्गं सपरिवारं सम्पूज्य आवरणार्चनं कुर्यात्।

अथ विष्णोरावरणार्चनम्

(१) **प्रथमावरणम्**—१–बिन्दौ–ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीं पूजयामि २–ॐधरायै० धरांपूज०। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा––

"ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥"

प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया प्रथमावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

(२) **द्वितीयावरणम्**—त्रिकोणे–१–ॐ बलाय० बलं पूज०। २–ॐ प्रबलाय० प्रबलं पूज०। ३–ॐ महाबलाय० महाबलं पूज०। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥ २॥

द्वितीयाव० नमः पुष्पा० सम०। अनया० न मम।

(३) **तृतीयावरणम्**—षट्कोणेषु ४–ॐ विष्वक्सेनाय विष्वक्सेनं पूज०। ५–ॐ चण्डाय० चण्डं पूज०। ६–ॐ प्रचण्डाय० प्रचण्डं

पूज० । ७—ॐ जयाय० जयं पूज० । ८—ॐ विजयाय० विजयं पूज० । ९—ॐ शुक्राय० शुक्रं पूज० ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा

ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ ३ ॥

तृतीयाव० नमः पुष्पा० सम० । अनया० न मम ।

(४) **चतुर्थावरणम्**—अष्टपत्रेषु—१०—ॐ ध्रुवाय० ध्रुवं पूज० । ११—ॐ अध्वराय० अध्वरं पूज० । १२—ॐ सोमाय० सोमं पूज० । १३—ॐ अद्भ्यो नमः अपः पूज०। १४—ॐ अनिलाय० अनिलं पूज०। १५—ॐ अनलाय० अनलं पूज० । १६—ॐ प्रत्यूषाय० प्रत्यूषं पूज० । १७—ॐ प्रभासाय० प्रभासं पूज० ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

चतुर्थाव० नमः पुष्पा० सम० । अनया० चतु० न मम ।

(५) **पञ्चमावरणम्**—दशपत्रेषु । १७—ॐ मत्स्याय० मत्स्यं पूज० । १८—कूर्माय० कूर्मं पूज० । १९—ॐ वराहाय० वराहं पूज० । २०—ॐ नारसिंहाय० नारसिंह पूज० । २१—ॐ वामनाय० वामनं पूज० । २२—ॐ परशुरामाय० परशुरामं पूज० । २३—ॐ रामाय० रामं पूज० । २४—ॐ कृष्णाय० कृष्णं पूज० । २५—ॐ बुद्धाय० बुद्धं पूज० । २६—ॐ कल्किने० कल्किनं पूज० ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥

पञ्चमाव० नमः पुष्पा० सम० । अनया० पञ्चमाव० न मम ।

(६) **षष्ठावरणम्**—द्वादशपत्रेषु । २७—ॐ नन्दाय० नन्दं पूज० । २८—ॐ सुनन्दाय० सुनन्दं पूज० । २९—ॐ महानन्दाय० महानन्दं

पूज०। ३०–ॐ विमलनन्दाय० विमलनन्दं पूज०। ३१–ॐ अतिनन्दनाय० अतिनन्दं पूज०। ३२–ॐ सुधीवनन्दनाय० सुधीवनन्दनं पूज०। ३३–ॐ शत्रुविमर्दननन्दनाय० शत्रुविमर्दननन्दनं पूज०। ३४–ॐ मित्रविवर्द्धननन्दनाय० मित्रविवर्द्धननन्दनं पूज०। ३५–ॐ घोषनन्दनाय० घोषनन्दनं पूज०। ३६–ॐ शोषनन्दनाय० शोषतन्दनं पूज०। ३७–ॐ जीवनन्दनाय० जीवनन्दनं पूज०। ३८–ॐ परमजीवनन्दनाय० परमजीवनन्दनं पूज०।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सुषष्ठावरणार्चनम् ॥ ६ ॥

सुषष्ठावरण० नमः पुष्पा० सम०। अनया० सुषष्ठा० न मम।

(७) **सप्तमावरणम्**—चतुर्दशपत्रेषु। ३८–ॐ नारदाय० नारदं पूज०। ३९–ॐ पराशराय० पराशरं पूज०। ४०–ॐ व्यासाय० व्यासं पूज०। ४१–ॐ शुकाय० शुकं पूज०। ४२–ॐ वाल्मीकिने० वाल्मीकिनं पूज०। ४३–ॐ वसिष्ठाय० वसिष्ठं पूज०। ४४–ॐ शंवराय० शंवरं पूज०। ४५–ॐ देवलाय० देवलं पूज०। ४६–ॐ पर्वताय० पर्वतं पूज०। ४७–ॐ दुर्वासाय० दुर्वासं पूज०। ४८–ॐ जाबालये० जाबालिं पूज०। ४९–जमदग्नये० जमदग्नि पूज०। ५०–ॐ विश्वामित्राय० विश्वामित्रं पूज०। ५१–ॐ भृगुरये० भागुरिं पूज०।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ ७ ॥

सप्तमाव० नमः पुष्पा० सम०। अनया० सप्तमाव० न मम।

(८) **अष्टमावरणम्**—षोडशपत्रेषु–५१–ॐ कपिलाय० कपिलं पूज०। ५२–ॐ याज्ञवल्क्याय० याज्ञवल्क्यं पूज०। ५३–ॐ दाल्भ्याय० दाल्भ्यं पूज०। ५४–ॐ शौनकाय० शौनकं पूज०। ५५–ॐ मार्कण्डेयाय० मार्कण्डेयं पूज०। ५६–ॐ भृगवे० भृगुं पूज०।

५७–ॐ गौतमाय० गौतमं पूज० । ५८–ॐ गालवाय० गालवं पूज० । ५९–ॐ शाण्डिल्याय० शाण्डिल्यं पूज० । ६०–ॐ भरद्वाजाय० भरद्वाजं पूज० । ६१–ॐ मौद्गल्याय० मौद्गल्यं पूज० । ६२–ॐ वेदवाहनाय० वेदवाहनं पूज० । ६३–ॐ बृहदश्वाय० बृहदश्वं पूज० । ६४–ॐ जैमिनये० जैमिनिं पूज० । ६५–ॐ अगस्त्याय० अगस्त्यं पूज० । ६६–ॐ श्वेतनन्दाय० श्वेतनन्दं पूज० ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा–

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥ ८ ॥

अष्टमाव० नमः पुष्पा० सम० । अनया० अष्टमाव० न मम ।

(९) **नवमावरणम्**—भूगृहे पूर्वादिक्रमेण–६७–ॐ इन्द्राय० इन्द्रं पूज० । ६८–ॐ अग्नये० अग्निं पूज० । ६९–ॐ यमाय० यमं पूज० । ७०–ॐ निर्ऋतये० निर्ऋतिं पूज० । ७१–ॐ वरुणाय० वरुणं पूज० । ७२–ॐ वायवे० । वायुं पूज० । ७३–ॐ सोमाय० सोमं पूज० । ७४–ॐ ईशानाय० ईशानं पूज० । ७५–ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माणं पूज० । ७६–ॐ अनन्ताय० अनन्तं पूज० ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा–

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम् ॥ ९ ॥

समस्ताव० [नवमाव०] नमः पुष्पा० सम० ।

अनया० नवमाव० [समस्ताव०] देवताः प्रीयन्तां न मम । 'आवरदेवताभ्यो' नमः, इति नाममन्त्रेण धूपादि शेषानुपचारान् दद्यात् ।

इत्यावरणपूजनम्

—००✽००—

अथ होमात्मकरुद्रयागः

तत्रादौ आचम्य प्राणानायाम्य पवित्रेस्थो० इति मन्त्रेण पवित्र-धारणम् । सङ्कल्पः-विष्णुर्विष्णुः० ··· शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं सपरिवारस्य मम आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं धर्मादि चतुष्टयपुरुषार्थ संसिद्धिपूर्वकाप्राप्तलक्ष्म्याः प्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकालसंरक्षणार्थं-राजद्वारे समायां च सर्वत्र यशोविजयलाभार्थं, समस्तभयव्याधिजरा-पीडापमृत्युपरिहारद्वारा पुत्रपौत्रादिसन्ततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थं, चतुर्थाष्ट मद्वादशस्थानस्थितैः क्रूरग्रहैः सूचितं सूचयिष्यमाणं यदरिष्टं तन्नि-वृत्ति पूर्वकोत्तरोत्तरं शुभफलप्राप्त्यर्थंच सपरिवारस्य भगवतः साम्ब-शिवस्य प्रीत्यर्थं यथालब्धोपचारैः षडङ्गन्यासपूर्वकं रुद्रसूक्तेन ध्याना-वाहनादिक्रमयुतं पूजनमहं करिष्ये । न्यासान् कृत्वा प्रार्थयेत्--

ॐ आगच्छ देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया ।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नः संमुखो मव ॥

कर्त्ता हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा--

श्रीमद्भगवतः साम्बसदाशिवस्य षोडशोपचार-पूजनक्रमः

१. नमस्ते०	ध्यानम् (अन्यत्र प्रतिमादौ आवाहनं)
२. याते०	आसनम्
३. यामिषुम्०	पाद्यम्
४. शिवेनव्वचसा०	अर्घ्यम्
५. अद्धयवोचत्०	आचमनीयम्
६. असौयस्ताम्म्रो०	स्नानीयम्
पञ्चनद्यः०	(पञ्चामृतम्-शुद्धोदकस्नानाचम-नीये च)
त्र्यम्बकम्०	(गन्धोदकम्-सुगंधिद्रव्यम्)

७. असौयोऽवसर्प्पति०	वस्त्रम्
८. नमोऽस्तुनीलग्रीवाय०	यज्ञोपवीतम्
सुजातोज्योतिषा०	(उपवस्त्रम् च
९. प्रमुञ्च०	चन्दनम् (गन्धम्)
अक्षन्नमी०	(अक्षतान्)
नमोबिल्मिने०	(बिल्वपत्राणि)
१०. व्विज्ज्यन्धनुः०	पुष्पाणि
अहिरिव०	(सौभाग्यद्र० नानापरिमलद्र०च)

(अतः परमावरणपूजनम् , ततोधूपादि)

११. यातेहेतिः०	धूपम्
१२. परिते०	दीपम्
१३. अवतत्त्यधनुः०	नैवेद्यम्
अच्छःशुनाते०	(मध्येपानीयोत्तरापोशने-करोद्वर्तनं च)
या फलिनिः०	(ऋतुफलानि)
१४. नमस्तऽआयुधाय०	पूगीफल-ताम्बूले
हिरण्यगर्भः०	(पूजा साद्गुण्यार्थे दक्षिणा द्रव्यम्)
इदꣳहविः०	(आरातिक्यं च)
१५. मानोमहान्तम्०	प्रदक्षिणा
१६. मानस्तोके०	मंत्रपुष्पाञ्जलिः
नमःसर्वहितार्थाय०	साष्टाङ्गंप्रणमेत्
अन्तेसम्प्रार्थ्य	अनेनेतिपूजानिवेदनम्

अथ रुद्र पीठमध्ये मण्डूकादि परतत्त्वान्तदेवताः पूजयेत्

१–ॐ मं मण्डूकाय नमः। २–ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः। ३–ॐ आं आधारशक्त्यै नमः। ४–ॐ कूं कूर्म्माय नमः। ५–ॐ अं अनन्ताय नमः। ६–ॐ पृं पृथिव्यै नमः। ७–ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः। ८–ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ९–ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः। १०–ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः। ११–ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः।

१२–ॐ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । एवमुपर्युपरि सम्पूज्य, **आग्नेयकोणे**। १३–ॐ धं धर्माय नमः **नैऋत्यकोणे**––१०–ॐ ज्ञं ज्ञानाय नमः । **वायव्यकोणे**––१५–ॐ वैं वैराग्याय नमः । **ईशान-कोणे**––१६–ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः। पूर्वे––१७–ॐ अं अधर्माय नमः । दक्षिणे––१८–ॐ अं अज्ञानाय नमः । पश्चिमे––१९–ॐ अं अवैराग्याय नमः। उत्तरे––२०–ॐ अं अनैश्वार्याय नमः। इति सम्पूज्य, ततः **पीठमध्ये**––२१–ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः। २२–ॐ सं संविन्नालाय नमः। २३–ॐ सं सर्वतत्वकमलसनाय नमः। २४–ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। २५–ॐ विं विकारा-मयकसरेभ्यो नमः । २६–ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकेसराय नमः। २७–ॐ अं अर्कमण्डलायद्वादशकलात्मने नमः। २८–ॐ सों सोम-मण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। २९–ॐ वं नह्निमण्डलाय दश-कलात्मने नमः। ३०–ॐ सं सत्त्वायः नमः। ३१–ॐ रं रजसे नमः। ३२–ॐ तं तमसे नमः। ३३–ॐ आं आत्मने नमः। ३४–ॐ पं परमात्मने नमः। ३५–ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ३६–ॐ मं माया-तत्वाय नमः। ३७–ॐ कं कलातत्वाय नमः। ३८–ॐ विं विद्या-तत्वाय नमः। ३९–ॐ पं परतत्वाय नमः। **एवं पीठदेवताः सम्पूज्या-वरणपूजनं कुर्यात्। तत्रादौ पूर्वादिषु पीठशक्तीः पूजयेत्**––१–ॐ वामायै नमः। २–ज्येष्ठायै नमः। ३–ॐ रौद्रयै नमः। ४–ॐ काल्यै नमः। ५–ॐ कलविकरिण्यैं नमः। ६–ॐ बलविकरिण्यै नमः। ७–ॐ बलप्रमथिन्यै नमः। ८–ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। **पीठ-मध्ये**––९–ॐ मनोन्मनायै नमः। ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा–ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्तायाऽनन्ताय योगपीठात्मने नमः–

इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

––००––

अथावरणपूजनम्

तत्रादौ ॐ महीद्यौरित्यादिभिर्मन्त्रैः कलशं संस्थाप्य तत्र साङ्गं वरुणं सम्पूज्य रुद्रयन्त्रं विलिख्य[1] तन्मध्ये अग्न्युत्तारणपूर्वकं रुद्र-प्रतिमाञ्च संस्थाप्य "ॐ नमो भगवतेरुद्राय" इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य आवरणदेवताः पूजयेत्—

[१] प्रथमावरणम्=पश्चिमादि चतुर्दिक्षु–१–ॐ सद्योजाताय नमः। २–ॐ वामदेवाय नमः। ३–ॐ अघोराय नमः। ४–ॐ तत्पुरुषाय नमः। मध्ये–५–ॐ ईशानाय नमः। तत अष्टारेषु पश्चिमादि प्रदक्षिणक्रमेण––१–ॐ नन्दिने नमः। २–ॐ महाकालाय नमः। ३–ॐ गणेश्वराय नमः। ४–ॐ वृषभाय नमः। ५–ॐ भृङ्गिरिटये नमः ६–ॐ स्कन्दाय नमः। ७–ॐ उमायै नमः। ८–ॐ चण्डीश्व-राय नमः। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा––

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मांशरणगतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥
ॐ सद्योजातादिप्रथमावरणदेवताभ्यो नमः।

पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया सद्योजातादि प्रथमा-वरणदेवताः प्रीयन्तां न = मम।

[२] द्वितीयावरणम्––ततः षोडशदले पश्चिमादि क्रमेण।

---

१. यन्त्रोद्धारः रुद्र कल्पे—मध्ये वृत्तं समालिख्य तन्मध्ये च दशाक्षरम्। वहिरष्टदलंपद्मं ततः षोडशपत्रकम्॥ १॥ चतुर्विंशति पत्राढ्यं द्वाविंश-त्पत्रकम् तथा॥ चत्वारिंशत्पत्रकं तु वृत्तं सूर्यसमप्रभम्॥ २॥ पञ्च-पद्मात्मकं वृत्त चतुरस्रं च भूगृहम्॥ सत्त्वं रजस्तमश्चेति त्रिगुणैः परितो वृतम्॥ ३॥ चतुर्द्वारं द्वारदेशे वहिर्नागसमावृतम्॥ रुद्रपीठमिति ख्यातं देवतास्तत्र विन्यसेत्॥ ४॥ चत्वारिंशच्छतं चैकं देवतानामुदाहृतम्॥ कर्णिका मध्यदेशे तु रुद्रं पञ्चास्यमालिखेत्॥ ५॥

१–ॐ अनन्ताय नमः। २–ॐ सूक्ष्माय नमः। ३=ॐ शिवाय नमः। २–ॐ एकपदे नमः। ५–ॐ एकरुद्राय नमः। ६–ॐ त्रिमूर्त्तये नमः। ७–ॐ श्रीकण्ठाय नम,। ८–ॐ वामदेवाय नमः। ९–ॐ ज्येष्ठाय नमः। १०–ॐ श्रेष्ठाय नमः। ११ ॐ रुद्राय नमः। १२–ॐ कालाय नमः। १४–ॐ कलविकरणाय नमः। १४–ॐ बलाय नमः। १५–ॐ बलविकरणाय नमः। १६–ॐ बलप्रमथनाय नमः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा––

ॐ दयाब्धे त्राहि -संसार-सर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

द्वितीया···नमः पुष्पा··समर्पयामि। अनया···द्वितीयावरण-देवताः प्रीयन्ताम् न = मम।

[३] तृतीयावरणम्—ततश्चतुर्विंशतिदले पश्चिमादिक्रमेण। १=ॐ अणिमायै नमः। २–ॐ महिमायै नमः। ३=ॐ लघिमायै नमः। ४–ॐ गरिमायै नमः। ५–ॐ प्राप्त्यै नमः। ६–ॐ प्राकाम्यायै नमः। ७–ॐ ईशितायै नमः। ८–ॐ वशितायै नमः। ९–ॐ ब्राह्म्यै नमः। १०–माहेश्वर्यै नमः। ११–कौमार्यै नमः। १२–ॐ वैष्णव्यै नमः। १३–ॐ वाराह्यै नमः। १४–ॐ इन्द्राण्यै नमः। १५–ॐ चामुण्डायै नमः। १६–ॐ चण्डिकायै नमः। १७–ॐ असिताङ्ग भैरवाय नगः। १८–रुरुभैरवाय नमः। १९–ॐ चण्डभैरवाय नमः। २०–ॐ क्रोधभैरवाय नमः। २१–ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। २२–ॐ कालभरवाय नमः। २३–ॐ भीषण भैरवाय नमः। २४–ॐ संहार भैरवाय नमः। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा––

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

ॐ अणिमादि तृतीयाव० ···नमः पुष्पाञ्जलिं सम०। अनया० तृतीयाव···न = मम।

[४] चतुर्थावरणम्—ततो द्वात्रिंशत्पत्रके पश्चिमादि क्रमेण।

१–ॐ भवाय नमः। २–ॐ शर्वाय नमः। ३–ॐ ईशानाय नमः। ४–ॐ पशुपतये नमः। ५–ॐ रुद्राय नमः। ६–ॐ उग्राय नमः। ७–ॐ भीमाय नमः। ८–ॐ महादेवाय नमः। ९–अनन्ताय नमः। १०–ॐ वासुकये नमः। ११–ॐ तक्षकाय नमः १२–ॐ कुलीरकाय नमः। १३–ॐ कर्कोटकाय नमः। १४–ॐ शंखपालाय नमः। १५–ॐ कम्बलाय नमः। १६–अश्वतराय नमः[1]। १७–ॐ वैन्याय नमः। १८–ॐ पृथवे नमः। १९–ॐ हैहयाय नमः। २०–ॐ अर्जुनाय नमः। २१–ॐ शाकुन्तलेयाय नमः। २२–ॐ भरताय नमः। २३–ॐ नलाय नमः। २४–ॐ रामाय नमः[2]। २५–हिमवते नमः। २६–ॐ निषधाय नमः। २७–ॐ विन्ध्याय नमः। २८–ॐ माल्यवते नमः। २९–ॐ पारियात्राय नमः। ३०–ॐ मलयाय नमः। ३१–ॐ हेमकूटाय नमः। ३२–ॐ गन्धमादनाय नमः[3]। पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा–

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥ ४॥

[५] पञ्चमावरणम्—ततश्चत्वारिंशद्दले पूर्वादिक्रमेण। १. ॐ इन्द्राय नमः। २. ॐ अग्नये नमः। ३. ॐ यमाय नमः। ४. ॐ निर्ऋतये नमः। ५. ॐ वरुणाय नमः। ६. ॐ वायवे नमः। ७. ॐ कुबेराय नमः। ८. ॐ ईशानाय नमः। ९. ॐ शच्यै नमः। १०. ॐ स्वाहायै नमः। ११. ॐ वाराह्यै नमः। १२. ॐ खड्गिण्यै नमः। १३. ॐ वारुण्यै नमः। १४. ॐ वायव्यै नमः। १५. ॐ कौबेर्यै नमः। १६. ॐ ईशान्यै नमः। १७. ॐ वज्राय नमः। १८. ॐ शक्तये नमः। १९. ॐ दण्डाय नमः। २० ॐ खड्गाय नमः। २१. ॐ पाशाय नमः। २२. ॐ अंकुशाय नमः। २३. ॐ गदायै नमः। २४. ॐ त्रिशूलाय नमः। २५. ॐ ऐरावताय नमः। २६. ॐ मेषाय नमः। २७. ॐ महिषाय नमः। २८. ॐ प्रेताय नमः। २९. मकराय नमः। ३०. ॐ हरिणाय नमः। ३१. ॐ नराय नमः। ३३. ॐ ऐरावताय नमः। ३४. ॐ पुण्डरीकाय नमः। ३५. ॐ वामनाय नमः। ३६. ॐ

---

१. अष्टौ नागाः। २. नृपाष्टकम्। ३. इति गिर्यष्टकम्।

कुमुदाय नमः । ३७. ॐ अञ्जनाय नमः । ३८, ॐ पुष्पदन्ताय नमः । ३९. ॐ सार्वभौमाय नमः । ४०. ॐ सुप्रतीकाय नमः ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥ ॐ इन्द्रादि-पञ्चभाव०···न०: पुष्पा०···समर्पयामि । अनया०···पञ्चमाव०··· प्रीयन्तां न = मम ।

[६] षष्ठावरणम्—ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण पुनः । १. ॐ इन्द्राय नमः । २. ॐ अग्नये नमः । ३. ॐ यमाय नमः । ४. ॐ निर्ऋतये नमः । ५. ॐ वरुणाय नमः । ६. ॐ वायवे नमः । ७. ॐ कुबेराय नमः । ८. ॐ ईशानाय नमः । ९. ॐ ब्रह्मणे नमः । १०. ॐ अनन्ताय नमः ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सुषष्ठावरणार्चनम् ॥ ७ ॥

षष्ठाव० नमः पुष्पा० सम० । अन० षष्ठाव० पीयन्तां न मम ।

[७] सप्तमावरणम्—ततो भूपरस्य बाह्ये—"आग्नेय्याम–" १. ॐ विरूपाक्षाय नमः । "नैर्ऋत्याम्" २. ॐ विरूपाय नमः । "वायव्याम्–" ३. ॐ पशुपतये नमः । "ईशान्याम्–" ४. ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः । पुनः भूपुराद्बहिः पूर्वादिदिक्षु क्रमेण । पूर्वे—१. ॐ विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्रफणमण्डिताय शेषाय नमः । आग्नेय्याम्–२. ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चाशत्फणाय उत्तुङ्गकायाय तक्षकाय नमः । दक्षिणस्याम्—३. ॐ विप्रवर्णाय कुंकुमरूपाय सहस्रफणमण्डिताय अनन्ताय नमः । नैर्ऋत्याम् –४. ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणमण्डिताय उत्तुङ्गकायाय वासुकये नमः । पश्चिमायाम् ५. ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणाय शंखपालाय नमः । वायव्याम् —६. ॐ वैश्यवर्णाय कृष्णरूपाय पञ्चशतफणाय उत्तुङ्गाय महापद्माय नमः । उत्तरस्याम्—७. ॐ शूद्रवर्णाय कृष्ण-

रूपाय त्रिशत्फणमण्डिताय कम्बलाय नमः। ईशान्याम् —८. ॐ शूद्र-वर्णाय श्वेतरूपाय त्रिशत्फणयुक्ताय कर्कोटकाय ममः।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा—

ॐ दयाब्धे त्राहि संसार-सर्पान्मांशरणागतम्।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम् ॥ ७ ॥

एवं आवरणपूजां कृत्वा ॐ नमो भगवतेरुद्राय, इति क्रमप्राप्त-धूपाद्युपचारैः श्रीरुद्रदेवं साङ्गं सम्पूजयेत्।

इति आवरणपूजनम्

अथ रुद्रप्रकारोभेदश्च

जपहोमाभिषेकैश्च ख्यातोरुद्रस्त्रिधैव तु ।
शृणुष्व भो महाप्राज्ञ रुद्रभेदान्वदामि ते ॥
रुद्राः पञ्चविधाः प्रोक्ता देशिकैरुत्तरोत्तरम् ॥ १ ॥
साङ्गस्त्वाद्योरूपकाख्यः सशीर्षो रुद्र उच्यते ॥ १ ॥
एकादशगुणैस्तद्वद्रुद्रिसंज्ञो द्वितीयकः ॥ २ ॥
एकादशभिरेताभिस्तृतीयोलघुरुद्रकः ॥ ३ ॥
लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थकः ॥ ४ ॥
पञ्चमस्यान्महारुद्र एकादशमिरंतिमः ।
अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः ॥ ५ ॥

(हेमाद्रौ, कालिकापुराणे)

अथ हवनात्मकमहारुद्रन्यासप्रयोगः

ऊर्ध्वकेशि० । पृथ्वीति मन्त्रस्य० । सद्योजातमित्यस्य सद्योजात-ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्म देवता, वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः जगतीछन्दः विष्णुर्देवता, अघोरेभ्य इत्यस्याघोरऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता, तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिर्गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता, ईशान इत्यस्य ईशानऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता सर्वेषां भस्मपरिग्रहणे वि०। ॐसद्योजातं० । ॐवामदेवाय० । ॐ अघोरेभ्यो० । ॐ तत्पुरुषाय० । ॐ ईशानःसर्वं० । सव्यहस्ते परिग्रहणम् । दक्षिणहस्तेनाच्छादनम् । अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रणमन्त्राणां पिप्पलादऋषिः गायत्रीछन्दः कालाग्निरुद्रोदेवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः । ॐ अग्निरितिभस्म वायुरि० जलमि० स्थलमि० व्योमेति० सर्वंठं० हवा इदं भस्म मन इत्येतानि चक्षूँषि भस्मानि तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद्व्रतमेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षाय ।

आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दोब्रह्माग्निवायुसूर्या

देवता भस्मनि अप आसेचने विनियोगः। ॐ आपोज्योती०। ॐ नमः शिवायेति संमर्दनम्——

१——ईशान इत्यस्य ईशानऋषिरनुष्टुप्छन्दःरुद्रोदेवता शिरसि भस्मोद्धूलने वि० ॐ ईशानः सर्व० शिरसि।

२——तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिर्गायत्रीछन्दः रुद्रो० मुखे भ०। ॐ तत्पुरुषाय० मुखे।

३——अघोरेभ्य इत्यस्याघोरऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता हृदये भ०। ॐ अघोरे० हृदये।

४——वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिर्जगतीछन्दः विष्णुर्देवता गुह्ये भ०। ॐ वामदेवाय० गुह्ये०।

५——सद्योजातमित्यस्य सद्योजातऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मदेवता पादयोर्भ०। ॐ सद्योजातं० पादयोः प्रणवेन मस्तकादिपादान्तम्।

मानस्तोकइत्यस्य कुत्सऋषिर्जगतीछन्दः एको रुद्रोदेवता भस्मोद्धरणे वि०। ॐ मानस्तोके० त्र्मंबकनित्यस्य वसिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्दःत्र्यम्बको रुद्रोदेवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिरुष्णिक्छन्दः आशीर्देवता भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे विनियोगः।

यास्य प्रथमारेखा सा गार्हप्रत्यश्चाकारो रजो भूलौकश्चात्माक्रियाशक्तिः ऋग्वेदः प्रातःसवनं महादेवो देवता, यास्य द्वितीयारेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्वमन्तरिक्षमन्तरात्माचेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं महेश्वरोदेवता, यास्य तृतीयारेखा साऽऽहवनीयो मकारस्तमोद्यौः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं शिवो देवता, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेःक०। त्रिपुण्ड्रधारणम्। ॐ नमः शिवायेति रुद्राक्षधारणम्।

—००:०:००—

छन्दःपुरुषन्यासः

ॐ तिर्यग्बिलाय चमसायोर्ध्वबुध्नाय नमः	शिरसि ।
ॐ गौतमभरद्वाभ्यां नमः	नेत्रयोः ।
ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः	श्रोत्रयोः ।
ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः	नासापुटयोः ।
ॐ अत्रये नमः	वाचि ।
ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नम	शिरसि ।
ॐ उष्णिहे्छन्दसे नमः सवित्रे नमः	ग्रीवायाम् ।
ॐ बृहत्यैछन्दसे नमः बृहस्पतये नमः	अनूके ।
ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः	बाह्वोः ।
ॐ त्रिष्टुभेछन्दसे नमः इन्द्राय नमः	उदरे ।
ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः	श्रोण्योः ।
ॐ अतिच्छन्दसे नमः प्रजापतये नमः	लिङ्गे ।[उदकोपस्पर्शः ।]
ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः	पायौ ,,
ॐ अनुष्टुभेछन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः	ऊर्वोः ।
ॐ पङ्क्त्यैछन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः	जान्वोः ।
ॐ द्विपदायैछन्दसे नमः विष्णवे नमः	पादयोः ।
ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः	प्राणेषु ।
ॐ न्यूनाक्षराय छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः	मस्तकादिपादान्तम् ।

[१] मनोजूतिरित्यस्य आङ्गिरसो बृहस्पतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता हृदये न्यासे वि० । ॐ मनोजूति० हृदयाय नमः । अबोध्यग्निरित्यस्य बुधगविष्ठिरावृषी त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानराग्निर्देवता शिरसि न्यासे वि० । ॐ अबोध्यग्निः० शिरसे स्वाहा । मूर्द्धानमित्यस्य भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोऽग्निर्देवता शि-

खायां न्यासे वि०। ॐ मूर्द्धानन्दिवो० शिखायै वषट्। मर्माणित इत्यस्य विवस्वानृषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता कवचन्यासे वि०। ॐ मर्माणि ते० कवचाय हुम्। विश्वतश्चक्षुरित्यस्य विश्वकर्मा-मौवनऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः विश्वकर्मादेवता नेत्रन्या०। ॐ विश्वत० नेत्रत्रयाय वौषट्। मानस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषिर्जगतीछन्दः एको-रुद्रोदेवता अस्त्रन्यासे वि०। ॐ मानस्तोके० अस्त्राय फट्।

[२] या ते रुद्रेत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रोदेवता शिखायां न्यासे वि०। ॐ या ते रुद्रशिवातनूर० शिखायाम्। अस्मिन्महत्यर्णव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा-देवता शिरसि न्यासे वि०। अस्मिन्मह० शिरसि। असंख्याता इत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवता ललाटन्यासे वि०। ॐ असंख्याता० ललाटे। त्र्यम्बकमितिद्वयोः क्रमेण वसिष्ठ-प्रजापतीऋषी अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो दे० नेत्रयोर्न्या०। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० नेत्रयोः। मानस्तोक इत्यस्य कुत्सऋषि-र्जगतिछन्दः एकोरुद्रो देवता नासिकायां न्यासे वि०। ॐ मानस्तोके तन० नासिकायाम्। अवतत्येत्यस्य परमेष्ठी ऋषिर-नुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रो देवता मुखे न्यासे वि०। ॐ अवतत्य० मुखे। नीलग्रीवा इति द्वयोः परमेष्टीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रो देवता कण्ठे न्यासे वि०। ॐ नीलग्रीवाशि० कण्ठे। नमस्तऽआयु-धायेति परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकोरुद्रो देवता प्रकोष्ठयोर्न्या०। ॐ नमस्त ऽआ० प्रकोष्ठयोः। ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठीऋषिर-नुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवता हस्तयोर्न्या०। ॐ ये तीर्थानि प्र० हस्तयोः। नमो वः किरिकेभ्यः इत्यस्य परमेष्ठीऋषिः सामो-ष्णिकयजुरुष्णिकदैवीजगतीछन्दांसि किरिकादयो मन्त्रवर्णावगता अन्य-तरतो नमस्कारा हृदये न्या०। ॐ नमो वः कि० हृदये। नमोहिरण्य वाहव-इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अत्रैकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् दशाक्षराणां यजुः पंक्ति-श्छन्दांसि हिरण्यवर्णा नाभौ न्या०। ॐ नमो हिरण्य०। इमा-रुद्रायेत्यस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः गुहये न्यासे वि०। ॐ इमा-

रुद्राय० गुह्ये। मानोमहान्तमित्यस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः एको-रुद्रो देवता ऊर्वोर्न्या०। ॐ मानोम० ऊर्वोः। एष ते इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सामपंक्तिर्यजुर्जगत्यश्छन्दांसि रुद्रोदेवता जान्वोर्न्या०। ॐ एषते० जान्वोः। अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दः रुद्रो देवता जंघयोर्न्या०। ॐ अवरुद्र० जंघयोः। अध्यवोचदित्यस्य परमेष्ठीऋषिः पंक्तिश्छन्दः एको रुद्रो देवता कवचन्यासे वि०। ॐ अध्यवोचद० कवचम्। नमो विल्मिन इत्यस्य परमेष्ठीऋषिः-अत्र षडक्षराणां यजुर्गायत्रीछन्दः पञ्चाक्षरयोर्दैवीपंक्तिः सप्ताक्षरस्य यजुरुष्णिगितिछन्दांसि विल्मिनादयो मन्त्रवर्णाविगता अन्यतरतो नमस्कारा० उपकवचन्या० वि०। ॐ नमो विल्मिने० उपकवचम्। नीलग्रीवायेत्यस्य परमेष्ठीऋषिः अनुष्टुप्छन्द एको रुद्रो देवता तृतीयनेत्रन्यासे वि०। ॐ नमोस्तु नी० तृतीयनेत्रम्। प्रमुञ्चेत्यस्य परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्द एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे वि७। ॐ प्रमुञ्च ध० अस्त्रम्। यऽएतावन्तश्चेति परमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रो देवता दिग्बन्धने वि०। ॐ यऽएतावन्त० दिग्बंधः।

[३] ॐ नमो भगवते रुद्राय-इति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः विराट्छन्दः श्रीरुद्रो देवता न्यासे०। ॐ नमो मूर्धनि। ॐ नं नमो नासिकायाम्। ॐ मों नमः ललाटे। ॐ भं नमः मुखे। ॐ गं नमः कण्ठे। ॐ वं नमः हृदये। ॐ तें नमः दक्षिणहस्ते। ॐ रुं नमः वामहस्ते। ॐ द्रां नमः नाभौ। ॐ यं नमः पादयोः।

[४] त्रातारमित्यस्य गर्गऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता प्राच्यां० संपुटी क० वि०। ॐ त्रातारमि०। त्वन्नोऽअग्ने इत्यस्य हिरण्यस्तूप आंगिरसऋषिर्जगतीजन्दोग्निर्देवता आग्नेय्यां सं०। ॐ त्वन्नो-अ०। सुगन्नुपन्थामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वैवस्वतो दे० दक्षिणस्यां० सं० ॐ सुपन्नुप०। असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः निर्ऋतिर्देवता नैऋत्यां दि० सं०। ॐ असुन्वन्तम०। तत्वायामीत्यस्य शुनःशेपऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता प्रती० सं०। ॐतत्वायामि० आनोनियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वायु-

देवता वायव्यां स० । ॐ आनो नि० । वयठं० सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः गायत्रीछन्दः सोमोदेवता उदीच्यां स० । ॐ वयठं. सोम० । तमीशानमित्यस्य गौतमऋषिः जगतीछन्दः ईशानो देवता ईशान्यां स० । ॐ तमीशान० । अस्मे रुद्रा इत्यस्य प्रगाथऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ऊर्द्धायां स० । ॐ अस्मे रुद्रा० । स्योनापृथिवीत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः अनन्तोदेवता अधोदिशि सं० । ॐ स्योना० ।

[५] यज्जाग्रत इति षडर्चस्य शिवसङ्कल्पसूक्तस्य शिवसङ्कल्पऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः मनो देवता हृदये न्यासे होमे च वि० । ॐ यज्जाग्रतो दू० हृदयाय नमः । सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुषऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्याः त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषोदेवता शिरसि न्या० हो० वि० । ॐ सहस्रशीर्षा० शिरसे स्वाहा । अद्भ्यः संभृत इति षड्चस्योत्तरनारायणपुरुषऋषिः आद्यानां तिसृणां त्रिष्टुप्छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायाः त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता शिखा०हो० वि० । ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० शिखायै वषट् । आशुः शिशान इति द्वादशानामप्रतिरथऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता कवचन्यासे होमे च वि० । ॐ आशुः शिशानः० कवचाय हुम् । विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्यऋषिः जगतीछन्दः सूर्योदेवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्वऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता, तं प्रत्नथेत्यस्य स्वयंभूर्ब्रह्मऋषिः जगतीछन्दः विश्वेदेवादेवता, अयं वेन इत्यस्य स्वयंभूब्रह्मऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमदेवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरसऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, आन इत्यस्य अगस्त्यऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतं कक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्वऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्योदेवता तत्सूर्यस्येतिद्वयोः कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोदृहतीछन्दः सूर्योदेवता, श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेधऋषिः बृहतीछन्दः सूर्योदेवता, अद्यादेवा इत्यस्य कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः

सूर्योदेवता, आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरसऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता नेत्रत्रये न्यासे होमे च विनियोगः। ॐ विभ्राड्वृह०। नेत्रत्रयाय वौ०। शतरुद्रियाख्यस्य नमस्ते इति रौद्राध्यायस्य परमेष्ठी-ऋषिः, नमस्ते इत्यस्य गायत्रीछन्दः, यातेरुद्रेत्यादीनां तिसृणामनुष्टु-प्छन्दः, अध्यवोचदिति तिसणां पंक्तिश्छन्दः, नमोस्तु इत्यादिसप्ता-नामनुऽष्टुप्छन्दः, मानोमहान्तमिनि द्वयोः कुत्सऋषिः जगतीछन्दः सर्वेषामेकोरुद्रोदेवता।

[६] नमोहिरण्यबाहवे इत्यादीनां श्वभ्यःश्वपतिभ्यश्च वो नमः इत्यन्तानां पञ्चचत्वारिंशत्संख्याकानां यजुषां, हिरण्यबाहुः सेनानीर्दिशांपतिरित्यादिमन्त्रवर्णावगता उभयतो नमस्कारा बह-वोरुद्रादेवताः, नमो भवाय च रुद्रायचेत्यादीनां प्रखिदतेचेत्य-न्तानां यजुषां भवादयो मन्त्रलिङ्गावगता अन्यअन्यतरतो नम-स्कारा बहवो रुद्रादेवताः, नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नम इत्यस्य यजुष उभयतो नमस्कारा बहवोरुद्रादेवताः, नमो वः किरिकेभ्य इत्यादीनां यजुषामन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रादेवताः, द्राप इत्यस्य उपरिष्टाद्वृहतीछन्दः इमारुद्रायेति कुत्स-ऋषिः जगतिछन्दः, याते० इत्यस्य अनुष्टुप्छन्दः, परिण इति द्वयोः त्रिष्टुप्छन्दः, विकिरुद्र सहस्राणीति द्वयोरनुष्टुप्छन्दः सप्तानामेको-रुद्रोदेवता, असंख्यातेत्यादीनां दशानां यजुषां अनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रादेवताः, नमोऽस्तु रुद्रेभ्य इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां घृतिश्छन्दः बहवो रुद्रादेवताः, सकलाध्यायस्य शतशीर्षा रुद्रोदेवता अस्त्रन्यासे होमे च विनियोगः।

ॐ नमस्ते रुद्र० इत्यारभ्यद्वेष्टितमेषाञ्जाम्भेधेदध्मः इत्यन्तं शतरुद्रियाख्यं रौद्राध्यायं जप्त्वा अस्त्राय फट्।

एषते इत्यस्य प्रजापतिऋर्षिः सामपंक्तिर्यजुर्जगतीश्छन्दः रुद्रो-देवता योनि मुद्राप्रदर्शने वि०। ॐ एषतेरुद्र० योनिमुद्राप्रदर्शनम्।

वयठं० सोमेत्यस्य बन्धुऋर्षिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता, एषते इत्यनयोःप्रजापतिऋर्षिः सामपंक्तिर्यजुर्जगतीजन्दांसि रुद्रोदेवता, अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिऋर्षिः सामपङ्क्तिश्छन्दः रुद्रोदेवता, भेषज-

मसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः [ककुप्छन्दः रुद्रोदेवता, त्र्यम्बकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठप्रजापतीऋषी अनुष्टुप्छन्दः त्र्यम्बकोरुद्रोदेवता, एतत्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः आस्तारपङ्क्तिश्छन्दः रुद्रोदेवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिः उष्णिक्छन्दः आशीर्देवता, शिवोनामासीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्याबृहतीछन्दः क्षुरोदेवता, निवर्त्तयामीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्रजापत्यात्रिष्टुप्छन्दः लिङ्गोक्तादेवता जपे विनियोगः। ॐ वयर्ठ० सोमव्रते०।

उग्रश्चेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः मरुतोदेवता, अग्निठं हृदयेत्यादीनाँ यजुषां प्रजापतिर्ऋषिःगायत्रीछन्द. लिङ्गोक्तादेवता, आयासाय स्वाहेत्यादीनां प्रजापतिर्ऋषिः लिङ्गोक्तादेवता जपे विनियोगः। ॐ उग्रश्च भीम०।

वाजश्च मे इत्यादि चमकमन्त्राणां स्वाहेत्यन्तानां देवा ऋषयः, वाजश्च मे इत्यादीनांचतुरक्षराणां दैवीबृहतीछन्दः, ऊर्क् च मे इत्यादित्र्यक्षराणां दैव्यनुष्टुप्, प्रयतिश्च मे इति पञ्चाक्षराणां दैवीपंक्ति, आधिपत्यश्च मे इत्यादीनां षडक्षराणां दैवीत्रिष्टुप्छन्छन्दः, हारियोजनश्च मे इत्यादिसप्ताक्षराणां दैवी जगतीछन्दः, आयुर्यज्ञेन कल्पन्तामित्यादीनामष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप्छन्दः, भुवनस्य पतये स्वाहेत्यादीनां नवाक्षराणां यजुर्बृहतीछन्दः, मुग्धाय वैनर्ठ० शिनायेत्यादीनां दशाक्षराणां यजुः पंक्तिश्छन्दः, विनर्ठ० शिन आन्त्यावनायेत्यादीनामेकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप्छन्दः, अंगुलयः शक्वरयोदिशश्च मे इत्यस्य द्वादशाक्षरस्य यजुर्जगतीछन्दः सर्वेषामग्निर्देवता होमे विनियोगः। ॐ वाजश्च मे।

ऋचं वाचमिति शान्त्याध्यायस्य दध्यङाथर्वणऋषिः विश्वेदेवा-देवता ऋचं वाचमिति चतुर्णां यजुषां दैवीजगतीछन्दः ऋगादयो लिङ्गोक्तादेवता, वागोज इत्यस्य यजुर्जगतीछन्दः वागादिलिङ्गोक्ता देवता, यन्मे इत्यस्य पंक्तिश्छन्दः बृहस्पतिर्देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां दध्यङाथर्वणऋषिः दैवीगायत्रीदैव्युष्णिक्दैवीगायत्रीछन्दांसि

अग्निवायुसूर्यादेवताः, तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिः गायत्रीछन्दः सवितादेवता, कयान इति त्र्यर्चस्य दध्यङाथर्वणऋषिः द्वयोर्गायत्रीछन्दःतृतीयायाः पादनिचृद् गायत्रीछन्दः इन्द्रोदेवता, इन्द्रोविश्वस्येति द्विपदाविराट्छन्दः इन्द्रोदेवता, शन्नो मित्रः शन्नो वात इतिद्वयोरनुष्टुप्छन्दः मित्रावरुणादयो लिङ्गोक्तादेवताः, अहानिशमित्यस्य द्विपदागायत्रीछन्दः अहानि रात्रयश्च देवताः, शन्न इन्द्राग्नीत्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्राग्नी इन्द्रावरुणौ-इन्द्रापूषणौ-इन्द्रासोमौ च देवताः, शन्नोदेवीरित्यस्य गायत्रीछन्दः आपोदेवता, स्योनापृथिवीत्यस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्गायत्रीछन्दः पृथिवीं देवता, आपोहिष्ठेति त्र्यर्चस्य दध्यङाथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपोदेवता, द्यौः शान्तिरित्यस्य शक्वरीछन्दः द्यौरादयोलिङ्गोक्तादेवताः, दृतेदृंहं० हेत्यस्य ब्राह्मी अनुष्टुप्छन्दः आशीर्देवता, दृतेदृंहं० हेत्यस्य उष्णिक्छन्दः आशीर्देवता, नमस्ते हरसे इत्यस्य दध्याथर्वणऋषिः बृहतीछन्दः अग्निर्देवता, नमस्ते अस्तु० यतोयतःइत्यनयोरनुष्टुप्छन्दः आद्यायाविद्युत्स्तनयित्नुर्भगवान्देवता, द्वितीयायाः महावीरोदेवता, सुमित्रियान इत्यस्य दध्यङाथर्वणऋषिः प्राजापत्याजगतीछन्दः आपोदेवता तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः अक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता शान्त्यर्थं होमे विनियोगः । ॐ ऋचं वाचं प्रप० ।

ध्यानम्

ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ।
गङ्गाधरं दशभुजंसर्वाभरणभूषितम् ॥१॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥२॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाजूटमुद्योतकारिणम् ॥३॥
अमृतेन युतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम् ।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥४॥

दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥५॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम् ।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥६॥

[ततो होमः]

॥ इति हवनात्मकमहारुद्रन्यासप्रयोगः ॥
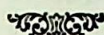
अथ होमात्मक लघु (महा) रुद्रप्रयोगे संकल्पः

कर्त्ता त्रिराचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात्——देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माऽहं मम कायिकादि अखिल पापक्षयपूर्वक धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिबप्रीत्यर्थं एकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागपक्षेण यथांशेन विहितं हवनमहं करिष्ये। तत्रादौ रुद्रहोमकर्माङ्गत्वेन षडङ्गन्यासांश्चाहं करिष्ये। तद्यथा——

१—ॐ मनोजूतिः० — ॐ हृदयाय नमः

२—ॐ अवोध्यग्निः — ॐ शिरसे स्वाहा।

३—ॐ मूर्द्धानन्दिवो० — ॐ शिखायै वषट्।

४—ॐ मर्म्माणिते० — ॐ कवचायहुम्।

५—ॐ विश्वतश्चक्षु० — ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्।

६—ॐ मानस्तोके० — ॐ अस्त्राय फट्।

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावंतसम्।
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अथ प्रधानरुद्रहोमः

तत्रादौ सयजमाना ऋत्विजः कुण्डं परितःस्थित्वा भुतशुद्ध्यादि मातृगणन्यासान्तं कर्म कृत्वा रुद्र पञ्चाङ्गन्यासान्[1] कुर्युः। आदौ वराहुतीहुत्वा रुद्रहोमः कार्यः। तद्यथा——

१—पञ्चागन्यासाः ऋग्विधाने—

"हृदयं च शिरःशिखाकवचं चास्यमेव च।
यथादेहे तथा देवे न्यासं कुर्याद्यथाविधि॥"

ॐ यज्जाग्रत इति षडर्चेन एकाहुतिम् । ॐ सहस्रशीर्षेति षोडर्चेन सूक्तेनैकाहुतिम् । ॐ अद्भ्यः संभृत इति षडर्चेन एकाहुतिम् । ॐ आशुः शिशान इति द्वादशर्चेन एकाहुतिम् । ॐ विभ्राड् इति सप्तदशर्चेन चैकाहुतिं हुत्वा तत ॐ नमस्ते इति प्रधानभूतेन रुद्राध्यायेन होमः कार्यः ।

अथ प्रधानरुद्रहोमोपक्रमः

स च एकधा १–त्रेधा २–षोढा ३–षोडशधा ४–चतुश्चत्वारिंशद्धा ५–अष्टाचत्वारिंशद्धा ६–एकषष्ट्युत्तरशतधा ७–पञ्चविंशत्युत्तरचतुःशतधा ८–चेत्यष्टविभागा भवन्ति । अत्र एकषष्ट्युत्तरशतधामन्त्रविभागपक्षेण होमः प्रस्तूयते ।

—ooXoo—

रुद्रहोमस्वाहाकाराः

[एकषष्ट्युत्तरशतधामन्त्रविभागात्मकाः]

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा । इति हुत्वा,

ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः,

ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः ।
बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥१॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥२॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते ब्बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिर्ठ० सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥३॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मर्ठ० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥४॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्व्यो भिषक् ।
अहीँश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनर्ठ० रुद्द्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषार्ठ० हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः।

उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहाः ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत।
अनेशन्नस्य याः इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्म्मान्व्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः।
अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अब्भर्कम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् ॥ १५ ॥

मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्श्वेषु रीरिषः।

मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐनमोहिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥१७॥

ॐनमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१८॥
ॐनमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१९॥
ॐनमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२०॥
ॐनमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२१॥
ॐनमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥२२॥
ॐनमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२३॥
ॐनमः सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२४॥
ॐनमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२५॥
ॐनमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२६॥
ॐनमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२७॥
ॐनमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२८॥
ॐनमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२९॥
ॐनमः सहमानाय निव्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥

ॐनमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३१॥
ॐनमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३२॥
ॐनमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३३॥
ॐनमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥३४॥
ॐनमः सृकायिभ्यो जिघाᳬंसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥

ॐनमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥

ॐनमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३७॥
ॐनमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥३८॥
ॐनमऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥३९॥
ॐनमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४०॥
ॐनमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४१॥
ॐनमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४२॥

ॐनमः शयानेभ्यऽ आसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४३॥

ॐनमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४४॥

ॐनमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४५॥

ॐनमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४६॥

ॐनमऽ आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४७॥

ॐनमऽ उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४८॥

ॐनमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४९॥

ॐनमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमःस्वाहा ॥५०॥

ॐनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५२॥

ॐनमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५३॥

ॐनमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५४॥

ॐनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५५॥

ॐनमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५६॥

ॐनमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५७॥

ॐनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥

ॐनमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५९॥

ॐनमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥६०॥

ॐनमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥६१॥

ॐनमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥६२॥

ॐनमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥६३॥

ॐनमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥६४॥

ॐनमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥६५॥

ॐनमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥६६॥

ॐहमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥६७॥

ॐनमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥

ॐनमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ॥६९॥

ॐनमो बृहते च ऽवर्षीयसे च स्वाहा ॥७०॥
ॐनमो ऽवृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥७१॥
ॐनमोऽग्रयाय च ऽप्रथमाय च स्वाहा ॥७२॥
ॐनमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥७३॥
ॐनमः शीग्घ्रयाय च शीब्भ्याय च स्वाहा ॥७४॥
ॐनमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥७५॥
ॐनमो नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥७६॥
ॐनमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥७७॥
ॐनमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥७८॥
ॐनमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥७९॥
ॐनमो जघन्न्याय च वुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥८०॥
ॐनमः सोब्भ्याय च ऽप्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥८१॥
ॐनमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥८२॥
ॐनमः श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा ॥८३॥
ॐनमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥८४॥
ॐनमो ऽवन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥८५॥
ॐनमः श्श्रवाय च ऽप्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥८६॥
ॐनमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥८७॥
ॐनमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥८८॥
ॐनमो विल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥८९॥
ॐनमो ऽवर्म्मिणे च ऽवरूथिने च स्वाहा ॥९०॥
ॐनमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥९१॥
ॐनमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा ॥९२॥
ॐनमो धृष्ष्णवे च ऽप्रमृशाय च स्वाहा ॥९३॥
ॐनमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥९४॥
ॐनमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥९५॥
ॐनमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा ॥९६॥
ॐनमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥९७॥

ॐनमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा ॥९८॥
ॐनमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥९९॥
ॐनमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥१००॥
ॐनमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा ॥१०१॥
ॐनमो व्वीद्ध्र्याय चातप्याय च स्वाहा ॥१०२॥
ॐनमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्याय च स्वाहा ॥१०३॥
ॐनमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥१०४॥
ॐनमो व्वात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥१०५॥
ॐनमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥१०६॥
ॐनमः सोमाय च रूद्द्राय च स्वाहा ॥१०७॥
ॐनमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा ॥१०८॥
ॐनमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥१०९॥
ॐनमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥११०॥
ॐनमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥१११॥
ॐनमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥११२॥
ॐनमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा ॥११३॥
ॐनमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥
ॐनमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥११५॥
ॐनमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥११६॥
ॐनमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥
ॐनमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥११८॥
ॐनमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥११९॥
ॐनमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥१२०॥
ॐनमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥१२१॥
ॐनमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा ॥१२२॥
ॐनमः किर्ठ० शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥१२३॥
ॐनमा कपर्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥१२४॥
ॐनमऽ इरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥१२५॥

ॐनमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥१२६॥
ॐनमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥१२७॥
ॐनमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥१२८॥
ॐनमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्याय च स्वाहा ॥१२९॥
ॐनमः शुष्क्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ॥१३०॥
ॐनमः पाᳫंसव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥
ॐनमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥१३२॥
ॐनमऽ ऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥
ॐनमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥
ॐनमऽ इद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा ॥१३५॥
ॐनमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥
ॐनमऽ इषुकृद्ब्भ्यो धनुष्कृद्ब्भ्यश्च वो नमःस्वाहा ॥१३७॥
ॐनमो वः किरिकेब्भ्यो देवानाᳬ हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥१३८॥
ॐनमो व्विचिन्न्वत्केब्भ्यो देवानाᳬ हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥१३९॥
ॐनमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो देवानाᳬ हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥१४०॥
ॐनमऽ आनिर्हतेब्भ्यो देवानाᳬ हृदयेब्भ्यः स्वाहा ॥१४१॥
ॐद्द्रापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्द्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषा-
म्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥१४२॥
ॐइमा रुद्द्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्द्वीराय प्प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्प्पदे व्विश्श्वम्पुष्ट्टं ग्रामेऽ
अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ १४३ ॥
ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥
ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्क्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवद्ब्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय
तनयाय मृड स्वाहा ॥ १४५ ॥
ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्षऽ
आयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिब्भ्र-
दागहि स्वाहा ॥१४६॥

ॐ व्विकिरिद्द्र व्विलोहित नमस्ते ऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥१४७॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥१४८॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽ अधि भूम्म्याम् ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१४९॥

ॐ अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५०॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः द्दिवꣳ रुद्द्राऽ उपश्रिताः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५१॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजऽनेव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५२॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५३॥

ॐ ये भूयानाभधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजननेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५४॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५५॥

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५६॥

ॐ येऽन्नेषु व्विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५७॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्थिरे ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५८॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च न द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१५९॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥१६०॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥१६१॥

ॐभूः, ॐभुवः। ॐस्वः। ॐव्वयर्ठ० सोम० (८ मन्त्राः) [पाठमात्रम्]।

ॐउग्रश्च० (७ मन्त्राः) [पाठमात्रम्]।

ॐव्वाजश्च० ॥ १ ॥ प्राणश्च० ॥ २ ॥ ओजश्च० ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यं च० ॥ ४ ॥ स्वाहा।

२–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐसत्यश्च० ॥ १ ॥ ऋतश्च० ॥ २ ॥ यन्ता च० ॥३॥ शश्च० ॥४॥ स्वाहा।

३–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐऊर्क् च० ॥१॥ रयिश्च० ॥२॥ वित्तञ्च० ॥३॥ व्व्रीहयश्च० ॥४॥ स्वाहा।

४–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐअश्मा च० ॥१॥ अग्निश्च० ॥२॥ व्वसु च० ॥३॥ स्वाहा।

५–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐअग्निश्च मऽ इन्द्रश्च० ॥१॥ मित्त्रश्च० ॥२॥ पृथिवी च० ॥३॥ स्वाहा।

६–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐअर्ठ० शुश्च० ॥१॥ आग्रयणश्च० ॥२॥ स्रुचश्च० ॥३॥ स्वाहा।

७–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐअग्निश्च० ॥१॥ व्व्रतञ्च० ॥२॥ स्वाहा।

८–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐएका च० ॥१॥ स्वाहा ।
९-ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः)
ॐचतस्रश्च० ॥१॥ स्वाहा ।
१०=त्र्यविश्च० ॥१॥ पष्ठवाट् च० ॥२॥ स्वाहा ।
(पुनः) ॐयज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः०) स्वाहा ।
ॐसहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐअद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐआशुः शिशानः० (१२ मन्त्रा) स्वाहा ।
ॐविभ्राड् बृहत्० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।
११-ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।
ॐवाजाय स्वाहा० ॥१॥ आयुर्यज्ञेन कल्पताम्० ॥२॥ स्वाहा ।
ॐऋचं वाचम्० स्वाहा । ॐयन्मे छिद्रम्० स्वाहा ।
ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा । ॐकयानश्चित्रः० स्वाहा ।
ॐकस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा । ॐअभी षु णः० स्वाहा ।
ॐकया त्वन्नऽ ऊत्या० स्वाहा । ॐइन्द्रो विश्वस्य० स्वाहा ।
ॐशं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा । ॐशं नो वातः० स्वाहा ।
ॐअहानिशं भवन्तु० स्वाहा । ॐशन्नो देवीः० स्वाहा ।
ॐस्योना पृथिवी० स्वाहा । ॐआपो हि ष्ठा० स्वाहा ।
ॐयो वः शिवतमो रसः० स्वाहा । ॐतस्माऽ अरं गमाम० स्वाहा ।
ॐद्यौः शान्तिः० स्वाहा । ॐदृते दृꣳह मा मित्रस्य मा० स्वाहा ।
ॐदृते दृꣳह मा० स्वाहा । ॐमनस्ते हरसे० स्वाहा ।
ॐनमस्तेऽ अस्तु विद्युते० स्वाहा । ॐयतो-यतः० स्वाहा ।
ॐसुमित्रिया नऽ आप० स्वाहा । ॐतच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा ।
ॐसद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।
ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति ।

इति रुद्रयागहवनमन्त्रविधिः समाप्तः
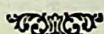
अथ विष्णुयागे होमविधिः

ऋत्विजो यजमानश्च आचम्य प्राणानायम्य पवित्रधारणं कुर्युः—
ॐ पवित्रेस्थो० ॐअपवित्रः पवित्रोवा० ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ३ ।
आसनशुद्धिः—पृथ्वीतिमन्त्रस्यमेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः—

पृथिवित्वयाधृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

भूतशुद्धिः—अपसर्पन्तुते···विष्णुहोमं करोम्यहम् ।
शिखाग्रन्थिबन्धनम्—ॐ ऊर्ध्वं केशिविरूपाक्षि० ।
भैरवनमस्कारः—ॐ तीक्ष्णं दंष्ट्रमहाकाय० ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य० तिथौ वासरे च अमुक गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रेणयजमानेन वृतोऽहं सङ्कल्पितेऽस्मिन् सनवग्रहमखहोमात्मक—श्रीविष्णु यागाख्ये कर्मणि सङ्कल्पिताहुति संख्यापूर्त्तये अन्ते प्रतिमन्त्रं नारायणाय स्वाहेति समुच्चयपूर्वकैः पुरुषसूक्तमन्त्रैः यथांशेन हवनं करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं महागणतिस्मरणमहं करिष्ये ।

ध्यानम्

उच्चैर्ब्रह्माण्डखण्डद्वितयसहचरं-कुम्भयुग्मं दधानम् ,
प्रेङ्खं नागारिपक्ष प्रतिभटविकट-श्रोत्रतालाभिरामम् ।

देवं शम्भोरपत्यं भुजगपतितनु-स्पर्धि वर्धिष्णु हस्तं,
ध्याये पूजार्थमीशंगणपतिममलं, धीश्वरं कुञ्जराख्यम् ।।

विनियोगसङ्कल्पः

सहस्रशीषत्यादि षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप्छन्दः. यज्ञेनयज्ञमित्यस्य त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं नारायणपुरुषोदेवता, न्यासे हवने च विनियोगः ।

अथ पुरुषसूक्तन्यासः[1]

(१) ॐ सहस्रशीर्षा०	वामकरे ।
(२) ॐ पुरुषऽएव०	दक्षिण करे ।
(३) ॐ एतावानस्य०	वामपादे ।
(४) ॐ त्रिपादूर्ध्वं०	दक्षिणपादे ।
(५) ॐ ततो विराट्०	वामजानौ ।
(६) ॐ तस्माद्य० सर्वंहु०	दक्षिणजानौ ।
(७) ॐ तस्माद्य० सर्व० ऋ०	वामकट्याम् ।
(८) ॐ तस्मादश्वा०	दक्षिण कट्याम् ।
(९) ॐ तं यज्ञं बर्हि०	नाभौ ।
(१०) ॐ यत्पुरुषं व्य०	हृदि ।
(११) ॐ ब्राह्मणोऽस्य मु०	कण्ठे ।
(१२) ॐ चन्द्रमा मन०	वामबाहौ ।
(१३) ॐ नाभ्याऽआसी०	दक्षिणबाहौ ।
(१४) ॐ यत्पुरुषेण ह०	मुखे ।

---

१. करयोः पादयोर्जान्वोः कट्योर्नाभौ हृदि क्रमात् ।
कण्ठे बाह्वोर्मुखे नेत्रे मूर्ध्नि बामादितो न्यसेत् ।।
ॐकारपूर्वकैर्मन्त्रैः षोडशभिः पृथक् पृथक् ।
न्यासेनैव भवेत्सोऽपि स्वयमेव जनार्दनः ।।
यथात्मनि तथा देवे न्यासं च परिकल्पयेत् ।
(संस्कारगणपतौ—पृष्ठ ८३४)

(१५) ॐ सप्तास्यासन्प० नेत्रयोः ।
(१६) ॐ यज्ञेन यज्ञम्० मूर्ध्नि ।

(अथवा)

(१) ॐ ब्राह्मणोऽस्य मु० हृदयाय नमः ।
(२) ॐ चन्द्रमामनसो० शिरसे स्वाहा ।
(३) ॐ नाभ्याऽआसीदन्त० शिखाय वषट् ।
(४) ॐ यत्पुरुषेण हविषा० कवचाय हुम् ।
(५) ॐ सप्तास्यासन्परिधयः० नेत्रत्रयाय वौषट् ।
(६) ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त० अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

वराहुती

ॐ गणानान्त्वा०० स्वाहा । ॐ अम्बेऽम्बिके० स्वाहा ।

अथ पुरुषसूक्तहोमः

ॐ सहस्रशीर्षा०···दशांगुलम्—नारायणाय स्वाहा ॥१॥
ॐ पुरुषऽएवेदम्०···रोहति—नारायणाय स्वाहा ॥२॥
ॐ एतावानस्य०···मृतन्दिवि—नारायणाय स्वाहा ॥३॥
ॐ त्रिपादूर्ध्व० शनानशनेऽऽअभि—नारायणाय स्वाहा ॥४॥
ॐ ततोऽविराडजायत० ··भूमिमथोपुरः—नारायणाय स्वाहा ॥५॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्०···ग्राम्याश्चये—नारायणाय स्वाहा ॥६॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्···तस्मादजायत—नारायणाय स्वाहा ॥७॥
ॐ तस्मादश्वा०···अजावयः—नारायणाय स्वाहा ॥८॥
ॐ तं यज्ञम्०···ऋषयश्चये—नारायणाय स्वाहा ॥९॥
ॐ यत्पुरुषं···उच्येते—नारायणाय स्वाहा ॥१०॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य०···शूद्रोऽअजायत—नारायणाय स्वाहा ॥११॥
ॐ चन्द्रमामनसो०···दग्निरजायत—नारायणाय स्वाहा ॥१२॥
ॐ नाभ्याऽआसीद०···लोकाँ २॥ऽअकल्पयन्—नारायणाय स्वाहा ॥१४॥
ॐ यत्पुरुषेण०···शरद्धविः—नारायणाय स्वाहा ॥१४॥
ॐ सप्तास्यासन्०···पुरुषम्पशुम्—नारायणाय स्वाहा ॥१५॥
ॐ यज्ञेनयज्ञम्०···सन्तिदेवाः—नारायणाय स्वाहा ॥१६॥

[होमान्ते षडङ्गन्यासान् कृत्वा ध्यानं कुर्यात्]

विष्णुयागादौ आहुतिसंख्या—

नारदपञ्चरात्रे :—

यत्र होमात्मकं यागं वैष्णवं पापनाशनम् ।
तत्रैकलक्षषष्ठ्या च सहस्रपरिमितं भवेत् ॥
यं कृत्वा कृतकृत्यास्युः सूर्यलोकमवाप्नुयुः ।
तमेव विष्णुयागं वै प्रवदन्ति मनीषिणः ॥
तथा त्रिलक्षं विंश सहस्रांक विधानतः ।
होमं कुर्यात् "महाविष्णुरिति नाम विनिर्दिशेत् ॥
यं कृत्वा प्राप्नुयात्स्वर्गं भुवर्लोकं मतं मम ।
तुर्यलक्षं तथाशीत्या सहस्राख्य विधानतः ॥
तमेवातिविष्णुयागं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥

अथ दुर्गा पूजा प्रयोगः

आचमनम्—ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकाराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुःपुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्तिधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलकन्यासनवार्णजपरात्रिसूक्तपाठसप्तशतीन्यासध्यानसहित चरित्रसम्बन्धिविनियोगन्यासध्यानपूर्वकं च 'मार्क-

ण्डय उवाच ॥ ॐ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।' इत्या-द्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यास-विधिसहितदेवीसूक्तपाठ नवार्णमन्त्रजपं अन्ते रहस्यत्रयपठनं च करिष्ये ।

एवं संकल्पं कृत्वा——

दक्षे हरिं वामे ईश्वरं प्रणवादिनमोन्तनाममन्त्रेण संपूज्य । प्राङ्-मुखः शुद्धचित्तः क्वचिन्निर्मले पीठे चन्दनागरुकुङ्कुमैः षट्कोणाष्ट-दलभूपुरात्मकं यन्त्रं निर्माय षट्कोणमध्ये ऐं ह्रीं क्लीं इति क्रमेण बीजान्यालिख्य भूतशुद्धिं कुर्यात् ।

अथ च पद्मासनं बद्ध्वा मौनी मूलाधारपद्मे जीवकलां सूक्ष्मां सोमसूर्याग्निरूपिणीं विषतन्तुसन्निभां कुण्डलिनीं ध्यात्वा षट्चक्राणि भित्त्वा सहस्रारं ब्रह्मबिलमानीय तथा चतुर्विंशतितत्त्वानि[1] स्वे स्वे मूलकारणे लीनानि विभाव्य प्राणायामक्रमेण यमिति वायुबीजेन षोडशवारजप्तेन कृष्णवर्णेन वायुमापूर्य तस्यैव चतुःषष्ठिजपेन कुम्भ-यित्वा दक्षनासाध्वना द्वात्रिंशता रेचयेत् । एवं भूतानि देहगतानि शुष्काणि विभाव्य पुनस्तथैव पिङ्गलया रमिति वह्निबीजं रक्तं ध्यायन् षोडशभिः पूरकं तेनैव चतुःषष्ठ्या कुम्भकं द्वात्रिंशता रेचक-मारचय्य शुष्कभूतानि संदह्य पुनस्तथेवेडया वमिति वरुणबीजं शुक्लवर्णं ध्यायन् पूर्ववत्षोडशवारजपेन पूरकं कृत्वा तेनोत्थामृतेन शरीरमाप्लाव्य चितः भूतानि तत्संबन्धीनि चतुर्विंशतितत्त्वानि च यथाक्रमेणोत्पाद्य लमिति भूबीजेन पीतवर्णेन चतुःषष्ट्या कुम्भकं विधाय तथैव पिङ्गलया रेचयेत् । पुनः कुण्डलिनीं मूलाधारमानयेत् ।

इत्थं भूतशुद्धिं विधाय निरस्तसकलभ्रमोभूत्वा वामे श्रीगुरुं दक्षे श्रीगणेशं मध्ये श्रीमहालक्ष्मीं च ध्यात्वा प्रणम्य एकादशन्यासा-न्कुर्यात् ।

तत्रादौ मातृकान्यासः प्रथमः । ॐ अं नमः मूर्द्ध्नि । ॐ आं

---

१. पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशगन्धरसरूपस्पर्शशब्दनासिकाजिह्वात्वक्चक्षुःश्रोत्र-वाक्पाणिपादपायूपस्थप्रकृतिमनोबुद्ध्यहंकारेतिचतुर्विंशतितत्त्वानि ।

नमः ललाटे। ॐ इं नमः दक्षनेत्रे। ॐ ईं नमः वामनेत्रे। ॐ उं नमः दक्षकपोले। ॐ ऊं नमः वामकपोले। ॐ ऋं नमः दक्षश्रुतौ। ॐ ॠं नमः वामश्रुतौ। ॐ लृं दक्षनासायाम्। ॐ लॄं नमः वामनासायाम्। ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे। ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ।

ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ। ॐ अं नमः जिह्वायाम्। ॐ अः नमः तालुनि। ॐ कं नमः दक्षबाहौ। ॐ खं नमः दक्षकूर्परे। ॐ गं नमः दक्षमणिबन्धे। ॐ घं नमः दक्षाङ्गुलिमूले। ॐ ङं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। ॐ चं नमः वामबाहुमूले। ॐ छं नमः तत्कूर्परे। ॐ जं नमः तन्मणिबन्धे। ॐ झं नमः तदङ्गुलिमूले। ॐ ञं नमः तदङ्गुल्यग्रे। ॐ टं नमः दक्षोरुमूले। ॐ ठं नमः दक्षजानुनि। ॐ डं नमः दक्षगुल्फे। ॐ ढं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले। ॐ णं नमः तत्पादाङ्गुल्यग्रे। ॐ तं नमः, वामपादोरुमूले। ॐ थं नमः वामजानुनि। ॐ दं नमः वामगुल्फे। ॐ धं नमः तत्पादाङ्गुलिमूले। ॐ नं नमः तत्पादाङ्गुल्यग्रे। ॐ पं नमः दक्षपार्श्वे। ॐ फं नमः वामपार्श्वे। ॐ बं नमः पृष्ठे। ॐ भं नमः नाभौ। ॐ मं नमः जठरे। ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदये। ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे। ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि। ॐ वं स्नाय्वात्मने नमः वामांसे। ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम्। ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तान्तम्। ॐ सं मेदात्मने नमः हृदयाद्दक्षपादान्तम्। ॐ हं पूयात्मने नमः हृदयादिवामपादान्तम्। ॐ ळंड[1] प्राणात्मने नमः पादादिहृदयान्तम्। ॐ क्षं जीवात्मने नमः हृदयादिशिरोऽन्तम्। इति मातृकान्यासः प्रथमः॥ १॥ अनेन साधकः साङ्गवेदसमो भवति।

अथ द्वितीयः सारस्वतन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः।

---

१. बह्वृचसंप्रदायप्रसिद्धोऽयं वर्णः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अङ्गुष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिवन्धयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम्। ॐ ऐं ह्रीं क्ली नमः कवचे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलकरपृष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पूर्वे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः आग्नेये। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः दक्षिणे। ॐ ऐं ह्रीं क्लो नमः नैर्ऋत्ये। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पश्चिमे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः वायव्ये। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः उत्तरे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ईशाने। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ऊर्ध्वे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अधः। इति द्वितीयः सारस्वतो न्यासः॥ अनेन दुरितं जाड्यं वाक्पापसञ्चयश्च विलयं याति।

अथ तृतीयो मातृगणन्यासः।

ॐ ह्रीं ब्रह्माणी पूर्वतः पातु। ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां पातु। ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे पातु। ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्ये पातु। ॐ ह्रीं यज्ञवाराही पश्चिमे पातु। ॐ ह्रीं नारसिंही वायव्ये पातु। ॐ ह्रीं ऐन्द्री उत्तरे पातु। ॐ ह्रीं चामुण्डा ईशाने पातु। ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं पातु। ॐ ह्रीं नागेश्वरी पाताले पातु। इति तृतीयो मातृगणन्यामः॥ अनेन कर्ता त्रिषु लोकेषु निर्भयः सन् सर्ववेदप्रियो भवति।

अथ चतुर्थः षड्देवीन्यासः जरामृत्युनाशकः।

ॐ कमलांकुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं पातु। ॐ खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं पातु। ॐ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं पातु। ॐ धनुर्वाणधरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामाङ्गं पातु। ॐ शिरःपात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणपर्यन्तं पातु। ॐ चित्रकान्तिभृद्भ्रामरीचरणाभ्यां शिरःपर्यन्तं पातु। इति चतुर्थः षड्देवीन्यासः॥ अनेन कर्त्ता अग्निवारिभ्यां निर्भयो भूत्वा जरामरणवर्जितो भवति।

अथ पञ्चमो ब्रह्मादिन्यासः।

ॐ ब्रह्मा सनातनः पादादिनाभिपर्यन्तं पातु। ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धिपर्यन्तं नित्यं पातु। ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धेः शिखापर्यन्तं पातु। ॐ हंसः पादद्वयं पातु। ॐ वैनतेयः करद्वयं पातु। ॐ वृषभश्चक्षुषी पातु। ॐ जनार्दनः परात्परतरः सर्वानन्दमयो हरिः सर्वाङ्गानि पातु। इति पञ्चमो ब्रह्मादिन्यासः। अनेन कर्ता महापापातिपापाभ्यांमुक्तो भवति।

अथ षष्ठो लक्ष्म्यादिन्यासः।

ॐ अष्टादशभुजा सती महालक्ष्मीर्मध्यं पातु। ॐ अष्टभुजा सरस्वती ऊर्ध्वं पातु। ॐ त्रिशल्लोचनमण्डिता महाकाली अधः पातु। ॐ सिंहो हस्तद्वयं पातु। ॐ परहंसः अक्षिमण्डलं पातु। ॐ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पादद्वयं पातु। ॐ महेशानश्चण्डिका च सर्वाङ्गानि पातु। इति लक्ष्म्यादि षष्ठन्यासः॥ अनेन कर्त्तुः वैकुण्ठसुखं सर्वकष्टोपशान्तिश्च भवति।

अथ मन्त्रवीजन्यासः सप्तमः।

ॐ ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ ह्रीं नमः दक्षनेत्रे। ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः दक्षकर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षनासापुटे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे। ॐ विं नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुदे। इति मन्त्रवीजन्यासः सप्तमः। अनेन सर्वरोगक्षयो भवति।

अथाष्टमो वीजन्यासः।

ॐ ऐं नमः गुदे। ॐ ह्रीं नमः मुखे। ॐ क्लीं नमः वामनासापुटे। ॐ चां नमः दक्षनासापुटे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षकर्णे। ॐ यै नमः वामनेत्रे। ॐ विं नमः दक्षनेत्रे। ॐ च्चें नमः ब्रह्मरन्ध्रे। इत्यष्टमो वीजन्यासः॥ अनेन सर्वदुःखनाशो भवति।

अथ नवमो मन्त्रन्यासः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरण-

पर्यन्तं पूर्वाङ्गे । ॐ मू० ६ नमः मस्तकाच्चरणावधि दक्षिणाङ्गे । ॐ मू० नमः मस्तकाच्चरणावधि पृष्ठे । मुलमुच्चार्यं मस्तकाच्चरणावधि वामाङ्गे । मूलमुच्चार्य मस्तकात् पादान्तम् । मूलमुच्चार्य पादादि शिरोऽन्तम् । इति नवमो मूलव्यापको देवताप्राप्तिकृन्न्यासो येन साधको देववद्भवेत् ।

अथ दशमः षडङ्गन्यासः ।

मूलमुच्चार्य हृदयाय नमः । मूलमु० शिरसे स्वाहा । मूलमु० शिखायैवषट् । मूलमु० कवचाय हुम् । मूलमु० नेत्रत्रयाय वौषट् । मूलमु० अस्त्राय फट् । इति दशमस्त्रैलोक्यवशकृन्न्यासः ।

अथैकादशन्यासः ।

१–खड्गिनी शूलिनी० । २–सौम्या सौम्यतरा० । ३–यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु० ४–यया त्वया० । ५–बिष्णुः शरीर० । आद्यं वाग्वीजं ऐं श्यामवर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ।

१–शूलेन० । २–प्राच्यां रक्ष । ३–सौम्यानि यानि० । ४–खड्गशूलगदादीनि० । द्वितीयं मायाबीजं ह्रीं बालार्क वर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् ।

१–सर्वस्वरूपे० । २–एतत्ते वदनं० । ३–ज्वालाकराल० । ४–हिनस्ति दैत्य० । ५–असुरासृग्वसा० । तृतीयं कामबीजं क्लीं स्फटिकाभासं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसेत् । इति सर्वानिष्टहरः सर्वाभीष्टदश्चैकादशो न्यासः ।

॥ इत्येकादशन्यासविधिः ॥

एवं एकादशन्यासान् कृत्वा गणपतिं ध्यात्वा देव्याः दक्षिणे घृतदीपं वामे तैलदीपं प्रज्वाल्य ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिः, इत्यनेन संपूज्य प्रार्थयेत्—

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरोभव ॥
ततः शरीर शुद्धयर्थं स्वदेहे न्यासान् कुर्यात् ।

ॐ हिरण्यवर्णाम्०	वामकरे ।
ॐ ताम्मऽआवह०	दक्षकरे ।
ॐ आश्वपूर्वांरथ०	वामपादे ।
ॐ कांसोस्मिताम्७	दक्षपादे ।
ॐ चन्द्रांप्रभासाम्०	वामजानौ ।
ॐ आदित्यवर्णे०	दक्षिणजानौ ।
ॐ उपैतुमाम्०	वामकटचाम् ।
ॐ क्षुत्पिपासाम्०	दक्षिणकटचाम् ।
ॐ गन्धद्वाराम्	नाभौ ।
ॐ मनसःकाम०	हृदि ।
ॐ कर्दमेनप्रजा०	कंठे ।
ॐ आपःसृजन्तु०	वामबाहौ ।
ॐ आर्द्रांपुष्करिणीम्०	दक्षिणबाहौ ।
ॐ आर्दांयःकरिणीम्०	मुखे ।
ॐ ताम्मऽआवहजात०	नेत्रयोः ।
ॐ यः शुचिः०	मूर्ध्नि ।

अथषडङ्गन्यासः

ॐ कर्दमेनप्रजा०	हृदयाय नमः ।
ॐ आपःसृजन्तु०	शिरसे स्वाहा ।
ॐ आर्द्रांपुष्करिणीम्०	शिखायैवौषट् ।
ॐ आर्द्रायःकरिणीम्०	कवचायहुम् ।
ॐ ताम्मऽआवह०	नेत्रत्रयायवौषट् ।
ॐ यःशुचिः०	अस्त्रायफट् ।

इतिषडङ्गन्यासः

अथ देवो पूजने कलशस्थापनप्रयोगः

ध्यानम्

ॐ अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा,
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः,
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रोः श्रियै नः॥

तद्यथा—स्ववामभागे बिन्दुत्रिकोण षट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यन्त्रं विलिख्य अक्षतैः पूजयेत्—

मध्ये मूलमुच्चार्य। त्रिकोणे त्रिपदैः—ऐं ह्रीं क्लीं। चामुण्डायै। विच्चेनमः। एवं त्रिपदस्य द्विरावृत्या षट्कोणेषु। **मातृकयावृत्तम्**—अं आं इत्यारभ्य क्षान्तम्। **चतुरस्रे षडङ्गानिकुर्यात्**—आग्नेये—ऐं हृदयाय नमः। ऐशाने—ह्रीं शिरसे०। नैर्ऋत्ये—क्लीं शिखायै०। वायव्ये—चामुण्डायै कवचाय०। मध्ये—विच्चे नेत्रत्रयाय०। चतुर्दिक्षु—मूलेन-अस्त्रायफट्। एवं यन्त्रं सम्पूज्य हुं इत्यनेन आधारं प्रक्षाल्य मूलेन स्थापनं कुर्यात्। ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवताकलशपात्राधाराय नमः, इत्यनेन आधारं सम्पूज्य वह्नेर्दशकलाः, पूजयेत्—

१—ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः। २—ॐ ॐ रं ऊष्मायै०। ३—ॐ लं ज्वलिन्यै०। ४—ॐ वं ज्वालिन्यै०। ५—ॐ शं विस्फुंलिगिन्यै०। ६—ॐ षं सुश्रियै०। ७—ॐ सं सुखपायै०। ८—ॐ हं कपिलायै०। ९—ॐ लं हव्यवाहायै०। १०=ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः। इति सम्पूज्य हुं फट् इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य द्वादशकलात्मने सूर्यमन्डलाय श्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवताकलशपात्राय नमः, इति नाममन्त्रेण संपूज्य ततः सूर्यस्य द्वादशकलाः पूजयेत्—

१—ॐ कं भं तपिन्यै नमः। २—ॐ खं बं तापिन्यै०। ३—ॐ गं फं धूम्रायै०। ४=ॐ घं पं मरिच्यै०। ५—ॐ ङं नं ज्वालिन्यै०। ६—ॐ

चं घं रुच्यै० । ७—ॐ छं दं सुषुम्णायै० । ८—ॐ जं थं भोगदायै० । ॐ झं तं विश्वायै० । १०—ॐ ञं णं बोधिन्यै० । ११—ॐ टं ढं धारिण्यै० । १२—ॐ ठं डं क्षमायै० । इति संम्पूज्य । ततो विलोममातृकया कलशे शुद्धजलमापूरयेत् । तद्यथा—ॐ क्षं लं हं … इत्यारभ्य आं अं, इत्यन्तया । गालिनी मुद्रया कलशं निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवता कलशामृताय नमः, इति संपूज्य तत्र चन्द्रस्य षोडशकलाः पूजयेत्—

१—ॐ अं अमृतायै० । २—ॐ आं मानदायै० । ३—ॐ इं पूषायै० । ४—ॐ ईं पुष्ट्यै० । ५—ॐ उं तुष्ट्यै० । ६—ॐ ऊँ रत्यै० । ७—ॐ ऋं धृत्यै० । ८—ॐ ॠं शशिन्यै० । ९—ॐ लृं चन्द्रिकायै० । १०—ॐ लॄं कान्त्यैं० । ११—ॐ एं ज्योत्स्नायै० । १२—ॐ ऐं श्रियै० । १३—ॐ ओं प्रीत्यै० । १४—ॐ औं अङ्गदायै० । १५—ॐ अं पूर्णायै० । १६—ॐ अः पूर्णाम्रतायै० । इति सम्पूज्य । फट्, इति संरक्ष्य मूलमन्त्रेण देवीमावाह्य आवाहनादि दशमुद्राः[1] पुरतः प्रदर्शयेत् तद्यथा—मूलेन-दुर्गेदेवि आवाहिता भव । मूल० दुर्गेदेवि स्थापिता भव । मूल० दुर्गेदेवि० संनिहिता भव । मूल० दुर्गेदेवि सन्निरुद्धा भव । मूल० दुर्गेदेवि संमुखीकृता भव । षडङ्गेन दुर्गेदेवि सकलीकृता भव[2] । मूलमुच्चार्य हृदयाय नमः, इत्यादिना । मूलेन दुर्गेदेवि अवगुंठिता भव । मूल० दुर्गेदेवि अमृती कृता भव । मूल० दुर्गेदेवि परमीकृता भव । योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

---

१. दशमुद्राः—हस्ताभ्यामञ्जलिं बध्वाऽनामिकामूलपर्वणि ।
अंगुष्ठौ निःक्षिपेत्सेयं मुद्रात्वावाहनीमता ॥
अधोमुखीकृता सैव स्थापनीति निगद्यते ।

२. देवांगेषु षडंगानां न्यासः स्यात् सकलीकृतिः ।

अथ श्रीसूक्तेन पूजाक्रमः

ध्यानम्

ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥
सर्वतीर्थमयंवारि सर्वदेवसमन्वितम् ।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवि गणैः सह ॥
दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ।
बलिपूजां गृहाण त्वं अष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥
शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभासने ।
मम देवि वरं देहि सर्वैश्वर्यप्रदायिनि ॥
एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ।
आवाह्याम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥

१.	ॐ हिरण्यवर्णाम्०	ॐ महालक्ष्म्यै नमः ध्यायामि
२.	ॐ ताम्मऽआवह०	ॐ महालक्ष्म्यै० आवाहयामि
३.	ॐ अश्वपूर्वाम्०[1]	ॐ महालक्ष्म्यै० आसनं सम०
४.	ॐ काँसोस्मिताम्०	ॐ महा० नमः पादयोः पाद्यं सम०
५.	ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०	ॐ महा० नमः हस्तयोरर्घं सम०
६.	ॐ आदित्यवर्णे०	ॐ महा० स्नानं सम०
७.	ॐ उपैतुमाम्०	ॐ महा० वस्त्रं सम०
८.	ॐ क्षुत्पिपासा०	ॐ महा० यज्ञोपवीतं कंचुकीमाभूषणं च सम०
९.	गन्धद्वाराम्०	ॐ महा० गन्धं सम०
१०.	ॐ मनसः काममा०	ॐ महा० पुष्पाणि सम०
११.	ॐ कर्दमेन प्रजा०	ॐ महा० धूपं सम०
१२.	ॐ आपः स्रजन्तु०	ॐ महा० दीपं सम०

---

१. पूर्णाम् इत्यपि पाठो दृश्यते ।

१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्० ॐ महा० नैवेद्यं सम०
१४. ॐ आर्द्रां यः करिणीम्० ॐ महा० ऋतु फलं सम०
[ताम्बूलपत्रं पूगफलञ्च]
१५. ॐ तां मऽ आवह० ॐ महा० दक्षिणा सम०
१६. ॐ यः शुचिः० ॐ महा० प्रदक्षिणां सम०

ततो नीराजनारार्तिक्यं पुष्पांजलिं च दत्वा साष्टांगं प्रणमेत् ।

प्रार्थयेत्—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मयादेवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ १ ॥
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ।
यशो देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ २ ॥
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥
दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनी ।
पूजयामि सदाभक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥ ४ ॥
भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि ।
देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्षण मां सदा ॥ ५ ॥
रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ ६ ॥

इति श्रीसूक्तेन पूजाक्रमः ।

अथ दुर्गादेव्याः पीठपूजा

आचम्य प्राणानायाम्य स्वदेहै पीठशक्ति विन्यस्य स्वयं देवरूपः सन् हस्ते अक्षतानादाय—ॐ पूर्वपीठाय नमः। ॐ पं पूर्णपीठाय नमः। ॐ कं कामपीठाय नमः। प्राच्यां दिशि—ॐ उं उड्यानपीठाय०। आग्नेय्यां—ॐ मां मातृपीठाय०। दक्षिणे—ॐ जं जालंधरपीठाय०। नैऋत्ये—ॐ कं कोल्हापुरपीठाय०। पश्चिमे—ॐ पूं पूर्णगिरिपीठाय०। वायव्याम्—ॐ सौं सौहारोपपीठाय०। उत्तरे—ॐ कं कोल्हागिरि-पीठाय०। ऐशान्याम्—ॐ कं कामरूपपीठाय०।

इति पीठं सम्पूज्य नमस्कारान् कुर्यात्। यथा—दक्षिणे०—ॐ गुरवे नमः। परमगुरवे०। परमेष्ठिगुरवे०। ॐ गुरुपंक्तये०। माता-पितृभ्यां०। उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो०। वामे—ॐ गं गण-पतये०। ॐ दुं दुर्गायै०। ॐ सं सरस्वत्यै०। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय०। इति सर्वान्नत्वा पीठदेवताः स्थापयेत्—पीठमध्ये—१. ॐ मं मण्डू-काय नमः। २. ॐ आं आधारशक्त्यै०। ३. ॐ मूं मूलप्रकृत्यै०। ४—ॐ कं कालाग्निरुद्राय०। ५. ॐ आं आदिकूर्माय०। ६—ॐ अं अनन्ताय०। ७. ॐ आं आदिवराहाय०। ८. पृं पृथिव्यै०। ९. अं अमृतार्णवाय०। १० ॐ रं रत्नद्वीपाय०। ११. ॐ हं हेमगिरये०। १२. ॐ नं नन्दनोद्यानाय०। १३. ॐ कं कल्पवृक्षाय०। १४. ॐ मं मणिभूतलाय०। १५. ॐ दं दिव्यमण्डपाय०। १६. ॐ सं स्वर्णवेदि-कायै० १७. रं रत्नसिंहासनाय०। १८. ॐ धं धर्माय०। १९ ॐ ज्ञां ज्ञानाय०। २०. वैं वैराग्याय०। २१. ॐ ऐं ऐश्वर्याय०। इति सम्पूज्य—पूर्वे—२२. अं अनैश्वर्याय०। मध्ये—२३. सं सत्वाय०। २४. ॐ प्रं प्रबोधात्मने०। २५. ॐ रं रजसे०। २६. ॐ प्रं प्रकृत्या-त्मने०। २७. ॐ तं तमसे०। २८. ॐ मं मोहात्मनें०। २९. ॐ सों सोममण्डलाय०। ३०. ॐ सूं सूर्यमण्डलाय०। ३१. ॐ वं वह्निमण्डलाय०। ३२. ॐ मां मायातत्वाय०। ३३. ॐ विं विद्या-

तत्त्वाय० । ३५. ॐ ब्रं ब्रह्मणे० । ३६. ॐ मं महेश्वराय० । ३७. ॐ आं आत्मने० । ३८. ॐ अं अनन्तरात्मने० । ३९. ॐ पं परमात्मने० । ४१. ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने० । ४२. ॐ कं कन्दाय० । ४३. ॐ नं नालाय० । ४४. ॐ पं पद्माय० । ४५. ॐ मं महापद्माय० । ४६. ॐ रं रत्नेभ्यो० । ४७. ॐ कं केसरेभ्यो० । ४८. ॐ कं कर्णिकायै० ।

अथ नवशक्तीः स्थापयेत्

तद्यथा—प्राच्याद्यष्टदिक्षु—१. ॐ नन्दायै नमः । २. ॐ भगवत्यै० । ३. ॐ रक्तदन्तिकायै० । ४. ॐ शाकम्भर्यै० । ५. ॐ दुर्गायै० । ६. ॐ भीमायै० । ७. ॐ कालिकायै० । ८. ॐ भ्रामर्यै० । मध्ये—९. ॐ शिवदूत्यै० ॥ ९ ॥ इत्येवं नवशक्तीः संस्थाप्य यथाशक्ति शक्तिसहितपीठदेवताः पूजयेत् ।

इति पीठपूजा
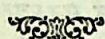
अथ यन्त्रदेवता स्थापनम्

हस्तेऽक्षतानादाय–बिन्दुमध्ये––ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिणी श्रीत्रिगुणात्मिका-दुर्गादेवतायै नमः श्री महाकाली० दुर्गादेवतामावा० । बिन्दोः समन्तात् गुरुचतुष्टयमावाहयेत्––१. गुरवे नमः गुरुमावा० । २. ॐ परात्परगुरवेनमः परात्पर गुरुमावा० । ३. ॐ परमेष्ठिगुरवे० परमेष्टिगुरुमा० । ४. ॐ गुरुपंक्तये नमः गुरुपंक्तिमावा० । षडङ्गम्–ॐ ऐं हृदयाय० । २. ॐ ह्रीं शिरसे० । ३. ॐ क्लीं शिखायै० । ४. ॐ चामुण्डायै० कवचाय० । ५. ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय० । ३. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अथ त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्यक्रमेण ।

१. ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः । २. ॐ श्रिया सह विष्णवे० । ३. ॐ उमया सह शिवाय० । दक्षिणे––४. ॐ हुं सिंहाय० । वामे-५. ॐ हुं महिषाय० । षट्कोणे––दिक्षु विदिक्षु मध्ये च । ६. ॐ ऐं नन्दजायै० । ७. ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै० । ८. ॐ क्लीं शाकम्भर्यै० । ९. ॐ दुं दुर्गायै० । १०. ॐ हुं भीमायै० । ११. ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै० । १३. ॐ क्लीं कौमार्यै० । १४. ॐ ह्रीं वैष्णव्यै० । १५. ॐ हुं वाराह्यै० । १६. ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै० । १७. ॐ लं ऐन्द्र्यै० । १८. ॐ स्फ्यूं चामुण्डायै० । ततश्चतुर्विंशतिदले । १९. ॐ विं विष्णुमायायै । २०. ॐ चें चेतनायै० । २१. ॐ बुं बुद्ध्यै० । २२. ॐ निं निद्रायै० । २३. ॐ क्षुं क्षुधायै० । २४. ॐ छां छायायै० । २५. ॐ शं शक्त्यै० । २६. ॐ तृं तृष्णायै० । २७. ॐ क्षां क्षान्त्यै० । २८. ॐ जां जात्यै० । २९. ॐ लं लज्जायै० । ३०. शां शान्त्यै० ।

३१. श्रं श्रद्धायै० । ३२. ॐ कां कान्त्यै० । ३३. ॐ लं लक्ष्म्यै० । ३४.ॐ धृं धृत्यै० । ३५. ॐ वृं वृत्यै० । ३६. ॐ श्रु श्रुत्यै० । ३७. ॐ स्मृं स्मृत्यै० । ३८. ॐ दं दयायै० । ३९. ॐ तु तुष्ट्यै० । ४०. ॐ पुं पुष्ट्यै० । ४१. ॐ मां मातृभ्यो० । ४२. ॐ भ्रां भ्रान्त्यै० । **भूपुरे आग्नेयादि कोणेषु ।** ४३. ॐ गं गणपतये० । ४४. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय० । ४५. ॐ वं बटुकाय० । ४६. ॐ यां योगिन्यै० । **प्राच्यादिदिक्षु ।** ४७. ॐ इन्द्राय० । ४८. ॐ अग्नये० । ४९. ॐ यमाय० । ५०. ॐ निर्ऋतये० । ५१. ॐ वरुणाय० । ५२. ॐ वायवे० । ५३. ॐ सोमाय० । ५४. ॐ ईशानाय० । ५५. ॐ ब्रह्मणे० । ५६. ॐ अनन्ताय० । **तद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ।** ५७. ॐ वज्राय० । ५८. ॐ शक्तये० । ५९. ॐ दण्डाय० । ६०. ॐ खड्गाय० । ६१. ॐ पाशाय० । ६२. ॐ अंकुशाय० । ६३. ॐ गदायै० । ६४. ॐ त्रिशूलाय० । ६५. ॐ पद्माय० । ६६. ॐ चक्राय० । **भूपुराद्बहिः ।** ६७. ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै० । ६८. ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै० । ६९. दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै० । ७०. ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै० । ७१. ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै० । ७२. ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीवेव्यै० । ७३. ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढाये यक्षिणीदेव्यै० । ७४. ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० । ७५. ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै० । ७६. ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः । इत्येवभावाह्य "ॐ यन्त्रदेवताभ्यो नमः" दति मूलमन्त्रेण ययाशक्ति पूजनं कुर्यात् ।

॥ इति यन्त्रदेवतानामावाहनं स्थापनं च समाप्तम् ॥

अथ देवीध्यानम्

विद्युद्दाम० इति ध्यात्वा हस्ते पुष्पाण्यादाय:—

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिपातिनि।
पूजां गृहाण सुमुखी नमस्ते शङ्करप्रिये॥
सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विता।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठदेवगणैः सह॥
दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
वलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह॥
कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्तशक्ति संपन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ अम्बेऽअम्बिके० महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरुपिणि त्रिगुणात्मिके दुर्गे देवि ! आवाहिताभव। दुर्गे देवि स्थापिताभव। दुर्गे० सन्निहिताभव। दुर्गे० सन्निरुद्धाभव। दुर्गे० संमुखीकृताभव। दुर्गे० सकलीकृता भव। दुर्गे० अवगुण्ठिता भव। दुर्गे० परमीकृता भव। दुर्गे० अमृतीकृता भव। दुर्गे० प्रार्थिताभव। दुर्गे० नमस्कृता भव ॐ मनोजूतिः० दुर्गेदेवि सुप्रतिष्ठा भव। दुर्गे देवि वरदा भव।

श्रीसूक्तेनन्यासाः

१—ॐ हिरण्यवर्णाम्०	वामकरे
२—ॐ ताम्मऽआवह०	दक्षकरे
३—ॐ अश्वपूर्वाम्०	वामपादे
४—ॐ कांसोस्मिताम्०	दक्षपादे
५—ॐ चन्द्रां प्रभासाम्	वामजानौ
६—ॐ आदित्यवर्णे०	दक्षजानौ
७—ॐ उपैतुमाम्०	वामकुक्षौ

८—ॐ क्षुत्पिपासाम्०	दक्षकुक्षौ
९—ॐ गन्धद्वाराम्०	नाभौ
१०—ॐ मनसः काम०	हृदि
११—ॐ कर्दमेन प्रजा०	वामबाहौ
१२—ॐ आपः सृजन्तु०	दक्षबाहौ
१३—ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०	कण्ठे
१४—ॐ आर्द्रां यः करिणीम्०	मुखे
१५—ॐ ताम्मऽआवह०	नेत्रे
१६—ॐ यः शुचिः०	शिरसि

इति न्यासाः

ततः कलशोपरि स्वर्णमयीं श्रीदुर्गादेव्याः प्रतिमां अग्न्युत्तारण-पूर्वकं सन्निधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैर्यथोप-चारैर्वा संपूजयेत् । तद्यथा—

अग्न्युत्तारणम्

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य अस्याः स्वर्णमयी श्रीदुर्गाप्रतिमायाः घटनादिदोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठामहं करिष्ये । मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धमिश्रितजलधारां पातयेत्—ॐ समुद्रस्यत्त्वा० । हिमस्यत्त्वा० । उपज्मन्नुप० । अपामिदम्० । अग्नेपावक० । सनःपावक० । पावकया० । नमस्ते हरसे० । नृषदे-त्वेट्० । ये देवादेवानाम्० । ये देवादेवेष्वधि० । प्राणदाऽअपानदा० । ततः प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्—

ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आंबीजम् ह्रीं शक्तिः क्रों कील-कम् श्रीजगदम्बिका दुर्गादेवीप्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहम् अस्माः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः प्राणाः = इह प्राणाः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं ल वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोऽहम् अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः जीव इहस्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोऽहम् अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ मनोजूतिः०। ॐ एषवै प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति। इति प्राणप्रतिष्ठा।

गर्भाधानादि संस्कारसिद्धये षोडश प्रणवावृतिं कुर्यात्। ततो ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैर्देवीं संपूजयेत्।

अथ पूजोपक्रमः

ॐ स्ववामभागे पूजाकलशं संस्थाप्य ॐ इमम्मेवरुणेति मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य गायत्र्या दशवारमभिमन्त्र्य गंगेच यमुने० सर्वेसमुद्राः-सरितः० इति तीर्थान्यावाह्य कलशस्यमुखे० ततोऽक्षतैः सम्पूजयेत्— ॐ विष्णवे नमः। ॐ वरुणाय०। ब्रह्मणे०। मातृगणेभ्यो०। सागरेभ्यो०। सप्तद्वीपवसुन्धरायै०। ऋग्वेदाय०। यजुर्वेदाय०। सामवेदाय०। अथर्ववेदाय०! वेदाङ्गेभ्यो०। गायत्र्यै०। सावित्र्यै०। सरस्वत्यै०। इत्यावाह्य सम्पूजयेत्। ततः शंखं प्रक्षाल्य कलशोदकेन प्रपूर्य त्रिपादिकायां निधाय गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

पुरा त्वं सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते॥

ॐ पाञ्चजन्यायविद्महे पावमानायधीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात्। इत्येवं अभिमन्त्र्य देववामपार्श्वे निदध्यात्। स्ववामत आधारे घण्टां प्रक्षाल्य-निधाय घंटायै नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुरु घंटे रवंतत्र देवाबाहनलाच्छनम्॥

ततः शंखोदकेन पूजाद्रव्याणि आत्मानं भूमिं च सम्प्रोक्ष्य ॐ स्योनापृथिवीतिमन्त्रेण गन्धाक्षतपुष्पैः कर्मभूमिं सम्पूजयेत् ।

ततो देव्याः पीठस्य पुरतः चतुष्पादिकायां निधाय वस्त्रेणाच्छाद्य तत्र सूत्र्या नवकोष्ठान् विरच्य तत्र क्रमेण नवदेवता आवाहयेत्—तद्यथा—

१—ॐ विद्यायै नमः । २—ॐ अविद्यायै० । ३—ॐ प्रकृत्यै० । ४—ॐ मायायै० । ५—ॐ तेजस्विन्यै० । ६—ॐ प्रबोधिन्यै० । ७—ॐ सत्यै० । ८—रजसे० । ९—ॐ तमसे० । ततः कोष्ठेषु पाद्यपात्रं निधाय तदुत्तरत अर्घ्यपात्रं तदुत्तरत आचमनीयपात्रं च निधाय त्रीण्यपि जलेन प्रपूर्य गन्धपुष्पे प्रक्षिप्य तदुत्तरे मधुपर्कपात्रं स्थापयेत् । गायत्र्या पाद्यं, प्रणवेनार्घं, व्याहृतिभिराचमनीयपात्रं गायत्र्या-मधुपर्क पात्रं चाभिमन्त्र्य पूजा द्रव्याणि गायत्र्यभिमृशेत् ।

इति पूजोपक्रमः

अथ दुर्गादेव्याः पूजाप्रयोगः

आवाहनम्

ॐ हिरण्यवर्णाम्० ॐ नमोदेव्यैमहा० ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै सावरणायै भगवत्यै श्रीदुर्गा-देव्यै नमः—आवाहनार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ एहि दुर्गे महभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ।
आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥

आसनम्

ॐ तांमऽआवह० । ॐ नमोदेव्यै० । ॐ साङ्गायै सपरिवा० सायु० सश० सवा० साव० श्रीदुर्गा० नमः आसना० अक्षतपु० सम० ।

ॐ नाना प्रभासमाकीर्णं नानावर्णं विचित्रितम् ।
आसनं कल्पितं देवि प्रीत्यर्थं तव गृह्यताम् ॥

पाद्यम्

ॐ अश्वपूर्वाम्०। ॐ नमो देव्यै०। ॐ साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सबा० साव० भग० श्रीदुर्गादि० नमः पादयोः पाद्यं समर्प०।

ॐ इदं श्यामाकदूर्वाब्जविष्णुक्रान्ता समन्वितम्।
पाद्यं गृहाण देवेशि तीर्थतोयैः प्रकल्पितम्॥

अर्घः

ॐ कांसोस्मिताम्०। ॐ नमोदेव्यै०। ॐ साङ्गायै० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः–हस्तयोः अर्घं सम०।

गन्धपुष्पाक्षतयवकुशाग्रतिलसर्षपैः।
दूर्वाभिश्च समायुक्त एषोऽर्घः प्रतिगृह्यताम्॥

आचमनीयम्

ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०। ॐ नमो देव्यै०। ॐ साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः–आचमनीयं सम०।

जातीलवङ्गकङ्कोल कर्पूरादिसुवासितम्।
गृहाण देवदेवेशि एतदाचमनीयकम्॥

मधुपर्कः

ॐ मधुव्राताऽऋता०। ॐ नमोदेव्यै०। ॐ साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः मधुपर्कं निवेदयामि।

दधिमधुघृतसमायुक्तं पात्रयुग्म समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने॥

पुनराचमनीयम्

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्यस्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्मैते पुनराचमनीयकम्॥

ॐ साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः—पुनराचमनीयकं सम० ।

स्नानम्

ॐ आदित्यवर्णे० । ॐ नमोदेव्यै० । ॐ साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः—स्नानीयं जलं सम० ।

पञ्चामृतस्नानम्

तत्रादौ पयस्नानम्——

ॐ पयः पृथिव्याम्० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्री दुर्गा० नमः पयः स्नानं सम० ।

ॐ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

[शुद्धोद० स्ना०]

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो० । ॐ नमोदेव्यै० साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः दधि स्नानं सम० ।

ॐ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयादेवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

[शुद्धोद० स्ना०]

घृतस्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै० नमः घृतस्नानं सम० ।

ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

[शुद्धोद० स्ना०]

मधुस्नानम्

ॐ मधुव्वाता० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भग० श्रीदुर्गा० नमः—मधु स्नानं सम० ।

ॐ तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

[शुद्धोद० स्ना०]

शर्करास्नानम्

ॐ अपाᳩं रस० । ॐ नमोदेव्यै० साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः शर्करास्नानं सम० ।

ॐ इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

[शुद्धोद० स्ना०]

मिश्रितपञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्चनद्यः० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः मिश्रित-पञ्चामृतस्नानं सम० तदन्ते शुद्धोद० स्ना० सम० ।

सुगन्धोदकस्नानम्

ॐ गन्धद्वाराम्० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः सुगन्धोदकस्नानं सम० । तदन्ते शुद्धोद० स्ना० सम० ।

उद्द्वर्त्तनस्नानम्

ॐ अठं. शुनाते० । ॐ नमोदेव्यै० साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः । उद्वर्त्तनस्नानं सम० ।

ॐ तिलतैलसमायुक्तं सुगन्धिद्रव्यनिर्मितम् ।
उद्वर्त्तनमिदं देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवाल:० । ॐ नमोदव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः शुद्धोदकस्नानं सम० ।

ततो मूलमन्त्रेण पञ्चोपचारैः सम्पूज्य उत्तरे निर्माल्यमुत्सृज्य पुनः संपूज्य श्रीसूक्तमन्त्रैः शंखोदकेन महाभिषेकं कुर्यात् । तदन्ते पुनः शुद्धोदकेन स्नापयेत् ।

वस्त्रम्

ॐ उपैतुमाम्० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः० वस्त्रोपवस्त्रे सम० वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं सम० ।

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोदेवानाम्० । ॐ नमोदेव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः यज्ञोपवीतं सम० । तदन्ते आच० सम० ।

ॐ स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरी ! ॥

केशपाशादिसौभाग्यसूत्रम्

ॐ सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्णमणिसंयुते ।
कंठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः सौभाग्यसूत्रं सम० ।

उपवस्त्रम् [कञ्चुकी]

ॐ क्षुत्पिपासा० । ॐ नमोदेव्यै० ।
ॐ कञ्चुकी मुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मयादत्तं शङ्करप्राणवल्लभे ॥

साङ्गा॰ सपरि॰ सायु॰ सश॰ सबा॰ साव॰ भग॰ श्रीदुर्गा॰ कञ्चु॰ उप सम॰ ।

अलङ्काराः

अलङ्कारान् महादिव्यान् नानारत्नसमन्वितान् ।
गृहाण देवमातस्त्वं प्रसीद परमेश्वरी ॥

साङ्गा॰ सपरि॰ सायु॰ सश॰ सवा॰ साव॰ भगवत्यै॰ श्रीदुर्गा॰ नमः नानालङ्कारान् सम॰ ।

सौवीरकुंकुमकज्जलादिकम्

ॐ नमोदेव्यै॰ । साङ्गा॰ सपरि॰ सायु॰ सश॰ सवा॰ साव॰ भगवत्यै श्रीदुर्गा॰ नमः सौवीरकुंकुमकज्जलादिकं सम॰ ।

कुंकमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी कामसंभवम् ।
कुंकमेनार्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥
सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
पूजितासि मया देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥
चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम् ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥

गन्धः

ॐ गन्धद्वाराम्॰ । ॐ नमो देव्यै॰ । साङ्गा॰ सपरि॰ सायु॰ सश॰ सवा॰ साव॰ भगवत्यै श्रीदुर्गा॰ नमः गन्धानुलेपनं सम॰ ।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

अक्षताः

ॐ अक्षन्नमी॰ । ॐ नमो देव्यै॰ । साङ्गा॰ सपरि॰ सायु॰ सश॰ सवा॰ साव॰ भगवत्यै श्रीदुर्गा॰ नमः अक्षतान् सम॰ ।

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् ।
गृहाणेमान् महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥

पुष्पाणि

ॐ मनसः काम० । ॐ नमो देव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः पुष्पाणि सम० ।

मंदार पारिजातानि पाटलीपंकजान्यपि ।
जातीचंपकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥

विल्वपत्राणि

ॐ नमोबिल्मिनेच० । ॐ नमो देव्यै० ।

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ! ॥

सौभाग्यद्रव्याणि

ॐ अहिरिवभो० । ॐ नमो देव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः सौभाग्यद्रव्याणि सम० ।

हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वरि ! ॥

सुगन्धिद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकम् । ॐ नमो देव्यै० । साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगत्यै श्री दुर्गा० नमः सुगन्धिद्रव्यं सम० ।

चन्दनागरुकर्पूरं कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपयेत् ॥

[अतः परमावरणपूजनम्]

अथ दुर्गादेव्या अङ्गपूजा

ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि । ॐ ह्रीं मङ्गलायै० गुल्फौ पूज० । ॐ ह्रीं भगवत्यै० जंघे पूज० । ॐ ह्रीं कौमार्यै० जानुनी पूज० । ॐ वागीश्वर्यै० उरू पूज० । ॐ वरदायै० कटी पूज० । ॐ

ह्रीं पद्माकरवासिन्यै० स्तनौ पूज० । ॐ ह्रीं महिषमर्दिन्यै० कण्ठं पूज० । ॐ ह्रीं उमासुतायै० स्कन्धौ पूज० । ॐ ह्रीं इन्द्राण्यै० भुजौ पू० । ॐ ह्रीं गौर्यै० हस्तौ पूज० । ॐ ह्रीं मोहवत्यै० मुखं पूज० । ॐ ह्रीं शिवायै० कर्णौ पूज० । ॐ ह्रीं अन्नपूर्णायै० नेत्रे पूज० । ॐ ह्रीं कमलायै० ललाटं पूज० । ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै० सर्वाङ्गं पूजयामि । ॐ देव्या दक्षिणे सिंहं पूज० । ॐ देव्या वामे महिषं पूजयामि ।

॥ इत्यङ्गपूजा ॥

अथावरणपूजा

श्री दुर्गादेव्याः सकाशादनुज्ञाग्रहणम् :—

प्रार्थना—सच्चिन्मयपरेदेवि परामृतचरुप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥

एकस्मिन् पूजापात्रे गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय दक्षिणेन पाणिना ज्ञानमुद्रया पूजनं कुर्यात् :—

[१] प्रथमावरणम्—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतो श्रीपादुकां पूजयामि नमः । २. ॐ ऐं ह्रीं० विच्चे साङ्गा० सप० साव० सायु० सश० सवा० यै महालक्ष्म्यै० महालक्ष्मी श्रीपा० । ४. ॐ ऐं ह्रीं० विच्चे साङ्गा० सप० साव० सायु० सश० सवा० यैं महासरस्वत्यै० महासरस्वती श्रीपा० । **विन्दोः परतः गुरुचतुष्टयं पूजयेत्**—ॐ गुरवे नमः । गुरुशक्ति श्रीपा० ५. ॐ परमगुरवे० परमगुरु शक्ति श्रीपा० । ६. ॐ परात्परगुरवे परात्परगुरुशक्ति श्रीपा० । ७—ॐ परमेष्ठिगुरवे० परमेष्ठिगुरुशक्ति श्रीपा० । ८—**देव्याः षडङ्गं पूजयेत्**—ॐ ऐं हृदयाय० हृदयशक्ति श्रीपा० । ९. ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरः शक्ति श्रीपा० । १०. ॐ

क्लीं शिखायै० शिखा शक्ति श्रीपा० । ११. ॐ चामुण्डायै० कवचाय० कवचशक्ति श्रीपा० । १२. ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय० नेत्रशक्ति श्रीपा० । १३. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय० अस्त्रशक्ति श्रीपा० । १४. प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्ष० स० । पुष्पाञ्जलिमादाय--

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥
अर्पणम् अनया पूजया प्रथमावरणदेवताः प्रीयन्ताम् नमम ।

[२] **द्वितीयावरणम्**--त्रिकोणे स्वपुरतः प्रादक्षिण्येन पूजयेत्--
१५. ॐ सावित्र्या सह विधात्रे० विधातृशक्ति श्रीपा० । १६. ॐ श्रिया सह विष्णवे० विष्णुशक्ति श्रीपा० । १७. ॐ उमया सह शिवाय० शिवशक्ति श्रीपा० । १८. ॐ क्षुं नमः सिंहाय० सिंहशक्ति श्रीपा० । १९. ॐ हुं नमः महिषाय० महिषशक्ति श्रीपा० । २०. द्वितीयावरणदेवताभ्यो० सर्वोप० सम० । पुष्पाञ्जलिमादाय--ॐ अभीष्ट० । भक्त्या० द्वितीया० ॥ २ ॥ अर्प० अनया० नमम ।

[३] **तृतीयावरणम्**--षट्कोणे विदिक्षु दिक्षु मध्ये च पूजयेत्--
२१. ॐ ऐं नन्दजायै० नन्दजा शक्तिश्रीपा० । २२. ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै० रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपा० । २३. ॐ क्लीं शाकम्भर्यै० शाकम्भरीशक्तिश्रीपा० । २४. ॐ दुं दुर्गायै० दुर्गाशक्तिश्रीपा० । २५. ॐ हुं भीमायै० भीमाशक्तिश्रीपा० । २६. ॐ भ्रामर्यै० भ्रामरीशक्तिश्रीपा० । ॐ तृतीयावरणदेवताभ्यो० सर्वोप० गन्धा० सम० । पुष्पाञ्जलिमादाय--ॐ अभीष्ट० ॥ भक्त्या० तृतीयावरणार्चनम् ॥ ३ ॥ अर्प०--अनया० तृतीयाव० नमम ।

[४] **चतुर्थावरणम्**--ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत्--२७. ऐं ब्राह्म्यै० ब्राह्मीशक्तिश्रीपा० । २८. ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै० माहेश्वरीशक्तिश्रीपा० । २९. ॐ क्लीं कौमार्यै० कौमारीशक्तिश्रीपा० । ३०. ॐ ह्रीं वैष्णव्यै० वैष्णवीशक्तिश्रीपा० । ३१. ॐ लृं

वाराह्यै० वाराहीशक्तिश्रीपा०। ३२. ॐ क्ष्यों नारसिंह्यै० नारसिंहीशक्तिश्रीपा०। ३३. ॐ लं ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीशक्तिश्रीपा०। ३४. ॐ स्व्यें चामुण्डायै० चामुण्डाशक्तिश्रीपा०। ३५. ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै० लक्ष्मीशक्तिश्रीपा०। चतुर्थावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम०। पुष्पाञ्जलिमादाय—अभीष्ट० भक्त्या० चतुर्थावरणार्चनम् ॥ ४ ॥ अर्प० अनया० न मम।

[५] पञ्चमावरणम्—चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन। ३६. ॐ विं विष्णुमायायै० विष्णुमायाशक्तिश्रीपा०। ३७. ॐ चें चेतनायै० चेतनाशक्तिश्रीपा०। ३८. ॐ वुं बद्धयै० बुद्धिशक्तीश्रीपा०। ३९. ॐ निं निद्रायै० निद्राशक्तिश्रीपा०। ४०. ॐ क्षुं क्षुधायै०क्षुधाशक्तिश्रीपा०। ४१. ॐ छां छायायै० छायाशक्तिश्रीपा०। ४२. ॐ शं शक्त्यै० शक्तिश्रीपा०। ४३. ॐ तृं तृष्णायै० तृष्णाशक्तिश्रीपा०। ४४. ॐ क्षां क्षान्त्यै० क्षान्तिशक्तिश्रीपा०। ४५. ॐ जां जात्यै० जातिशक्तिश्रीपा०। ४६. ॐ ल लज्जायै० लज्जाशक्तिश्रीपा०। ४७. ॐ शां शान्त्यै० शान्तिशक्ति श्रीपा०। ४८. ॐ श्रं श्रद्धायै० श्रद्धाशक्तिश्रीपा०। ४९. ॐ कां कान्त्यै० कान्तिशक्ति श्रीपा०। ५० ॐ लं लक्ष्म्यै० लक्ष्मीशक्ति श्रीपा०। ५१. ॐ धृं धृत्यै० धृतिशक्तिश्रीपा०। ५२. ॐ वृं वृत्यै० वृत्तिशक्ति श्रीपा०। ५३. ॐ श्रुं श्रुत्यै० श्रुतिशक्तिश्रीपा०। ५४. ॐ स्मृं स्मृत्यै० स्मृतिशक्ति श्रीपादुकां पू०। ५५. ॐ दं दयायै० दयाशक्तिश्रीपा०। ५६. ॐ तुं तुष्टयै० तुष्टिशक्तिश्रीपा०। ५७. ॐ पुं पुष्टयै० पुष्टिशक्ति श्रीपा०। ५८. ॐ मां मातृभ्यो० मातृशक्तिश्रीपादुका पू०। ५९. ॐ भ्रां० भ्रान्त्यै० भ्रान्तिशक्ति श्रीपा०। ६०. ॐपञ्चमावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम०। पुष्पाञ्जलिमादाय—ॐ अभीष्ट०। भक्त्या० पञ्चमावरणार्चनम् ॥ ५ ॥ अर्प० अनया० न मम।

[६] षष्ठावरणम्—भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य। ६१. ॐगं गणपतये० गणपतिशक्ति श्रीपा०। ६२. ॐ क्षं क्षेत्रपालाय० क्षेत्रपालशक्तिश्रीपा०। ६३. ॐ बं बटुकाय० बटुकशक्ति-

श्रीपा०। ६४. ॐ यां योगिन्यै० योगिनीशक्ति श्रीपा०।—षष्ठावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम०। पुष्पाञ्जलिमादाय—ॐ अभीष्ट०। भक्त्या० सुषष्ठावरणार्चनम् ॥ ६ ॥ अर्प० अनया० न मम।

[७] **सप्तमावरणम्**—प्राच्यादिदशदिक्षु। ६५. ॐ लं इन्द्राय० इन्द्रशक्ति श्रीपा०। ६६. ॐ रं अग्नये० अग्निशक्ति श्रीपा०। ६७. ॐ यं यमाय० यमशक्ति श्रीपा०। ६८. ॐ क्षं निर्ऋतये० निर्ऋतिशक्ति श्रीपा०। ६९. ॐ वं वरुणाय० वरुणशक्ति श्रीपा०। ७०. ॐ यं वायवे० वायुशक्तिश्रीपा०। ७१. ॐ सं सोमाय० सोमशक्तिश्रीपा०। ७२. ॐ हं ईशानाय० ईशानशक्ति श्रीपा०। ७३. ॐ वं ब्रह्मणे० ब्रह्मशक्ति श्रीपा०। ७४. ॐ ह्रीं अनन्ताय० अनन्तशक्तिश्रीपा०। सप्तमावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम०। पुष्पाञ्जलिमादाय—ॐ अभीष्ट०। भक्त्या० सप्तमावरणार्चनम् ॥ ७ ॥ अर्प० अनया० न मम।

[८] **अष्टमावरणम्**—भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण। ७५. ॐ वं वज्राय० वज्रशक्तिश्रीपा०। ७६. ॐ शं शक्त्यै० शक्तिश्रीपा०। ७७. ॐ दं दण्डाय० दण्डशक्ति श्रीपा०। ७८. ॐ खं खड्गाय० खड्गशक्ति श्रीपा० ७९. ॐ पां पाशाय० पाशशक्ति श्रीपा०। ८०. ॐ अं अंकुशाय० अंकुशशक्ति श्रीपा०। ८१. ॐ गं गदायै० गदाशक्ति श्रीपा०। ८२. ॐ त्रि त्रिशूलाय० त्रिशूलशक्ति श्रीपा०। ८३. पं पद्माय० पद्मशक्ति श्रीपा०। ८४. ॐ चं चक्राय० चक्रशक्ति श्रीपा०—अष्टमावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम०। पुष्पाञ्जलिमादाय—ॐ अभीष्ट०। भक्त्या० अष्टमावरणार्चनम् अर्प० अनया० न मम ॥८॥

[९] **नवमावरणम्**—आधारकलशात् पूर्वादिक्क्रमेण। ८५. ॐ वज्रहस्तायै गजारुढायै कादम्बरी देव्यै० कादम्बरीदेवीशक्तिश्रीपा०। ८६. ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै० उल्कादेवीशक्ति श्रीपा०। ८७. ॐ दण्डहस्तायै महिषारुढायै करालीदेव्यै० करालीदेवीशक्ति श्रीपा०। ८८. ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै

रक्ताक्षीदेव्यै० रक्ताक्षीदेवीशक्ति श्रीपा० । ८९. ॐ पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै० श्वेताक्षीदेवीशक्ति श्रीपा० । ९०. ॐ अंकुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै० हरिताक्षीदेवीशक्ति श्रीपा० । ९१. ॐ गदाहस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणीदेव्यै० यक्षिणीदेवीशक्तिश्रीपा० । ९२. ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० कालीदेवीशक्तिश्रीपा० । ९३. ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै० सुरज्येष्ठादेवीशक्ति श्रीपा० । ९४. ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै० सर्पराज्ञीदेवीशक्ति श्रीपा० ।––नवमावरणदेवताभ्यो० सर्वो० गन्धा० सम० । पुष्पाञ्जलिमादाय––ॐ अभीष्ट० । भक्त्या० नवमावरणार्चनम् [समस्तावरणार्चनम्] ॐ नवमा [समस्ता] वरणदेवताभ्यों० सर्वोंपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । अर्प० अनया० न मम ।

॥ इति नवमावरणम् ॥

॥ इत्यावरणपूजा समाप्ता ॥

धूपः

ॐ कर्दमेन प्रजा० । ॐ नमो देव्यै० ।

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ! ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः धूपं सम० ।

दीपः

ॐ आपः स्रजन्तु० । ॐ नमो देव्यै० ।

साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं मया ।
दीपं गृहाण देवि त्वं त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः दीपं प्रदर्शयामि ।

नैवेद्यम्

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः नैवेद्यं निवेदयामि । ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय० ॐ व्यानाय० ॐ उदानाय० ॐ समानाय० ॐ ब्रह्मणे० आचमनीयं स० । मध्ये पानीयं स० उत्तरापोशनं स० हस्तप्रक्षनार्थे मुखप्र० आचमनीयं सम० ।

करोद्वर्त्तनम्

ॐ अठं. शुनाते० ॐ नमो देव्यै० ।

मलयाचलसम्भूतं कस्तुर्यादि समन्वितम् ।
करोद्वर्त्तनकं देवि ! गृहाण परमेश्वरि ! ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः करोद्वर्त्तनं चन्दनं सम० ।

ऋतुफलानि

ॐ या: फलिनी० । ॐ नमो देव्यै० ।

इदं फलं मयादेवि ! स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः ऋतुकालोद्भवानि फलानि सम० ।

पूगफलं ताम्बूलञ्च

ॐ आर्द्रां यः करिणीम्० । ॐ नमो देव्यै० ।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णं संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः मुखशुध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगफलञ्च सम० ।

दक्षिणाद्रव्यम्

ॐ ताम्मऽआवह० । ॐ नमो देव्यै० ।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः पूजासाद्गुण्यार्थं द्रव्यदक्षिणां सम० ।

प्रदक्षिणा

ॐ यः शुचिः । ॐ नमो देव्यै० ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः प्रदक्षिणां परितः करोमि ।

विशेषार्घः

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वरि ! ।
विशेषार्घं प्रयच्छामि पूर्णान्कुरु मनोरथान् ॥

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्री दुर्गा० नमः विशेषार्घं समर्पयामि ।

छत्र-चामर-व्यजन-आन्दोलन-आदर्श-तुरंग-मातंग-रथ-सैन्य-प्राकार-गीत-वाद्य-नृत्यादि राजोपचारार्थं गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

॥ दुर्गा देव्यै कूष्माण्ड बलिदान प्रकारः ॥

दुर्गादेवीं यथालब्धोपचारैः सम्पूज्य बलिं दद्यात् । बलिदान कर्ता पूर्वाभिमुखं देव्यभिमुखं वा बलिं संस्थाप्य गन्धादिना बलिमभ्यर्च्य प्रणमेत्——

पशुस्त्वं बलिरुपेण मम भाग्यादुपस्थितः ।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥ १ ॥
चण्डिका प्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ।

चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु मे ॥ २ ॥
यज्ञार्थं वलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाभ्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३ ॥

एवं बलिमभिमन्त्र्य ह्लीं श्रीं इति मन्त्रपुष्पाणि बल्युपरिक्षिप्त्वा रसनां [शस्त्रं] पूजयेत्—

"रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ १ ॥

ॐ ह्लां ह्लीं खड्ग आं हुं फट्। इत्यनेन शस्त्रं सम्पूज्य। ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डायै नमः, इति बलिं छेदयित्वा—ॐ ऐं ह्लीं कौशिकिरुधिरेणाप्यायताम्—इति देव्यै निवेद्य बलिशेषं बहिर्देवेभ्यो दद्यात्।

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः ॥ १ ॥
असुरायातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ २ ॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥ ३ ॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥ ४ ॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः।

अयं बलिः शूद्रेण दुर्ब्राह्मणेन वा चतुष्पथेनेयः। बलिकर्ता च आत्मशुद्धिं कृत्वा शेषं कर्म कुर्यादिति।

दैवीनीराजनम्

गन्धाक्षतपुष्पैर्ज्वालामालिनीं संपूज्य ॐ आरात्रि० ॐ इद ठं. हविः०। कर्पूरगौरम्०। कदलीगर्भसम्भूतम्०। ॐ नमोदेव्यै० साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै० श्रीदुर्गा० नमः नीराजनमारार्तिक्यं सम०। जलेन प्रदक्षिणां कृत्वा पुष्पैर्देवताभिवन्दनम्। आत्माभिवन्दनम् [हस्तं प्रक्षाल्य]

पुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञम्० ॐ राजाधिराजाय० । विश्वतश्चक्षु० । ॐ अम्बेऽम्बिके० । नानासुगन्धपुष्पाणि० ।

साङ्गा० सपरि० सायु० सश० सवा० साव० भगवत्यै श्रीदुर्गा० नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं सम० । प्रदक्षिणा—ॐ सप्तास्यासन्० । यानि कानिच० एवं परिक्रम्य साष्टाङ्गं प्रणमेत्—नमः सर्वहितार्थायै० ।

क्षमापनम्

अपराध सहस्राणि० अवाहनं न जानामि० मन्त्रहीनं क्रियाहीनम्० ।

अपराध शतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथाकुरु ॥
महिषघ्निमहामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ।
यशो देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥

अर्पणम्

कृतेनानेन ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजनाख्येन कर्मणा तेन साङ्गा सपरिवारा-सायुधा-सशक्तिका-सवाहना-सावरणा-त्रिगुणात्मिका भगवती श्रीदुर्गा देवी प्रीयतां न मम । तत्सत्‌ब्रह्मार्पणमस्तु । यस्यस्मृत्याच० । यदक्षरपदभ्रष्ट० ।

अथ कुमारिकाबटुकपूजनम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्यसङ्कल्पः—[क्रियमाणस्य, करिष्यमाणस्य, कृतस्य वा] सनवग्रहमख शतचण्डी [सहस्रचण्डी] कर्माङ्गत्वेन कुमारिकाबटुकपूजनमहं करिष्ये । आवाहनम्ः—

मन्त्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम् ।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥
इति कुमारीमावाह्य यथाशक्ति पूजयेत् ।

एवमेव तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय० करकलितकपाल:० । इत्यादिना बटुमावाह्यपूजयेत् । अन्ते वस्त्रभिष्टान्न दक्षिणादिकं दत्वा प्रार्थयेत्—

प्रसन्नवदनाम्भोजां प्रोद्यद्बालार्कसप्रभाम् ।
रक्ताम्बरां रक्तमाल्यां नानालंकारभूषिताम् ॥
सस्मितां देवकन्याभिः क्रीडारसपरायणाम् ।
ध्यायेत्कुमारिकां बालां स्वभक्ताभीष्टसिद्धिदाम् ॥
नमस्ते भगवत्यम्ब नमस्ते भक्तवत्सले ।
नमस्ते जगदाधाररूपिणी त्राहि मां सदा ॥

ततः शास्त्रोक्तलक्षणसम्पन्नैर्नवब्राह्मणैः सह आचार्यः पुस्तकपूजां ब्राह्मणपूजां च विधाय प्रयोगोक्तविधिना चण्डीपाठमारभेत् ।

पाठान्ते तत्तद्दशांशेन होम तर्पण मार्जन ब्राह्मणभोजनादिकं कुर्यादिति ।

इति दुर्गादेव्याः पूजा प्रयोगः समाप्तः ।
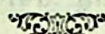
अथ सूर्यपूजन विधिः

कर्त्ता पवित्रतमदिने कुशाद्यासनोपरि उपविश्य गणेशादिपूजनं कृत्वा सर्वतोभद्रपीठे गौरीतिलके वा ब्रह्मादिदेवानावाह्य सम्पूज्य मध्ये कलशं संस्थाप्य तत्र सुवर्णरजतताम्राद्यन्यतमपात्रे पट्टवस्त्रे वा श्रीसूर्ययन्त्रमालिखेत्। तद्यथा—अष्टगन्धेन रक्तचन्दनेन वा मध्ये बिन्दुं विरच्य ततः षट्कोणं वृत्तम् अष्टदलं पुनः वृत्तम्, द्वादशदलं चतुरस्त्रं च क्रमेण कृत्वा परितः रेखात्रयं दिक्षु विलिख्य तत्रैव छाया-संज्ञादिप्रतिमां सूर्यरथस्य प्रतिमां च संस्थाप्य विमलं सुशोभितं मण्डपं ध्यात्वा तत्र नानारत्नरचितं मुक्ताद्यलंकृतं सिंहासनं स्मरेत्। ततः पूर्वद्वारे = ॐ ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ दक्षिणद्वारे—ॐ द्वारश्रियै नमः। ॐ काल्यै नमः। पश्चिमद्वारे—ॐद्वारश्रियै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। उत्तरद्वारे-ॐद्वारश्रियै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

अथ न्यासं कुर्यात्।

ॐ अर्काय नमः मूर्ध्नि। ॐ रवये नमः ललाटे। ॐ सूर्याय नमः नेत्रयोः। ॐ दिवाकराय नमः कर्णयोः। ॐ भानवे नमः नासिकायाम्। ॐ भास्कराय नमः मुखे। ॐ पर्जन्याय नमः ओष्ठयोः। ॐ तीक्ष्णाय नमः जिह्वायाम्। ॐ सुवर्णरेतसे नमः कण्ठे। ॐ तिग्मतेजसे नमः स्कन्धयोः। ॐ पूष्णे नमः बाह्वोः। ॐ मित्राय नमः पृष्ठे। ॐ वरुणाय नमः दक्षिणहस्ते। ॐ त्वष्ट्राय नमः वामहस्ते। ॐ उष्णकराय नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। ॐ भानवे नमः हृदये। ॐ यमाय नमः उदरे। ॐ आदित्याय नमः नाभौ। ॐ हंसाय नमः कट्याम्। ॐ रुद्राय नमः ऊर्वोः। ॐ गोपतये नमः जान्वोः। ॐ सवित्रे नमः जङ्घयोः। ॐ विवस्वते नमः पादयोः। ॐ प्रभाकराय नमः गुल्फयोः। ॐ तमोध्वंसाय नमः सर्वाङ्गे। **अथ**

षडङ्गन्यासः—ॐ रत्नादेव्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ छायादेव्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ संज्ञायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विश्वधात्र्यै अनामिका०। ॐ अश्विन्यै कनिष्ठिका०। ॐ दिव्यदेहायै करतलकरपृष्ठा०। एवं हृदयादि न्यासः। ॐ ह्रां सत्यतेजसे ज्वलज्वालामालिने मणिकुम्भाय फट् स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ब्रह्मतेजसे ज्वलज्वाला० तर्जनीभ्यां०। ॐ ह्रूं विष्णुतेजसे० मध्यमा०। ॐ ह्रैं रुद्रतेजसे० अनामिका० नमः। ॐ ह्रौं अग्नितेजसे० कनिष्ठिका०। ॐ ह्रः सर्वतेजसे० करतलकर पृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादि। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनी०। ॐ ह्रूं मध्यमा०। ॐ ह्रैं अनामि०। ह्रौं कनिष्ठिका०। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां०। एवं हृदयादि। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ हंसां अंगु०। ॐ हं सीं तर्जनीभ्यां०। ॐ हं सूं मध्य०। ॐ हं सैं अनामिका०। ॐ हं सौं कनिष्ठिका०। ॐ हं सः करतलकरपृ०। एवं हृदयादि न्यासः। ॐ भूर्भुवः स्वरोमितिदिग्बन्धः। ॐ भास्कराय नमः ग्रीखायाम्। ॐ सूर्याय नमः ललाटे। ॐ भानवे नमः भ्रूमध्ये। ॐ जगच्चक्षुसे नमः चक्षुषोः। ॐ त्वष्ट्रे नमः मुखे। ॐ भानवे नमः कण्ठे। ॐ तिमिरनाशाय नमः स्तनयोः। ॐ जातवेदसे नमः नाभौ। ॐ कालात्मने नमः कट्याम्। ॐ उग्रवपुषे नमः गुह्ये। ॐ तेजोवपुषे नमः जङ्घयोः। ॐ प्रभाकराय नमः पादयोः। इति न्यासः।

अथकलशपूजनम्—कलशमुखे—ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा०। ॐ लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा०। कण्ठे—ॐ रुद्राय० रुद्रमा०। ॐ गौर्यै० गौरीमा०। मूले—ब्रह्मविष्णुभ्यां० ब्रह्मविष्णू आवा०। ॐ सावित्र्यै० सावित्रीमा०। मध्ये—ॐ मातृगणेभ्यो० मातृगणान् आवा०। कुक्षौ—ॐ सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागराना०। ॐ सप्तद्वीपेभ्यो० सप्तद्वीपानावा०। ॐ वसुन्धरायै० वसुन्धरामा०। ॐ गङ्गायै० गङ्गामा०। ॐ यमुनायै० यमुनामा०। ॐ सरस्वत्यै० सरस्वतीमा०। ॐ ऋग्वेदाय० ऋग्वेदमा०। ॐ यजुर्वेदा० यजुर्वेदमा०। ॐ सामवेदा०

सामवेदमा० । ॐ अथर्ववेदा० अथर्ववेदमा० । ॐ अष्टपर्वतेभ्यो० अष्टपर्वतानावा० । ॐ अष्टदिग्गजेभ्यो० अष्टदिग्गजानावा० । ॐ गायत्र्यै० गायत्रीमा० । ॐ सावित्र्यै० सावित्रीमा० । ॐ सरस्वत्यै० सरस्वतीमा० । ॐ शान्त्यै० शान्तिमा० । ॐ पुष्ट्यै० पुष्टिमा० । ॐ तुष्ट्यै० तुष्टिमा० । कलशस्य० इत्यादि पठित्वा गन्धाक्षतपुष्पाणि प्रक्षिप्य ॐ भूर्भुवः स्वरोमित्यन्तं पठित्वा गायत्रीं सर्वां वाचयित्वा प्रणवेन द्वादश वारमभिमन्त्र्य ॐ सूर्याय नमः । ॐ रवये० ॐ विवस्वते० । ॐ खगाय० । ॐ अरुणाय० । ॐ मित्राय० । ॐ आदित्याय० । ॐ अंशुमते० । ॐ भास्कराय० । ॐ सवित्रे० । ॐ पूष्णे० । ॐ गभस्तये० । इत्यावाह्य पूजयेत् । **अथ शङ्खाराधनम्**— ततः पात्रे उदकमादाय शंखं पूरयित्वा गंधाक्षतपुष्पाणि प्रक्षिप्य—

ॐ पुरा त्वं सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवानां पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

गर्भादेवादिनारीणां विशीर्येण तव प्रियः ।
तव नादेन पाताल पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत् ॥ ३ ॥
शंखिनी शोधिनी चैव गरुडं धेनुमेव च ।
शूलिनी चक्रिणी चैव कौमुदी प्रणमोदके ॥ ४ ॥

देवस्य त्वेति मूर्ध्नि त्रिवारमभिषिच्य शेषोदकेन कलशद्रव्याणि आत्मानं च संप्रोक्ष्य पुनः संपूर्य ॐ लक्ष्म्यै० । ॐ सरस्वत्यै० । ॐ तुष्ट्यै० । ॐ पुष्ट्यै० । ॐ ब्रह्माण्यै० । ॐ अनुमायायै० । ॐ पद्मगर्भायै० । ॐ पद्महस्तायै० । पूजयेत् । ततः द्वादशतन्तुर्निर्मित-सुदृढवर्तिकायुतमेकमखण्डदीपं पृथक्-पृथक् वा प्रज्वालयेत् ।

अथ पीठपूजा—ॐ अधारशक्त्यै नमः । ॐ मूलप्रकृत्यै० । ॐ कूमार्यै० । ॐ अनन्ताय० । ॐ वाराहाय० । ॐ पृथिव्यै० । ॐसुवर्ण-मण्डपाय० । ॐ रत्नसिंहासनाय० । ॐ धर्माय० । ॐ अधर्माय० ।

ॐ ज्ञानाय० । ॐ अज्ञानाय० । ॐ वैराग्याय० । ॐ अवैराग्याय० । ॐ ऐश्वर्याय० । ॐ अनैश्वर्याय० । ॐ ऋग्वेदाय० । ॐ यजुर्वेदाय० । ॐ सामवेदाय० । ॐ अथर्ववेदाय० । ॐ कृतयुगाय० । ॐ त्रेतायुगाय० । ॐ द्वापराय० । ॐ कलियुगाय० । ॐ मन्दराय० । ॐ पारिजाताय० । ॐ सन्तानाय० । ॐ कल्पवृक्षाय० । ॐ मूलप्रकृत्यै० । ॐ स्कन्दाय० । ॐ नालाय० । ॐ पत्रेभ्यो० । ॐ पद्मेभ्यो० । ॐ केसरेभ्यो० । ॐ दलेभ्यो० । ॐ कर्णिकायै० । ॐ सूर्यमण्डलाय । ॐ सोममण्डलाय । ॐ ब्रह्मणे० । ॐ विष्णवे० । ॐ रुद्राय० । ॐ सत्याय० । ॐ रजसे० । ॐ आत्मने० । ॐ अन्तरात्मने० । ॐ परमात्मने० । ॐ चिदात्मकाय० । ॐ भूः पुरुषाय० । ॐ भुवः पुरुषाय० । ॐ स्वः पुरुषाय० । ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषाय० । ॐ अरुणायै० । ततः प्रतिमायाम् । ॐ अश्मन्नूर्ज्जम्' इत्यनुवाकेन सूर्यसूक्तेन विष्णुसूक्तेन लक्ष्म्यादिसूक्तेन चाभिषेकं कृत्वा देवं जलाद्वहिर्निष्काश्य यन्त्रोपरि विन्यस्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

अथाङ्गपूजा—ॐ आदित्याय नमः पादौ पूजयामि । ॐ दिवाकराय० गुल्फौ पू० । ॐ भास्कराय० जङ्घे० पू० । ॐ प्रभाकराय जानुनी पू० । ॐ सहस्रांशवे नमः उरू पू० । ॐ त्रिलोकेशाय० कटिं पू० । ॐ हरिदश्वाय नाभिं पू० । ॐ रवये० उदरं पू० । ॐ दिवाकराय० हृदयं पू० । ॐ दशात्मकाय० स्कन्धौ पू० । ॐ त्रयोमूर्त्तये० कण्ठं पू० । ॐ सूर्याय० मुखं पू० । ॐ ब्रह्मरूपाय० कर्णौ पू० । ॐ विष्णवे० ललाटं पू० । ॐ विष्णवे० शिरः पू० । ॐ संज्ञयासहसूर्याय नमः सर्वाङ्गं पू० ।

अथारूणपूजा

मध्ये—ॐ अरुणासनाय नमः । ॐ श्रीपरमसुखासनाय नमः । ॐ अदित्यै० । ॐ सूक्ष्मायै० । ॐ जयायै० । ॐ विजयायै० । ॐ भद्रायै० । ॐ विभूत्यै० । ॐ विमलायै० । ॐ अमोघायै० । ॐ ॐ विद्युतायै० । ॐ सर्वतोमुख्यै० ।

अथावरणदेवताः

प्रथमविन्दौ मध्ये--ॐ सूर्याय नमः सूर्यमा० । तद्दक्षिणे--ॐ रत्नादेव्यै नमः रत्नादेवीमा० । ॐ छायायै नमः छाया० । ॐ संज्ञायै नमः संज्ञा० । इति प्रथमावरणार्चनम् ।

षट्दले--ॐ गुं गुरुभ्यो नमः गुरुमा० । ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः परमगुरु० । ॐ पं परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः परमेष्ठिगुरुना० । ॐ पं परात्परगुरुभ्यो नमः परात्परगुरुना० । ॐ हराय नमः हरमात्रा० । ॐ गणेशाय नमः गणेशं मा० । इति द्वितीयावरणार्चनम् ।

अष्टदले-ॐ त्रैलोक्यप्रकाशकाय नमः त्रैलोक्यप्र० । ॐ विश्वतोमुखाय नमः विश्वतोमु० । ॐ विवस्वते नमः विवस्वन्तमा० । ॐ सूक्ष्मात्मने नमः सूक्ष्मात्मानमा० । ॐ सर्वतोमुखाय नमः सर्वतोमुखमा० । ॐ सुवर्णरेतसे नमः सुवर्णरेतसमा० । ॐ मार्तण्डाय नमः मार्तण्डमा० । ॐ सूदनात्मने नमः सूदनात्मानमा- । इति तृतीयावरणार्चनम् ।

पुनः तत्रैव पूर्वादिक्रमेण अष्टदले--ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमा० । ॐ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमा० । ॐ कौमार्यै नमः कौमारीमा० । ॐ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमा० । ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमा० । ॐ नारसिंह्यै नमः नारसिंहीमा० । ॐ ऐन्द्रयै नमः ऐन्द्रीमा० । ॐ चण्डिकायै नमः चण्डिकामा० । इति चतुर्थावरणासनम् ।

अष्टदलाग्रेषु--ॐ दिनेशाय नमः दिनेशमा० । ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० । ॐ विवस्वते नमः विवस्वन्तमा० । ॐ अर्यम्णे नमः अर्यमाणमा० । ॐ सवित्रे नमः सवितारमा० । ॐ शङ्करात्मने नमः शङ्करात्मनमा० । इति पञ्चमावरणार्चनम् ।

अथ द्वादशदलेषु पूर्वादिक्रमेण--अरुणाय नमः अरुणमा० । ॐ वेदाङ्गाय नमः वेदाङ्गमा० । ॐ भानवे नमः भानुमा० । ॐ रुद्राय नमः रुद्रमा० । ॐ विष्णवे नमः विष्णुमा० । ॐ गभस्तये नमः गभस्तिमा० । ॐ यमाय नमः यममा० । ॐ सुवर्णरेतसे नमः सुवर्ण-

रेतसमा० । दिवाकराय नमः दिवाकरमा० । ॐ मित्राय नमः मित्रमा० । ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमा० । ॐ सहस्रकिरणाय नमः सहस्रकिरणमा० । इति षष्ठावरणार्चनम् ।

तत्रैव पूर्वादिक्रमेण--ॐ मित्रायै नमः मित्रामा० । ॐ तीव्रायै नमः तोव्रामा० । ॐ नन्दायै० नन्दामा० । ॐ वज्रहस्तायै नमः वज्रहस्तामा० । ॐ संज्ञायै नमः संज्ञामा० । ॐ भोगदायै नमः भोगदामा० । ॐ कामदायै नमः कादामा० । ॐ सुभगदायै नमः सुभगदामा० । ॐ स्तुतायै नमः स्तुतामा० । ॐ चिन्तायै नमः चिन्तामा० । ॐ अश्विन्यै नमः अश्विनी० । ॐ सकलेश्वर्यै नमः सकलेश्वरीमा० । इति सप्तमावरणार्चनम् ।

चतुरस्रेषु पूर्वादिक्रमेण--ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रमा० । ॐ अग्नये नमः अग्निमा० । ॐ यमाय० यममा० । ॐ निर्ऋतये० निर्ऋतिमा०। ॐ वरुणाय० वरुणमा० । ॐ वायवे० वायुमा० । ॐ सोमाय० सोममा० । ईशानाय० ईशानमा० । ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० । ॐ अनन्ताय० अनन्तमा० । ॐ इत्यष्टमावरणार्चनम्० ।

तत्रैव क्रमेण अयुधानि--ॐ वज्राय० वज्रमा० । ॐ शक्तये० शक्तिमा० । ॐ दण्डाय० दण्डमा० । ॐ खड्गाय० खड्गमा० । ॐ पाशाय० पाशमा० । ॐ अंकुशाय० अंकुशमा० । ॐ गदायै० गदामा० । ॐ त्रिशूलाय० त्रिशूलमा० । ॐ पद्माय० पद्ममा० । ॐ चक्राय नमः चक्रमा० । इति नवमावरणार्चनम् ।

पूर्वपश्चिमयोः—ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः अश्विनीकुमारौ आ० । ॐ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूनावा० । इति दशमावरणार्चनम् ।

ॐ ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदमा० । ॐ यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदमा० । ॐ सामवेदाय नमः सामवेदमा० । ॐ अथर्ववेदाय नमः अथर्ववेदमा० । इत्येकादशमावरणार्चनम् ।

रथाग्रे-- ॐ शक्त्यै नमः शक्तिमा० । ॐ धर्माय नमः धर्ममा० ।

ॐ अधर्माय नमः अधर्ममा० । ॐ त्रयीमयाय नमः त्रयीमयमा० । ॐ छायासूर्याभ्यां नमः छायासूर्यौ आ० । ॐ रत्नादित्याय नमः रत्नादित्यमा० । ॐ अश्विनीभास्कराभ्यां नमः अश्विनीभास्करौ आ० । ॐ संज्ञादित्याभ्यां नमः संज्ञादित्यौ० । ॐ धर्मराजाय नमः धर्मराजमा० । ॐ शनये नमः शनिमा० । ॐ सावर्णिमन्वन्तराय नमः सावर्णिमन्वन्तरमा० । ॐ यमुनायै नमः यमुनामा० । ॐतापिन्यै नमः तापिनोमा० । इति द्वादशावरणार्चनम् ।

इत्येवं आवरणपूजनं कृत्वा धूपादिक्रमेण पूजनं समाप्य होमं कुर्यात् ।

—००:०:००—
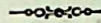
अथ सूर्यसूक्त होमविधिः

श्रीगणेशाय नमः । आचम्य प्राणानायम्य

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीक्षः पुनातु इति त्रिः ।

आसनशुद्धिः बाह्यभूतशुद्धिश्च

पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । सुतलं छन्दः।कूर्मो देवता ॥

आसने विनियोगः ॥

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन होमकर्म समारभे ॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु होमकर्म करोम्यहम् ॥

शिखाग्रन्थिकरणम्-भैरवनमस्कारश्च

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने ।
तिष्ठदेवि शिखाबन्धे चामुण्डे चापराजिते ॥

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

सङ्कल्पः

"अद्येत्यादि" तिथौ वासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अमुकगोत्रेण यजमानेन वृतोऽहम् अस्मिन् सनवग्रहमख-जपहोमाद्यात्मक—श्रीसूर्य-यागाख्ये कर्मणि संकल्पित सूर्यसूक्तजपसंख्यापूर्त्तये यथांशेन होमं तदङ्गत्वेन न्यासाँश्च करिष्ये ॥ तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धयर्थं महा-गणपतिस्मरणं करिष्ये ॥

गणपतिस्मरणम्

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ॥
उद्यद्दिवाकरनिभोज्वलकान्तिकान्तं
विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

अथ न्यासाः

विनियोगः—ॐ विभ्राडित्यस्य विभ्राट् सौर्य ऋषिः जगती छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, तम्प्रत्नकथेत्यस्य ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः जगती छन्दः विश्वेदेवा देवताः, अयं वेन इत्यस्य ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्ष श्रुतङ्क-क्षावृषी गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिः त्रिष्टु-प्छन्दः सूर्यो देवता, बण्महानितिद्वयोर्जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहती छन्दः द्वितीयस्य सतो बृहती छन्दः सूर्यो देवता, श्रायन्तऽइवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहती छन्दः सूर्यो देवता, अद्यादेव इत्यस्य कुत्स ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गि-रस ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता न्यासे होमे च विनियोगः।

१ ॐ व्विभ्राड्बृहत्० व्विराजति —अर्काय नमः मूर्ध्नि ।
२ ॐ उदुत्त्यं० सूर्य्यम्० —रवये नमः ललाटे ।

३ ॐ येनापावक० व्वरुणपश्यसि —सूर्याय नमः नेत्रयोः।
४ ॐ दैव्व्यावध्वर्स्यू० समञ्जाथे —दिवाकराय नमः कर्णयोः।
५ ॐ तम्प्रत्नथा० सुव्वर्द्धसे —भानवे नमः नासिकायाम्।
६ ॐ अयंव्वेनः० रिहन्ति —भास्कराय नमः मुखे।
७ ॐ चित्रन्देवाना० तस्थुषश्च —पर्जन्याय ननः ओष्ठयोः।
८ ॐ आनऽइडा० मनीषा —तीक्ष्णाय नमः जिह्वान्तरे।
९ ॐ यदद्य० तेव्वशे —सुवर्णरेतसे नमः कण्ठे।
१० ॐ तरणिर्व्विश्व० रोचनम् —तिग्मतेजसे नमः स्कन्धयोः।
११ ॐ तत्सूर्य्यस्य० सिमस्मै —पूष्णे नमः बाह्वोः।
१२ ॐ तन्मित्रस्य०' सम्भरन्ति —मित्राय नमः पृष्ठे।
१३ ॐ बण्महान्० महाँऽअसि —वरुणाय नमः दक्षस्तने।
१४ ॐ ॐ बट्सूर्य्य० रदाभ्यम् —त्वष्ट्रे नमः वामस्तने।
१५ ॐ श्रायन्तऽइव० न दीधिम —उष्णकराय नमः अंसयोः।
१६ ॐ अद्यादेवा० उतद्यौः —भानुमते नमः हृदि।
१७ ॐ आ कृष्णेन० पश्यन् —यमाय नमः उदरे!
१८ ॐ व्विभ्राड् बृहत्० व्विराजति —आदित्याय नमः नाभौ
१९ ॐ उदुत्यं० सूर्य्यम्। येनापावकः० व्वरुण पश्यसि।
भुरण्यवे नमः दक्षवाम करयोः।

२० ॐ दैव्व्यावध्वर्स्यू० समञ्जाथे ॐ तम्प्रत्नथा० सुव्वर्द्धसे। रुद्राय नमः ऊर्वोः।

२१ ॐ अयंव्वेन० रिहन्ति। ॐ चित्रन्देवाना० तस्त्थुषश्च। गोपतये नमः जान्वोः।

२२ ॐ आनऽइडा० मनीषा। यदद्य० ते व्वशे। सावित्रे नमः दक्षवाम जङ्घयोः।

२३ ॐ तरणिर्व्विश्व० रोचनम्। तत्सूर्य्यस्य० सिमस्मै। विवस्वते नमः पादयोः।

२४ ॐ तन्मित्रस्य० भरन्ति। ॐ बण्महान्० असि। प्रभाकराय नमः गुल्फयोः।

२५ ॐ वट्सूर्य्यं० रदाभ्यम् । तमोध्वंसाय नमः बाह्यतः ।
२६ ॐ श्रायन्तऽइव दीधिम । भगाय नमः अभ्यन्तरे ।
२७ ॐ अद्यादेवा० उतद्यौः सहस्रांशवे नमः सर्वाङ्गेषु ।
२८ ॐ आकृष्णेन० पश्यन् । रवये नमः सर्वदिक्षु ।

सूर्यसूक्तस्वाहाकारः

आचम्येत्यादि–ध्यानान्तं पूर्ववत कृत्वा वराहुती जुहुयात् ॥

ॐ गणानान्त्वा० गब्भंधम्–स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० काम्पीलवासिनीम्—स्वाहा ॥ २ ॥

सूर्यसूक्तम्

ॐ व्विब्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रु-तम् ॥

व्वातजूतो योऽ अभिरक्षति त्मना प्प्रजाः पुपोष पुरु धा व्वि-राजति स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ उदुत्त्यञ्जातवेदसन्ददेवँ व्वहन्ति केतव ÷॥ दृशे व्विश्श्वाय सूर्य्यम् स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ येनापावक चक्षसा भुरण्ण्यन्तञ्जनाँ २ऽ अनु ॥
त्वँ व्वरुण पश्यसि स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ दैव्व्यावद्ध्वर्य्यू ऽ आगत ६ रथेन सूर्य्यत्त्वचा ॥
मद्ध्वा यज्ञ ६ समञ्जाथे ॥ स्वाहा ॥ ४ ॥

(तम्प्रत्त्नथायँव्वेनश्च्चित्रन्देवानाम्—पाठमात्रम्)

ॐ तम्प्रत्त्नथा पूर्व्वथा व्विश्श्वथेमथा ज्ज्येष्ट्ठतातिर्बर्हिषदꣳ-स्वर्व्विदम् ॥

प्रतीचीनँ व्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे ॥ स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ अयँ व्वेनश्च्चोदयत्पृश्निगब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्वि-माने ॥

इममपा ७ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्नविप्प्रा मतिभीरिहन्ति स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकभ्यक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥

आप्प्राद्द्यावापृथिवी ऽ अन्तरिक्ष ६ सूर्य्य ऽ आत्त्मा जगतस्त-स्त्थुषश्च्च ॥ स्वाहा ॥

ॐ आन ऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्श्वानरः सविता देवऽएतु ॥

अपि यथा सुवानो मत्सथानो व्विश्श्वञ्जगदभिपित्त्वे मनीषा ॥ स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ यद्द्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगा ऽ अभि सूर्य्य ॥
सर्व्वन्तदिन्द्र ते व्वशे ॥ स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ तरणिर्व्विश्श्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य ॥
व्विश्श्वमाभासि रोचनम् ॥ स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्त्वन्तन्महित्त्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततᳪ सञ्ज-भार ॥

यदेदयुक्त हरित ÷ सधस्त्थाद्रादद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्म्मै ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ नन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्द्योरु पस्त्थे ॥

अनन्तमन्न्यद्द्रुशदस्य पाज ÷ कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ वण्णमहाँ २ ऽ असि सूर्य्य वडादित्त्य महाँ २ ऽ असि ॥

महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महाँ २ ऽ असि स्वाहा ।१३।

ॐ वट्सूर्य्य श्श्रवसा महाँ २ ऽअसि सत्रा देव महाँ २ ऽ असि ॥

मन्न्हा देवानामसुर्य्य ÷ पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ श्रायन्तऽइव सूर्य्य व्विश्श्ववेदिन्द्रस्य भक्षत ॥

व्वसूनि जाते जनमान ऽ ओजसा प्प्रति भागन्न दीधिम ॥ स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ अद्द्या देवाऽ उदिता सूर्य्यस्य निर ६ हंसः पिपृता निरवद्-द्यात् ॥

तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धु ÷ पृथिवीऽउदद्द्यौः॥ स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ आकृष्ण्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च ।

हिरण्ण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ स्वाहा ॥ १७ ॥

। इति होमविधिः ।

इति द्वितीयः परिच्छेदः समाप्तः

अथ प्रतिष्ठाप्रयोगात्मकस्तृतीयः परिच्छेदः

अथ कर्मकुटी

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य प्रतिमानिर्माणे प्राणिवधादिदोष निरासार्थं घृतादिद्रव्यैर्होममहं करिष्ये। इत्येवं सङ्कल्प्य स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य अज्यभागान्तं कर्म कृत्वा तत्तद्देवमन्त्रैरष्टोत्तरशतादियथा संख्याहुतिभिर्हुत्वा पूर्णाहुतिश्च कृत्वा प्रतिमां कुशैः सम्मार्ज्य मधु-घृताभ्यङ्गेन देवस्य व्रणभङ्गं कृत्वा सितपुष्पैर्देवान् सम्पूज्य शंख-तूर्यादिनादेन देवं मण्डपप्रादक्षिण्येन स्नानमण्डपमानयेत्। भद्द्रकर्णे-भिरित्यादिना मन्त्रेण देवं प्रथम [स्नपन] वेद्यां समासाद्य पूर्वस्था-पितकलशैर्गीतवादित्रनिनादैर्देवं स्नपयेत्। ततो गुरुः प्रतिमां साव-यवां निरीक्ष्य देवस्य दक्षिणहस्ते वितस्तिमात्रं सितोर्णादिसूत्रं [दोरकं] ॐ यदाबंध्नमिति मन्त्रेण बध्नीयात्।

इति कर्मकुटी

अथ जलाधिवासः

यजमान आचम्य प्राणानायम्य अद्यत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकोऽहं विष्ण्वादि देवानां स्थिरप्रतिष्ठाङ्गत्वेन जलाधिवासकर्माहं करिष्ये।

ततो जलसमीपे मूर्तिमवस्थाप्य मूर्त्यग्रे वृतब्राह्मणैः पुण्याहवाचनं कारयित्वा जले पञ्चगव्यं प्रक्षिप्य ॐ घृतम्मिमिक्षे० इति मन्त्रेण [देवान्] धृतेनाभ्यज्य जलेऽधिवासयेत्। यथा—यजमानः—अमुको-ऽहमिति देशकालौ सङ्कीर्त्य आसां मूर्तीनां सग्रहमख-सप्रासाद-अचलप्रतिष्ठाकर्मणि गणेशस्मरणपूर्वकं जलमातृ-जीवमातृ-योगिनि-क्षेत्रपाल-वरुणपूजनमहं करिष्ये। ततो गणेशं संस्मृत्य जले जलमातृः पूजयेत्——

१. ॐ मत्स्यै नमः। २. ॐ कच्छप्यै०। ३. ॐ कूर्म्यै०। ४. ॐ वाराह्यै०। ५. ॐ दर्दुर्यै०। ६. शिशुभार्यै०। ७. ईश्वर्यै०। एवं

नाममन्त्रैः संपूज्य अक्षतपुञ्जेषु जीवमातृरावाह्य पूजयेत्--१. ॐ कल्याण्यै नमः। २. ॐ मङ्गलायै०। ३. ॐ भद्रायै०। ४. ॐ पुण्यायै०। ५. ॐ पुष्पमुख्यै०। ६. ॐ जयायै०। ७. ॐ विजयायै०। ततः ॐ योगेयोगे० इति मन्त्रेण "ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः" इत्येवं सम्पूजयेत्। ततो वायव्ये--अक्षतपुञ्जोपरि ॐ क्षत्रस्य-योनिरसि० इति क्षेत्रपालमावाह्य सम्पूज्य सदोपदधिमाषभक्तबलिं दद्यात्। ततः ॐ तत्त्वायामि० इत्यनेन वरुणं सम्पूज्य ॐ पञ्चनद्यः० इति मन्त्रेण जले पञ्चामृतं क्षिपेत्। ततो जले स्थितं देवं प्रार्थयेत्--

जलधिवासितोदेव मम भाग्योदयं कुरु।
त्वदधिष्ठान संयोग्यं त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर॥

एवं यथासमयं देवं जलेऽधिवासयेत्।[1]

इति जलाधिवासविधिः

अथान्नाधिवासविधिः

ततो यजमानः ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते० इति
ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यमङ्गलं कुरु॥[2]

इत्यनेन च देवं जलादुत्थाप्य यागमण्डपनैऋत्यां दिशि आनीय तत्र भूभौ प्रभतं धान्यं विकीर्य धान्योपरि वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि ॐ धान्यमसि० इति मन्त्रेण देवं स्वापयेत्। देवोपरि वस्त्रं प्रच्छाद्य तदुपरि प्रचुरधान्यराशिं विकिरेद्येन देवः सर्वाङ्गप्रच्छन्नो भवेत्। उपरि गन्धाक्षतपुष्पकुशपत्राणि च प्रक्षिपेत्।

इति धान्याधिवासविधिः
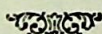
मात्स्ये १—त्रिरात्रमेकरात्र वा पञ्चरात्रमथाऽपि वा।
सप्तरात्रमथो कुर्यात्क्वचित्सद्योऽधिवासनम्॥

२. उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यजनिद्रां जगत्पते।
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत्॥

अथ प्रथमवेद्यां कलशैर्देवस्नपनविधिः

आचार्यः स्नानमण्डपे "ॐ नमोनारायणाय" इति मूलमन्त्राभिमन्त्रितेन पञ्चगव्येन वेदिकात्रयं तत्रत्यां भूमिं च संप्रोक्ष्य तत्र दक्षिण [प्रथम] वेद्यां अक्षतैः कुंकुमेन च स्वस्तिकं लिखित्वा मध्ये अक्षतपुञ्जोपरि विश्वकर्मणो ध्यानं कुर्यात्——

विश्वकर्मा तु कर्त्तव्यः श्मश्रुलो मांसलाधरः।
सन्दंशपाणिर्द्विभुजस्तेजोमूर्तिः प्रतापवान् ॥

एवं रूपं विश्वकर्माणं ध्यात्वा वेदिकायां भद्रपीठे वा सप्तधान्योपरि पंक्तिरूपेण उदगन्तान् एकादशकलशान् स्थापयेत् :——

कलश संख्या		पदार्थाः	मन्त्राः
१	कलशाः	मृत्तिका	ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा०
२	,,	पल्लवकषायः	ॐ यज्ञायज्ञावो०
३	,,	गोमूत्रम्	ॐ तत्सवितुः [गायत्र्या]
४	,,	गोमयम्	ॐ गन्धद्वाराम्०
५	,,	भस्म	ॐ ॐ मानस्तोके०
६	,,	गन्धोदकम्	ॐ ता१ँसवितुर्वं०
७	,,	,,	ॐ नमः शम्भवाय च०
८	,,	,,	ॐ ह१ँ सः शुचिषत्०
९	,,	,,	ॐ याते रुद्र०
१०	,,	,,	ॐ विष्णोरराटमसि०
११	,,	,,	ॐ ब्रह्मजज्ञानम्० [अन्त्यः स्थपतिकलशः]

एवं भद्रपीठस्य पुरतः कलशान् संस्थाप्य आचार्य दक्षिणवेद्यां [प्रथमवेद्याम्] भद्रपीठे [आसने] ॐ "भद्द्रं कर्णेभिः" इति प्राङ्मुखं देव निवेश्य घृतपायससर्षपद्रव्यैः प्राच्यादिदिक्षु ॐ "त्र्यम्बकम्" इति मन्त्रेण बलि दत्त्वा मण्डपरक्षार्थं ॐ "त्रातारमिन्द्र०"

इत्यादिभिर्लोकपालमन्त्रैः इन्द्रादिलोकपालानाराध्य देवस्याग्रे स्वस्ति-वाचनं कृत्वा स्थपतिकलशं देवसमीपे निधाय स्थापनविधिना तस्मिन् जलहिरण्यादिकं प्रक्षिप्य तस्मिन्नेव स्थपतिकलशे तीर्था-न्यावाहयेत् :—

काशी कुशस्थली मायावन्त्ययोध्या मधोः पुरी।
शालग्राम सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती॥

तीर्थान्येतानि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्।
नदा नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥

एवं तीर्थान्यावाह्य यथाशक्ति शिल्पिवर्गं संपूज्य ॐ "अग्नि-र्म्मूर्धा०," इत्यादिकान् उक्तान् मन्त्रान् पठन् मृदादिपदार्थयुक्तैः पूर्वोक्तैः एकादशकलशैः आचार्यः यजमानो वा देवं (देवान्) स्नापयेत्। एवं संस्नाप्य।

ततः "शतंवोऽअम्व०" इत्यादिनामन्त्रेण दूर्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य "सुजातो ज्योतिषा०" इति शुक्लवस्त्रेण देवमाच्छादयेत्।

इति प्रथमवेदिस्नपनविधिः

अथ मध्यम [द्वितीय] वेदिस्नपनविधिः

ततो द्वितीयवेद्यां ॐ "भद्रं कर्णेभिः०" इति भद्रासनं निधाय ॐ स्तोर्णंबर्हिःसुष्टरीमा० इति मन्त्रेण भद्रासने प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य तत्र "ॐ" इति प्रणवेन प्राङ्मुखं देवं निधाय माङ्गलिकसूत्रेण देवं [लिङ्गम्] आवेष्टय प्रतिमायां मुखे [लिङ्गं चेत्तर्हि पुरतो मुखं प्रकल्प्य तत्र] ॐ "चित्रन्देवानाम्०" इति मध्वाज्याक्तया सुवर्णशलाकया नेत्राणि कल्पयेत्। ॐ "आकृष्णेन-रजसा०" इत्यनेन ऊर्ध्वाधः "पृथग्भूतं पक्ष्मपुटद्वयं च कल्पयेत्। नेत्रमध्ये कनीनिकामपि प्रकल्पयेत्। तदा नकश्चित् पुरतस्तिष्ठेत्। सुवर्णं, पायसं, भक्ष्यं, भोज्यं, आदर्शं च शीघ्रं दर्शयेत्।

ततो देवं मधुसर्पिभ्यामभ्यज्य ॐ इमम्मेव० इति शुद्धोदकेन संप्रोक्ष्य एकादशकलशैः स्नापयेत्—

१	मृत्तिका कलशेन	ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा० ।
२	कषायोदकेन ,,	ॐ यज्ञायज्ञावोऽअ०
३	गोमूत्रेण ,,	ॐ तत्सवितुः० [गायत्र्या०]
४	गोमयोदकेन ,,	ॐ गन्धद्वाराम्० ।
५	भस्मोदकेन ,,	ॐ मानस्तोके० ।
६	गन्धोदकेन ,,	ॐ ताꣳसवितुर्व० ।
७	,,	ॐ नमः शम्भवाय च ।
८	,,	ॐ ॐ हꣳसः शुचिषत् ।
९	,,	ॐ याते रुद्र० ।
१०	,,	ॐ विष्टोरराटमसि० ।
११	,,	ॐ ब्रह्मजज्ञानम्० ।

[मयूखे—अत्रापि स्थपति कलशः]

एवं संस्नाप्य देवं दूर्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य वस्त्रेणाच्छादयेत् । ततः शिल्पिने वस्त्रद्रव्यादिकं दत्वा आचार्याय सहिरण्यां गां दद्यात् ।

इति द्वितीयवेदिस्नपनविधिः

अथ उत्तर [तृतीय] वेदिस्नपनविधिः

तत आचार्यः उत्तरवेद्यां भद्रासने देवं संस्थाप्य ॐ समुद्रायत्त्वा वाताय० इत्यनेन देवं संस्नाप्य ॐ शतंवोऽअम्ब० इत्यनेन देवस्य मूर्ध्नि दूर्वाक्षतान् दत्वा प्रार्थयेत्—

ॐ नमस्तेऽर्चे सुरेशानि प्रकृतेर्विश्वकर्मणः ।
प्रभाविताशेष जगत्-धात्रि तुभ्यं नमो नमः ।।
त्वयि संपूजयामीशं नारायणमनामयम् ।
रहिताशेषदोषैस्त्वं ऋद्धियुक्ता सदाभव ।।

ततो देवस्य दक्षिणहस्ते [देव्यास्तुवामहस्ते] प्रतिमावितस्तिमात्रं ऊर्णासूत्रं बध्नीयात्—ॐ यदाबध्नन्दा० । ततः प्रार्थयेत्—

ॐ सर्वसत्त्वमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम् ।
त्वामेवालङ्करिष्यामि त्वं वन्द्यो भवते नमः ॥

एवं सम्प्रार्थ्य देवं स्नापयेत् :—

उत्तरवेद्याः परितोऽष्टौ कलशाः पूर्वादिक्रमेण

१	क्षारोदकम्	ॐ हिरण्यगर्भ० ।
२	क्षीरम्	ॐ उपयामगृहीतोऽसि प्रजाप० ।
३	दधि	ॐ यः प्राणतो निमिषतो० ।
४	सर्पिः	ॐ उपयामगृहीतोऽसि०…चन्द्रमा० ।
५	इक्षुरसः	ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषम्० ।
६	सुरा	ॐ युञ्जन्त्यस्य काम्या० ।
७	स्वादूदकम्	ॐ यद्रातोऽअपोऽअगन्० ।
८	गर्भोदकम्	ॐ व्वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण० ।

[एभिरुपर्युक्तैः समुद्रसंज्ञकैः कलशैः पञ्चमपङ्क्यन्ते स्नपनं भविष्यति]

[१] प्रथमपङ्क्तौ चत्वारः [४] कलशाः—

१	शुद्धोदकेन	ॐ इदमापः प्रवहता० ।
२	,,	ॐ आपोदेवीः प्रति० ।
३	,,	ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी० ।
४	,,	ॐ तत्त्वायामि० ।

[२] द्वितीयपङ्क्तौ विंशतिः कलशाः [२०]—

१	मृत्तिका कलशेन	ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा० ।
२	शुद्धोदक ,,	ॐ देवस्यत्त्वा० ।
३	गोमय ,,	ॐ गन्धद्वाराम्० ।
४	शुद्धोदक ,,	ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनम० ।
५	गोमूत्र ,,	ॐ तत्सवितुः० [गायत्र्या]
६	शुद्धोदक ,,	ॐ आपोहिष्ठा० ।

७	भस्म कलशे न	ॐ प्रसद्यभस्मना० ।
८	शुद्धोदक ,,	ॐ यो वः शिवतमो० ।
९	पञ्चगव्य ,,	ॐ पयः पृथिव्याम्० ।
१०	शुद्धोदक ,,	ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्यो० ।
११	क्षीरम् ,,	ॐ आप्यायस्व० ।
१२	शुद्धोद० ,,	ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो० ।
१३	दधि ,,	ॐ दधिक्राव्णो० ।
१४	शुद्धोद० ,,	ॐ युञ्जानः प्रथमम्० ।
१५	घृतम् ,,	ॐ घृतवती भुवनानाम्० ।
१६	शुद्धोद० ,,	ॐ देवस्यत्त्वा०
१७	मधु ,,	ॐ मधुव्वाताऽऋता० ।
१८	शुद्धोद० ,,	ॐ आपोऽअस्मान्मातरः० ।
१९	शर्करा ,,	ॐ आयङ्गोः० ।
२०	शुद्धोद० ,,	ॐ आपोहयद्बृहतीः० ।

ततः ॐ यज्ञायज्ञावो० मन्त्रेणानेन सूक्ष्मवस्त्रेण देवं सम्मार्ज्य सुगन्धतैलेनाभ्यज्य ॐ द्रुपदादिव० इति मन्त्रेण यव शालि-गोधूम-मसूर-बिल्व-आमलकचूर्णैः देवमुद्वर्त्तयेत् ।

ततो यतेरुद्रशिवातनूः० इति मन्त्रेण

यक्षकर्दमेन[1] जटामांस्या च देवमनुलिम्पेत् ।

तृतीयपङ्क्तौ—द्वौ शुद्धोदककलशौ [२]

१	शुद्धोदकम्	ॐ मानस्तोके तनये०
२	,,	ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते०

चतुर्थपङ्क्तौ—षट्कलशाः [६]

१	पञ्चामृतम्	ॐ आप्यायस्वसमे०
२	शुद्धोदकम्	ॐ उरुर्ठं० हि राजा०

यक्षकर्दमः—

१. "कस्तूरीकाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुंकुमस्य च ।
चन्दनस्य त्रयो भागाः शशिनस्त्वेक एव हि ॥"

३	शुद्धोदकम्	ॐ सन्तेपयाꣳसि०
४	,,	ॐ आप्यायस्वमदिन्तम०
५	,,	ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ट०
६	,,	ॐ अपाꣳरसमुद्द्वय०

पञ्चमपङ्क्तौ—चतुर्दशकलशाः [१४]

१	गन्धः	ॐ गन्धद्वाराम् [गन्धोदकेन]
२	पञ्चपल्लवकषायः	ॐ यज्ञायज्ञावो० [कषायेन]
३	सर्वौषध्यः	ॐ याऽओषधीःपू० [सर्वौषधिजलेन]
४	सितपुष्पाणि	ॐ ओषधीः प्रति० [पुष्पोदकेन]
५	शान्त्युदकम्	ॐ द्यौः शान्तिर० [शान्त्युदकेन]
६	अष्टौ फलानि[1]	ॐ याः फलिनीः० [अष्टफलोदकेन]
७	सुवर्णम्	ॐ हिरण्यगर्भः० [सुवर्णोदकेन]
८	गोशृङ्गोदकम्	ॐ हविष्मतीरिमा० [गोशृङ्गोदकेन]
९	सप्तधान्यानि	ॐ धान्यमसि० [धान्योदकेन]
१०	सहस्रछिद्रकलशः	ॐ अग्ने सहस्व० [सहस्रधाराकलशेन]
११	दिव्यौषध्यः[2]	ॐ याऽओषधीः० [दिव्यौषधिजलेन]
१२	पञ्चपल्लवाः	ॐ नमोऽस्तुस० [पल्लवोदकेन]
१३	नवरत्नानि	ॐ अष्टौव्यख्यत्० [रत्नोदकेन]
१४	तीर्थोदकेन	ॐ इमम्मेव्व० [तीर्थोदकेन]

ततो वेदिं परितः पूर्वाद्यष्टदिक्षु अष्टौ समुद्रसंज्ञयकाः कलशाः पूर्वं स्थापिताः—तैर्देवं स्नापयेत्—

---

१. "आर्तव फलाष्टकम्" [अग्निपु० ९५।३५] यथा—कदम्ब-नारिकेल-बिल्व-नारङ्ग-मातुलुङ्ग-बदर-आमलक-आम्रान्त फलाष्टकम् ।

२. "सहदेवी कुमारी च सिंही व्याघ्री तथामृताम् ।
विष्णुपर्णीं शतनिभां वचां दिव्यौषधीन्यसेत् ॥"
[अग्निपु० ९५।३७]

१	क्षारोदकम्	ॐकयानश्चित्र०	[क्षारोदकेन]
२	क्षीरम्	ॐ आप्यायस्व०	[क्षीरोदकेन]
३	दधि	ॐ दधिक्राव्णो०	[दधिकुम्भेन]
४	घृतम्	ॐ घृतवतोभुवनानाम्	[घृतकुंभोदकेन]
५	इक्षुरसः	ॐ अपाᳪंरसेन	[इक्षुरसोदकेन]
६	सुरोदकम्	ॐ देवं बर्हिः	[सुरोदकेन]
७	स्वादूदकम्	ॐ स्योनद्यौरुग्रा०	[स्वादूदकेन्]
८	गर्भोदकम्	ॐ व्वेनस्तत्प०	[नारिकेलजलेन]

षष्ठपङ्क्तौ—दशकलशाः स्थापनीयाः—[१०]

१	कदम्बः (पत्राणि)	ॐ त्रातारमिन्द्र०	(कदम्वजलेन)
२	शाल्मली ,,	ॐ त्वन्नोऽअग्ने०	(शालमलिजलेन)
३	जम्बूः ,,	ॐ यमायत्त्वा०	(जम्बूजलेन)
४	अशोकः ,,	ॐ असुन्वन्तम०	(अशोकजलेन)
५	प्लक्षः ,,	ॐ तत्त्वायामि०	(प्लक्षजलेन)
६	चूतः ,,	ॐ आनोनियुद्भिः०	(आम्रपल्लवजलेन)
७	वटः ,,	ॐ व्वयᳪसोम०	(वटजलेन)
८	विल्बः ,,	ॐ तमीशानम्०	(विल्वजलेन)
९	नागकेसरः ,,	ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्यो०	(नागवल्ली-जलेन)
१०	पलाशः ,,	ॐ ब्रह्मयज्ञानम्०	(पलाशपल्लव-जलेन)

सप्तमपंक्तौ—चत्वारो बृहत्कलशास्तीर्थोदपूरितास्तैस्तत्तद्देवसूक्तेन-तं तं देवं स्नापयेत् (४)

ततो देवं (देवान्) मृदुवस्त्रेणपरिमृज्य तीर्थोदकेन सुगन्धितजलेन पुनः संस्नाप्य सितवस्त्रेण परिमृज्य ॐ व्विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रेण सकलीकृत्य (देवाङ्गे षडङ्गन्यासान् विधायेति) प्रतिमायां देवमावाहयेत् ।

देवावाहनम्—

एह्येहि भगवन् विष्णो ! लोकानुग्रहकारक ! ।
यज्ञभागं गृहाणेमं वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥

एवमावाहनादि षोडशोपचारैर्देवं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

समासेनेदं प्रोक्तं स्नानकर्म जगत्पते ।
एतद्वै साधकः कृत्वा सर्वान् कामान् समश्नुते ॥

इति स्नपनविधिः

अथ शय्याधिवासः

ततः स्नानमण्डपस्थं देव पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा उत्थापयेत्--

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते ।
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तं उत्त्थिते चोत्त्थितं जगत् ।।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० इति देवमुत्त्थाय ॐ रथेतिष्ठन्नयति० इति मन्त्रेण रथादौ देवमारोप्य ॐ "आनोभद्द्राः" इति सूक्तेन मङ्गलतूर्यघोषेण च ग्रामप्रादक्षिण्येन प्रासादप्रादक्षिण्येणचानीय यागमण्डपपश्चिमद्वारे रथादिकमवस्थाप्य ॐ आकृष्णेन० इति मन्त्रेण देवमानीय मण्डपवेद्याः पश्चिमतो भद्रपीठे पूर्वाभिमुखं प्रत्यङ्मुखं वा देवं समुपस्थाप्य मधुपर्केणार्चयेत् । तद्यथा--

यजमान आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकोऽहं अस्मिन् शिवादिमूर्त्तीनां स्थिरप्रतिष्ठाकर्मणि मधुपर्केणाऽर्चयिष्ये । ततः पाद्यार्घादिकं दत्त्वा ॐ अन्नपतेऽन्नस्य० इति मन्त्रेण मधुपर्कं दद्यात् । ततो मण्डपमध्ये वेद्यां कुशानास्तीर्य तदुपरि प्राक्शिरस्कां शय्यां निधाय तदुपरि शुभ्रं प्रच्छदमुपधानश्चास्तीर्य स्वस्तिकमालिख्य शय्यां परितः पूर्वादिदिक्षु वक्ष्यमाणदेवताः समावाह्य ताः पूजयेत् ।

अथ शिवप्रतिष्ठायां वेद्याः (शय्यायाः) पूर्वादिदिक्षु भवादिदेवानामावाहनम्

१. ॐ भवाय नमः भवमावा० । २. ॐ शर्वाय नमः शर्वमावा० । ३. ॐ ईशानाय नमः ईशानमावा० । ४. ॐ पशुपतये नमः पशुपतिमावा० । ५. ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावा० । ६. ॐ उग्राय नमः उग्रमावा० । ७. ॐ भीमाय नमः भीममावा० । ८. ॐ महते नमः महान्तमावा० । ॐ भूर्भुवःस्व--भवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति पूजयेत् ।

विष्णु प्रतिष्ठायाम्

पूर्वादिक्रमेण--१. ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावा० । २. ॐ मधु-

सूदनाय नमः मधुसूदनमावा० । ३. ॐ त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रममावा० । ४. ॐ वामनाय नमः वामनमावा० । ५. ॐ श्रीधराय नमः श्रीधरमावा० । ६. ॐ हृषीकेशाय नमः हृषीकेशमावा० । ७. ॐ पद्मनाभाय नमः पद्मनाभमावा० । ८. दामोदराय नमः दामोदरमावा० । ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति पूजयेत् ।

ततो देवलिङ्गकमन्त्रेण शय्यायां देवं निवेश्य स्वापयित्वा, वस्त्रैराच्छादयेत् ।

अथ निद्राकलशस्थापनम्

ततो देवस्य शिरोदेशे भूमौ सहिरण्यं निद्राकलशं ॐ अपोदेवीरुपसृज० इति प्रतिष्ठाप्य ॐ आप्यायस्व० इति मन्त्रेण मधुसर्पिभ्यां देवमभ्यज्य ॐ याते रुद्र० इत्यनेन देवं गन्धादिनाभ्यर्च्य ॐ बृहस्पतेपरिदीया० इति मन्त्रेण देवस्य दक्षिणहस्ते प्रतिसरं (कङ्कणहस्तसूत्रं) बध्नीयात् ।

ततो "विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रेण देवस्य (देवानां) पाद-नाभि-वक्षः-शिरांसि (उक्तमन्त्रावृत्या) आलभेत । देवस्य दक्षिणपार्श्वे छत्रं, व्यजनं, चामरञ्च । चरणदेशे पादुके । पार्श्वयोः शान्तिकुम्भौ । आसन - दर्पण - घण्टा - भक्ष्य - भोज्यजलपात्रादिकञ्च देवस्य पुरतः स्थापयेत् । ततो भस्म-दर्भ-तिलादि द्रव्याणि देवस्य रक्षार्थं परितो निधाय ॐ त्रातारमिन्द्र० इति मन्त्रेण इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात् । ॐ त्र्यम्बकम्० इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्वो बलिं दद्यात् ।

ततः स्थाप्यमाण देवताभ्यः सर्वाभ्यः प्रत्येकं अष्टोत्तरशत–अष्टाविंशति–अष्टाद्यन्यतमसंख्ययाऽऽज्यादिद्रव्यैर्होमं कुर्यात् । यथा–(विष्णु प्रतिष्ठायाम्–) ॐ पराय विष्णवात्मने स्वाहा (शिवप्रतिष्ठायाम्–) ॐ पराय शिवात्मने स्वाहा (दैवी प्रतिष्ठायाम्–) ॐ पराय देव्यात्मने स्वाहा (रामप्रतिष्ठायाम्–) ॐ पराय रामात्मने स्वाहा ।

अथ शिवादिदेवानां प्रतिष्ठादौ मूर्तिन्यासः

अथ कर्त्ता प्रतिमापुरतः प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा भूत्वा कुशजलाक्षतानादाय गोत्रः शर्माऽहं अमुकामुकदेवानां अर्चाधिवासकर्मणि देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादि न्यासानहं करिष्ये, एवं सङ्कल्प्य हस्ते कुशपत्रं पुष्पं वा गृहीत्वा न्यासान् कुर्यात् ।

सर्वदेवसाधारणः प्रणवन्यासः

ॐ अं नमः—पादयोर्न्यसामि
ॐ उं नमः—हृदये ,,
ॐ मं नमः—ललाटे ,,

व्याहृतिन्यासः सर्वदैवसाधारणः

ॐ भूः नमः—पादयोः न्यसामि
ॐ भुवः नमः—हृदये ,,
ॐ स्वः नमः—ललाटे ,,

मातृकान्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ अं नमः शिरसि न्यसामि
ॐ आं नमः मुखे ,,
ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे ,,
ॐ ईं नमः वाम नेत्रे ,,
ॐ उं नमः दक्षिणश्रोत्रे ,,
ॐ ऊं नमः वामश्रोत्रे ,,
ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे न्यसामि
ॐ ॠं नमः वामगण्डे
ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे
ॐ लॄं नमः वामनासापुटे
ॐ एं नमः ऊर्ध्वदशनेषु
ॐ ऐं नमः अधोदशनेषु
ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ औं नमः अधरोष्ठे
ॐ अं नमः ललाटे
ॐ अः नमः जिह्वायाम्
ॐ यं नमः त्वचि
ॐ रं नमः चक्षुषोः
ॐ लं नमः नासिकायाम्
ॐ वं नमः दशनेषु
ॐ शं नमः श्रोत्रयोः
ॐ षं नमः उदरे

ॐ सं नमः कटिदेशे
ॐ हं नमः हृदये
ॐ क्षं नमः नाभौ
ॐ ळं नमः लिङ्गे
ॐ पं फं वं भं मं दक्षिणबाहौ
ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ
ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ चं छं जं झं ञं वामजङ्घायाम्
ॐ कं खं गं घं ङं सर्वांगुलिषु

अथ ग्रह नक्षत्रादिन्यासः सर्वदेव-साधारणः

ॐ रविचन्द्रभ्यां नेत्रयोः
ॐ भौमाय हृदये
ॐ बुधाय स्कन्धे
ॐ बृहस्पतये जिह्वायाम
ॐ शुक्राय लिङ्गे
ॐ शनैश्चराय ललाटे
ॐ राहवे पादयोः
ॐ केतवे केशेषु
ॐ रोहिणीभ्यो हृदये
ॐ मृगशिरसे शिरसि
ॐ आर्द्रायै केशेषु
ॐ पुनर्वसुभ्यां ललाटे
ॐ पुष्याय मुखे
ॐ आश्लेषाभ्यो नासिकायाम्
ॐ मघाभ्यो दन्तेषु
ॐ पूर्वाफाल्गुनीभ्यो,दक्षिणश्रवणे
ॐ उत्तराफल्गुनीभ्यो, वामश्रवणे
ॐ हस्ताय हस्तयोः
ॐ चित्रायै दक्षिणभुजे
ॐ स्वात्यै वामभुजे
ॐ विशाखाभ्यां हृदि
ॐ अनुराधाभ्यो स्तनयोः
ॐ ज्येष्ठाभ्यो दक्षिणकुक्षौ
ॐ मूलाय वामकुक्षौ
ॐ पूर्वाषाढाभ्यो कटिपार्श्वयोः
ॐ उत्तराषाढाभ्यो लिङ्गे
ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यां वृषणयोः
ॐ शतभिषाभ्यो नेत्रे
ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो दक्षिणोरौ
ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो वामोरौ
ॐ रेवतीभ्यो दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ अश्विनीभ्यां वामजङ्घायाम्
ॐ भरणीभ्यो दक्षिणपादे
ॐ कृत्तिकाभ्यो वामपादे
ॐ ध्रुवाय नाभ्याम्
ॐ सप्तर्षिभ्यो कण्ठे
ॐ मातृमण्डलाय कटिदेशे
ॐ विष्णुपदेभ्यो पादयोः
ॐ नागवीथ्यै }
ॐ अङ्गवीथ्यै } वनमालादेशे
ॐ ताराभ्यो रोमकूपेषु
ॐ अगस्त्याय कौस्तुभदेशे

अथ मासादि कालन्यासः—सर्वदेवससाधारणः

ॐ चैत्राय शिरसि
ॐ वैशाखाय मुखे
ॐ ज्येष्ठाय हृदये

ॐ आषाढाय दक्षिणस्तने
ॐ श्रावणाय वामस्तने
ॐ भाद्रपदाय उदरे
ॐ आश्विनाय कट्याम्
ॐ कार्तिकाय दक्षिणोरौ
ॐ मार्गशीर्षाय वामोरौ
ॐ पौषाय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ माघाय वामजङ्घायाम्
ॐ फाल्गुनाय पादयोः
ॐ संवत्सराय दक्षिणोर्ध्वबाहौ
ॐ परिवत्सराय दक्षिणाधोबाहौ
ॐ इद्वत्सराय वामाधोबाहौ
ॐ अनुवत्सराय वामोर्ध्वबाहौ
ॐ पर्वभ्यो सन्धिषु
ॐ ऋतुभ्यो लिङ्गे
ॐ अहोरात्रेभ्यो अस्थिषु
ॐ क्षणाय
ॐ लवाय
ॐ कामाय
ॐ काष्ठायै } रोमसु
ॐ कृतयुगाय मुखे
ॐ त्रेतायुगाय हृदये
ॐ द्वापराय नितम्बे
ॐ कलियुगाय पादयोः
ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो वाह्वोः
ॐ पराय
ॐ परार्द्धाय } जङ्घयोः
ॐ महाकल्पाय शरीरे
ॐ उदगयनाय
ॐ दक्षिणायनाय } पादयोः
ॐ विषुवद्भ्यो सर्वाङ्गुलिषु

वर्णन्यासः—सर्वदेवसाधारणः

ॐ ब्राह्मणाय मुखे
ॐ क्षत्रियाय वाह्वोः
ॐ वैश्याय ऊर्वोः
ॐ शूद्राय पादयोः
ॐ सङ्करजेभ्यो पादाग्रे
ॐ अनुलोमजेभ्यो सर्वाङ्गसन्धिषु
ॐ गोभ्यो मुखे
ॐ अजाभ्यो
ॐ आविकाभ्यो } हस्तयोः
ॐ ग्राम्यपशुभ्यो
ॐ आरण्यपशुभ्यो } ऊर्ध्वोः

अथ स्तोयन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ मेघेभ्यो केशेषु
ॐ अभ्रेभ्यो रोमसु
ॐ नदीभ्यो सर्वगात्रेषु
ॐ समुद्रेभ्यो कुक्षिदेशे

अथ वेदवेदांगादिन्यासः सर्वदेव साधारणः

ॐ ऋग्वेदाय शिरसि
ॐ यजुर्वेदाय दक्षिणभुजे
ॐ सामवेदाय वामभुजे
ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो हृदये
ॐ इतिहासपुराणेभ्यो जङ्घयोः
ॐ अथर्वाङ्गिरेभ्यो नाभौ
ॐ कल्पसूत्रेभ्यो पादयोः
ॐ व्याकरणेभ्यो वक्त्रे

ॐ तर्केभ्यो	कण्ठे
ॐ मीमांसायै ॐ निरुक्ताय	हृदये
ॐ छन्दः शास्त्रेभ्यो ॐ ज्योतिः शास्त्रेभ्यो	नेत्रयोः
ॐ गीताशास्त्रेभ्यो ॐ भूतशास्त्रेभ्यो	श्रोत्रयोः
ॐ आयुर्वेदाय	दक्षिणभुजे
ॐ धनुर्वेदाय	वामभुजे
ॐ योगशास्त्रेभ्यो	हृदये
ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो	पादयोः
ॐ वश्यतन्त्राय	ओष्ठयोः

अथ वैराजन्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ दिवे नमः	मूर्ध्नि
ॐ सूर्यलोकाय ॐ चन्द्रलोकाय	नेत्रयोः
ॐ अनिललोकाय	घ्राणे
ॐ व्योम्ने	नाभौ
ॐ समुभ्द्रेयो	वस्तिदेशे
ॐ पृथिव्यै	पादयोः

अथ देवता न्यासः सर्वदेवसाधारणः

ॐ हिरण्यगर्भाय	शिरसि
ॐ कृष्णाय	केशेषु
ॐ रुद्राय	ललाटे
ॐ यमाय	भ्रुकुटयाम्
ॐ अश्विभ्यां	कर्णयोः
ॐ वैश्वानराय	मुखे
ॐ मरुद्भ्यो	घ्राणे
ॐ वसुभ्यो	कण्ठे
ॐ रुद्रेभ्यो	दन्तेषु
ॐ सरस्वत्यै	जिह्वायाम्
ॐ इन्द्राय	दक्षिणभुजे
ॐ बलये	वामभुजे
ॐ प्रह्लादाय	दक्षिणस्तने
ॐ विश्वकर्मणे	वामस्तने
ॐ नारदाय	दक्षिणकुक्षौ
ॐ अनन्तादिभ्यो	वामकुक्षौ
ॐ वरुणाय	हस्तयोः
ॐ मित्राय	पादयोः
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो	ऊर्वोः
ॐ पितृभ्यो	जान्वोः
ॐ यक्षेभ्यो	जङ्घयोः
ॐ राक्षसेभ्यो	गुल्फयोः
ॐ पिशाचेभ्यो	पादयोः
ॐ असुरेभ्यो	पादांगुलिषु
ॐ विद्याधरेभ्यो	पार्ष्ण्योः
ॐ ग्रहेभ्यो	पादतलयोः
ॐ गुह्यकेभ्यो	गुह्ये
ॐ पूतनादिभ्यो	नखेषु
ॐ गन्धर्वेभ्यो	ओष्ठयोः
ॐ कार्तिकेयाय	दक्षिणपार्श्वे
ॐ गणेशाय	वामपार्श्वे
ॐ मत्स्याय	मूर्ध्नि
ॐ कूर्माय	पादयोः
ॐ नृसिंहाय	ललाटे
ॐ वराहाय	जङ्घयोः
ॐ वामनाय	मुखे
ॐ परशुरामाय	हृदये

ॐ रामाय बाहुषु
ॐ कृष्णाय नाभौ
ॐ बुद्धाय बुद्धौ
ॐ कल्किने जानुदेशे
ॐ केशवाय शिरसि
ॐ नारायणाय मुखे
ॐ माधवाय ग्रीवायाम्
ॐ गोविन्दाय बाह्वोः
ॐ विष्णवे हृदये
ॐ मधुसूदनाय पृष्ठे
ॐ त्रिविक्रमाय कट्योः
ॐ वामनाय जठरे
ॐ श्रीधराय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ हृषीकेशाय वामजङ्घायम्
ॐ पद्मनाभाय गुल्फयोः
ॐ दामोदराय पादयोः

अथ क्रतुन्यासः—सर्वदेवसाधारणः

ॐ अश्वमेधाय मूर्ध्नि
ॐ नरमेधाय ललाटे
ॐ राजसूयाय मुखे
ॐ गोसवाय कण्ठे
ॐ द्वादशाहाय हृदि
ॐ अहीनेभ्यो नाभौ
ॐ सर्वजिद्भ्यो दक्षिणकट्याम्
ॐ सर्वमेधाय वामकट्याम्
ॐ अग्निष्टोमाय लिङ्गे
ॐ अतिरात्राय वृषणयोः
ॐ आप्तोर्यामाय ऊर्वोः
ॐ षोडशिने जान्वोः
ॐ उक्थ्याय दक्षिणजङ्घायाम्
ॐ वाजपेयाय वामजङ्घायाम्
ॐ अत्यग्निष्टोमाय दक्षिणबाहौ
ॐ चातुर्मास्याय वामबाहौ
ॐ सौत्रामणये हस्तेषु
ॐ पश्विष्टिभ्यो अंगुलीषु
ॐ दर्शपूर्णमासाभ्यां नेत्रयोः
ॐ सर्वेष्टिभ्यो रोमकूपेषु
ॐ स्वाहाकाराय } स्तनयोः
ॐ वषट्काराय }
ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो पादांगुलीषु
ॐ आहवनीयाय मुखे
ॐ दक्षिणाग्नये हृदये
ॐ गार्हपत्याय नाभौ
ॐ वेद्यै उदरे
ॐ प्रवर्ग्याय भूषणेषु
ॐ सवनेभ्यो पादयोः
ॐ इध्मेभ्यो बाहुषु
ॐ दर्भेभ्यो केशेषु

अथ गुणन्यासः-सर्वदेवसाधारणः

ॐ धर्माय मूर्ध्नि
ॐ ज्ञानाय हृदि
ॐ वैराग्याय गुह्ये
ॐ ऐश्वर्याय पादयोः

अथायुधन्यासो विष्णुप्रतिष्ठा मात्रविषयः

ॐ खड्गाय शिरसि
ॐ शार्ङ्गाय मस्तके
ॐ मुसलाय दक्षिणभुजे

ॐ हलाय वामभुजे
ॐ चक्राय नाभि-जठर-पृष्ठेषु
ॐ शङ्खाय लिङ्गे वृषण देशे च
गदायै जङ्घयोर्जान्वोश्च
ॐ पद्माय गुल्फयोः पादयोश्च

अथायुधन्यासः-शिवप्रतिष्ठा मात्रविषयः

ॐ वज्राय शिरसि
ॐ शक्तये मस्तके
ॐ दण्डाय दक्षिणभुजे
ॐ खड्गाय वामभुजे
ॐ पाशाय, जठर-नाभि-पृष्ठदेशेषु
ॐ अंकुशाय लिङ्गे-वृषणयोश्च
ॐ त्रिशूलाय जान्वोः
ॐ ध्वजाय जङ्घयोः
ॐ चक्राय गुल्फयोः
ॐ पद्माय पादयोः

शक्तिन्यासः—

सर्वदेवसाधारणः

ॐ लक्ष्म्यै ललाटे
ॐ सरस्वत्यै मुखे
ॐ रत्यै गुह्ये
ॐ प्रीत्यै कण्ठे
ॐ कीर्त्यै दिक्षु
ॐ शान्त्यै हृदि
ॐ तुष्टयै जठरे
ॐ पुष्टयै सर्वाङ्गे

अथाङ्गमन्त्रन्यासः—विष्णु प्रतिष्ठामात्रविषयः

ॐ हृदयाय नमः हृदये
ॐ शिरसे स्वाहा शिरसि
ॐ शिखायै वषट् शिखायाम्
ॐ कवचाय हुँ सर्वाङ्गेषु
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रयोः
ॐ अस्त्राय फट् करयोः
ॐ ॐ नमः हृदये
ॐ नं नमः शिरसि
ॐ भगवते शिखायाम्
ॐ वासुदेवाय कवचे
ॐ नमो भागवते वासु-
देवाय अस्त्रे
ॐ श्रीवत्साय स्तनयोः
ॐ कौस्तुभाय उरसि
ॐ वनमालायै कण्ठे
ॐ ॐ नमः पादयोः
ॐ नं नमः जान्वोः
ॐ मो नमः गुह्ये
ॐ भं नमः नाभ्याम्
ॐ गं नमः हृदये
ॐ वं नमः कण्ठे
ॐ तें नमः मुखे
ॐ वां नमः नेत्रयोः
ॐ सुं नमः भाले
ॐ दें नमः मूर्ध्नि
ॐ वां नमः दक्षिणपार्श्वे

ॐ यं नमः वामपार्श्वे

एवमेव तत्तद्देवताया अङ्गमन्त्र-न्यासकल्पना कार्या।

अथ मन्त्रन्यासः—सर्वदेव साधारणः

ॐ अग्निमीळे पादयोः
ॐ इषेत्वोर्जें गुल्फयोः
ॐ अग्न आयाहि जङ्घयोः
ॐ शन्नोदेवीर जान्वोः
ॐ एका च ऊर्वोः
ॐ स्वस्तिन इन्द्रो जठरे
ॐ दीर्घायुस्त ओ हृदये
ॐ विश्वतश्चक्षु कण्ठे
ॐ त्रातारमिन्द्र वक्त्रे
ॐ त्र्यम्वकं यजा स्तनयोर्नेत्रयोश्च
ॐ मूर्द्धानं दिवों मूर्ध्नि

अथ नारायणमूर्तौ द्वादशाक्षर-मन्त्रेण न्यासः

ॐ केशवाय शिरसि
ॐ नं नारायणाय मुखे
ॐ मों माधवाय ग्रीवायाम्
ॐ भं गोविन्दाय कण्ठे
ॐ गं विष्णवे पृष्ठे
ॐ वं मधुसूदनाय कुक्षौ
ॐ तें त्रिविक्रमाय कटिदेशे
ॐ वां वामनाय जङ्घयोः
ॐ सुं श्रीधराय वामगुल्फे
ॐ दें हृषीकेशाय दक्षिणगुल्फे
ॐ वां पद्मनाभाय वामपादे
ॐ यं दामोदराय दक्षिणपादे

अथ नारायणमूर्तौ विष्णवष्टाङ्ग-मन्त्रन्यासः

ॐ हुं हृदयाय हृदये
ॐ विष्णवे शिरसि
ॐ ब्रह्मणे शिखायाम्
ॐ ध्रुवाय कवचे
ॐ चक्रिणे अस्त्रायफट् अस्त्रहस्तयोः
ॐ नमःशम्भवाय गायत्रीं दक्षिणनेत्रे
ॐ विजयाय सावित्रीं वामनेत्रे
ॐ चक्रशूलाय पिङ्गलास्त्रं दिक्षु

अथ नारायणमूर्तौ पुरुषसूक्तन्यासः

ॐ सहस्रशीर्षा० पादयोः
ॐ पुरुष एव जङ्घयोः
ॐ एतावानस्य जान्वोः
ॐ त्रिपादूर्ध्व ऊर्वोः
ॐ ततो विराड वृषणदेशे
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सं—कटयोः
ॐ तस्माद्यज्ञात्० ऋचः नाभौ
ॐ तस्मादश्वा हृदि
ॐ तं यज्ञं म् स्तनयोः
ॐ यत्पुरुषम् बाह्वोः
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखे
ॐ चन्द्रमा मनसो चक्षुषोः
ॐ नाभ्या आसी कर्णयोः

ॐ यत्पुरुषेण भ्रुवोः
ॐ सप्तास्या भाले
ॐ यज्ञेन यज्ञम् शिरसि

अथोत्तरनारायणन्यासः

ॐ अद्भ्यः सम्भृ० हृदये
ॐ वेदाहमे तं शिरसि
ॐ प्रजापतिश्च शिखायाम्
ॐ यो देवेभ्यऽआ कवचे
ॐ रुचं ब्राह्मं नेत्रयोः
ॐ श्रीश्चते अस्त्राय फट्

अथ गायत्रीन्यासः सूर्यस्य

ॐ तकारं पादांगुष्ठयोः
ॐ त्सकारं गुल्फयोः
ॐ विकारं जङ्घयोः
ॐ तुः कारं जान्वोः
ॐ वकारं ऊर्वोः
ॐ रेकारं गुह्ये
ॐ णिकारं वृषणयोः
ॐ यंकारं कटिदेशे
ॐ मंकारं नाभौ
ॐ र्गोकारं जठरे
ॐ देकारं स्तनयोः
ॐ वकारं हृदये
ॐ स्यकारं कण्ठे
ॐ धीकारं वदने
ॐ मकारं तालुदेशे
ॐ हिकारं नासिकायाम्
ॐ धीकारं चक्षुषोः
ॐ योकारं भ्रूमध्ये
ॐ योकारं ललाटे
ॐ नःकारं पूर्वशिरसि
ॐ प्रकारं दक्षिणशिरसि
ॐ चोकारं पश्चिमशिरसि
ॐ दकारं उत्तरशिरसि
ॐ याकारं मूर्ध्नि
ॐ तकारं सर्वत्र
ॐ तत्सवितुः हृदये
ॐ वरेण्यं शिरसि
ॐ भर्गोदेवस्य शिखायाम्
ॐ धीमहि कवचे
ॐ धियोयोनः नेत्रयोः
ॐ प्रचोदयात् अस्त्रे

अथ देवमूर्तौ निवृत्तिन्यासः

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै शिरसि
ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै मुखे
ॐ ह्रीं इं विद्यायै दक्षिणनेत्रे
ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै वामनेत्रे
ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै दक्षिणश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै वामश्रोत्रे
ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै दक्षिणनासापुटे
ॐ ह्री ॠं मोचिकायै वामनासापुटे
ॐ ह्रीं लृं परायै दक्षकपोले
ॐ ह्रीं लॄं सूक्ष्मायै वामकपोले
ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ

ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै अधोदन्तपंक्तौ
ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै ऊर्ध्वोष्ठे
ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै अधरोष्ठे
ॐ ह्रीं अंशुरूपायै जिह्वायाम्
ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कण्ठे
ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै दक्षबाहुमूले
ॐ ह्रीं खं ऋष्यै दक्षकूपरे
ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै दक्षमणिबन्धे
ॐ ह्रीं घं मेधायै दक्षकरांगुलिमूले
ॐ ह्री ङं कान्त्यै दशांगुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै वामबाहुमूले
ॐ ह्रीं छं द्युत्यै वामकूपरे
ॐ ह्रीं जं स्थिरायै वाममणिबन्धे
ॐ ह्रीं झं स्थित्यै बामांगुलिमूले
ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै वामांगुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं टं जरायै दक्षपादमूले
ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै दक्षजानुनि
ॐ ह्रीं डं शान्त्यै दक्षगुल्फे
ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै दक्षपादांगुलिषु
ॐ ह्रीं णं रत्यै वामपादांगुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं तं कामिन्यै वामपादमूले
ॐ ह्रीं थं रदायै वामजानुनि
ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै वामगुल्फे
ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै वामपादांगुलिमूले
ॐ ह्रीं नं दीर्घायै वामपादांगुल्यग्रेषु
ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै दक्षिणकुक्षौ
ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै वामकुक्षौ
ॐ ह्रीं बं अभयायै पृष्ठे
ॐ ह्रीं भं निद्रायै नाभौ
ॐ ह्रीं मं मात्रे उदरे
ॐ ह्री यं शुद्धायै हृदि
ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कण्ठे
ॐ ह्रीं लं कृपायै ककुदि
ॐ ह्रीं वं उल्कायै स्कन्धयोः
ॐ ह्रीं शं मृत्यवे दक्षिणकरे
ॐ ह्रीं षं पीतायै वामकरे
ॐ ह्रीं सं अरुणायै दक्षिणपादे
ॐ ह्रीं हं अरुणायै वामपादे
ॐ ह्रीं त्रं असितायै मूर्द्धादिपादान्तम्
ॐ ह्रीं ज्ञं सर्वसिद्धिगौर्यै पादादिमूर्धान्तम्

अथ देवीमूर्तौ वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः क्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्लीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे। ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे।

ॐ पं फं बं भं मं हस्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः नाभौ। ॐ यं रं लं वं हस्ल्यूं––सर्वेश्वरीवाग्देवतायै आधारे। ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्मीं–– कौलिनीवाग्देवतायै सर्वाङ्गे। ॐ मं जीवात्मने नमः। ॐ भं प्राणात्मने नमः। देवशरीरे व्यापकं कुर्यात्। ॐ बं बुद्ध्यात्मने०। ॐ फं अहङ्कारात्मने०।

ॐ पं मन आत्मने नमः	हृदि
ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने	शिरसि
ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने	मुखे
ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने	हृदये
ॐ थं रसतन्मात्रात्मने	हस्तयोः
ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने	पादयोः
ॐ णं श्रोत्रात्मने	श्रोत्रयोः
ॐ ढं त्वगात्मने	त्वचि
ॐ डं चक्षुरात्मने	नेत्रयोः
ॐ ठं जिह्वात्मने	जिह्वायाम्
ॐ टं घ्राणात्मने	घ्राणे
ॐ ञं वागात्मने	वाचि
ॐ झं पाण्यात्मने	पाण्योः
ॐ जं पदात्मने	पादयोः
ॐ छं पाय्वात्मने	पायौ
ॐ चं उपस्थात्मने	उपस्थे
ॐ ङं पृथिव्यात्मने	पादयोः
ॐ घं अबात्मने	वस्तौ
ॐ गं तेज आत्मने	हृदि
ॐ खं प्राणात्मने	घ्राणे
ॐ कं आकाशात्मने	शिरसि
ॐ पं सूर्यात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ सं सोमात्मने	हृत्पुण्डरीकमध्ये
ॐ वं वह्न्यात्मने	हृत्पुंडरीकमध्ये

स यथा स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्यतेजःपुञ्जं वामनाड्या निः सार्य, ब्रह्मरन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिकर्मेन्द्रियाणि मनः सहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे पुरुषं न्यसेत्।

ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्तौ स्वमन्त्रेण संयोज्य अथवा देवतानाम्नः आद्यमक्षरं सानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवता- नाम्ना संयोजयेत्, तद्यथा––

ॐ शिं शिवात्मने–ॐ विं विष्ण्वात्मने नमः। ॐ रां रामात्मने नमः इत्येवं देवं भावयित्वा। ॐ यं सर्वात्मने––इति सार्वसाक्षिणं भावयित्वा ॐ मं सर्वात्मने–इति देवं सर्वतोमुखं नमः भावयित्वा ॐ वः अनुग्राहकात्मने–इत्यनुग्राहकं भावयित्वा ॐ सर्वभूतात्मने–

इति सर्वभूतकारणं भावयित्वा ॐ लं सर्वसंहारात्मने—इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा ॐ क्षं कोषात्मने—इति सर्वक्षयकारकं ध्यात्वा तत्वत्रयं न्यसेत्। ॐ आत्मतत्वाय। ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणि। ॐ विद्यातत्वाय। ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे हृदये। ॐ शिवतत्वाय। ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय-शिरसि।

अथ शिवस्य ब्रह्मन्यासः

ॐ ईशानाय	अंगुष्ठयोः	ॐ तत्पुरुषाय	कवचे
ॐ तत्पुरुषाय	तर्जन्योः	ॐ ईशानाय	अस्त्रे
ॐ अघोरेभ्यो	मध्यमयोः	ॐ हृदयाय	कनिष्ठिकयोः
ॐ वामदेवाय	अनामिकयोः	ॐ शिरसे स्वाहा	अनामिकयोः
ॐ सद्योजाताय	कनिष्ठिकयोः	ॐ शिखायै वषट्	मध्यमयोः
ॐ सद्योजाताय	हृदि	ॐ कवचाय हुम्	तर्जन्योः
ॐ वामदेवाय	शिरसि	ॐ अस्त्राय फट्	अंगुष्ठयोः
ॐ अघोराय	शिखायाम्		

एवं विन्यस्य, परेणतेजसा संयोज्य, कवचेनावगुण्ठ्य, सर्वकर्मसु नियोजयेत्। सर्वत्राचमनम्। इत्थं देवस्य करन्यासं कृत्वा 'लिङ्गमुद्रां' बध्वा ॐ ईशानः सर्वविद्यानां० सदा शिवोम् इति मन्त्रेण ईशान नाम्नीं मुष्टिं बध्नीयात्।

अथ शिवाय कलान्यासः

ॐ ईशानः सर्व० ईशानं मूर्ध्नि (अङ्गुल्यग्रैः रुद्रमुद्रया न्यासः कार्यः) ॐ तत्पुरुषाय वि० तत्पुरुषं मुखे तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन न्यसः। ॐ अघोरेभ्योऽथ० अघोरं हृदि मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन न्यासः। ॐ वामदेवाय वामदेवं गुह्ये अङ्गुष्ठानामिकायोगेन न्यासः। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि पादादारभ्य मस्तकान्तं कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन न्यासः। ॐ ईशानः सर्वविद्यानां नमः देवस्य उपरितन मूर्ध्नि ईशानीमुद्राकार्या। ॐ ईश्वरः सर्वभूतानां नमः अभयदां मुद्रां देवस्य पूर्वमूर्ध्नि। ॐ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा० इष्टदां कलां

देवस्य दक्षिणमूर्ध्नि। ॐ शिवो मे अस्तु० इति मरीचीं कलां देवस्य उत्तरमूर्ध्नि। ॐ सदाशिवोऽम् इति ज्वालिनीं कलां पश्चिममूर्ध्नि।

अथ शिवस्य तत्पुरुषकलान्यासः

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे—शान्ति पूर्ववक्त्रे न्यसामि।
ॐ महादेवायधीमहि—विद्यां दक्षिणवक्त्रे ,,
ॐ तन्नो रुद्रः—प्रतिष्ठां उत्तरवक्त्र ,,
ॐ प्रचोदयात्—धृतिं पश्चिमवक्त्रे ,,

शिवस्याघोरकलान्यासः

ॐ अघोरेभ्यो—तमां हृदये न्यसामि।
ॐ थघोरेभ्यो—जरां उरसि ,,
ॐ घोरेभ्यो—सत्यां स्कन्धयोः ,,
ॐ घोरतरेभ्यो—निद्रां नाभौ ,,
ॐ सर्वेभ्यो—सर्वव्याधि कुक्षौ ,,
ॐ सर्वसर्वेभ्यो—मृत्युं पृष्ठे ,,
ॐ नमस्ते अस्तु—क्षुधां वक्षसि ,,
ॐ रुद्ररूपेभ्यो—तृषां उरसि ,,

वामदेवकलान्यासः

ॐ वामदेयाय—जरां गुह्ये न्यसामि।
ॐ ज्येष्ठाय—रक्षां लिङ्गे ,,
ॐ श्रेष्ठाय—रतिं दक्षिणोरौ ,,
ॐ रुद्राय—पालिनीं वामोरौ ,,
ॐ कालाय—कलां दक्षिणजानौ ,,
ॐ कलविकरणाय—सञ्जीवनीं वामजानौ ,,
ॐ बलविकरणाय—धात्रीं दक्षिणजङ्घायां ,,
ॐ बलाय—वृद्धि वामजङ्घायाँ ,,
ॐ बलाय—छायां दक्षिणस्फिचि ,,

ॐ प्रमथनाय--क्रियां वामस्फिचि न्यसामि ।
ॐ सर्वभूतदमनाय--भ्रामणीं कट्यां ,,
ॐ मनो--शोषिणीं दक्षिणपार्श्वे ,,
ॐ उन्मनाय--ज्वरां वामपार्श्वे ,,

सद्योजातकलान्यासः

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि-सिद्धिं दक्षिणपादे ,,
ॐ सद्योजातायवै नमो-ऋद्धिं वामपादे ,,
ॐ भवे-दितिं-दक्षिणपाणौ ,,
ॐ भवे-लक्ष्मीं-वामपाणौ ,,
ॐ नातिभवे-मेधां-नासायाम् ,,
ॐ भवस्व माम्-कान्ति शिरसि ,,
ॐ भव-स्वधां दक्षिणबाहौ ,,
ॐ उद्भवाय-प्रभां वामबाहौ ,,

इत्थं न्यासकरणेन विद्या देवं हंसं भावयित्वा "हंसः हंसः" इति मन्त्रेण हृदयादिन्यासान् कुर्यात् । तद्यथा--ॐ हं सं हृदयाय नमः । ॐ हं सीं शिरसे स्वाहा । ॐ हं सूं शिखायै वषट् । ॐ हं सैं कवचाय हुम् । ॐ हं सौं अस्त्राय फट् ।

नृसिहमूर्त्तौ तु--"ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल स्वाहा" इति मन्त्रेण षडावृत्तेन षडङ्गन्यासाः कार्याः । न्यासानन्तरं नृसिंहाय बलिर्देयः, इति विशेषः । उक्तं हि--

नारसिंही यदास्थाप्या अधिवास्य निशागमे ।
कृत्रिमं वाऽथसाक्षाद्वा पशुं दत्त्वा बलिं हरेत् ॥

इति न्यासाः

एवं न्यासविधिं कृत्वा निद्राकलशे निद्रामावाहयेत् । तद्यथा--

परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहम् ।
मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीम् ॥

विरूपाक्षे शिवे कान्ते आगच्छ त्वं तु मोहिनि ।
वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बरविभूषिते ॥

आगच्छ सहसाऽजस्रसुप्तं संसारमोहिनि ।
सुषुप्स्व संहरे देवि कूमार्यैकान्तमानसे ॥

श्रमनिश्वासवाह्यं च आगच्छ भुवनेश्वरि ।
तमः सत्वरजोपेते आगच्छ त्वरचारिणि ॥

मनोबुद्धिरहङ्कारसंहारस्त्वं सरस्वति ।
शब्दस्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च पञ्चमा ॥

आगच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाशनिबन्धिनि ।
भवस्योत्पत्तिहेतुस्त्वं यावदाभूतसंप्लवम् ॥

भुवः कल्पान्तसन्ध्यायां वससे त्वं चराचरे ।
भोगिशय्यां प्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शासने ॥

त्वं प्रतिष्ठऽसि वै देवि मुनियोनिसमुत्थिते ।
पितृदेवमनुष्याणां सयक्षोरगरक्षसाम् ॥

पशुपक्षिमृगाणां च योगमायाविवर्धिनि ।
वससे सर्वसत्वेषु मातेव ह्रितकारिणी ॥

एहि सावित्रि मूर्ति त्वं चक्षुर्भ्यां स्थानगोचरे ।
विश नासापुटे देवि कण्ठे चोत्कण्ठिता विश ॥

प्रतिभावय मां सर्वं मातृवद्देवि सुन्दरि ।
इदमर्घ्यं मयादत्तं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥'

एवं निद्रामावाह्य "ॐ उपप्रागात्परमंयददिति" मन्त्रेण निद्राकलशे निद्रां सम्पूज्य लोकपालमातृक्षेत्रपालादिभ्यो [1]बलिं दत्त्वा स्थाप्यमाणं देवं शय्यातः प्राच्यां सर्वतोभद्रमण्डले पूजयेत् ।

---

१. प्रतिष्ठामयूखः—पृ–२०

अथ मूर्तीशाः

१. ॐ पृथिवीमूर्त्तये नमः पृथिवीमूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः। २. ॐ अग्निमूर्त्तये० अग्निमूर्त्यधिपतये पशुपतये०। ३. ॐ यजमानमूर्त्तये० यजमानमूर्त्येधिपतये उग्राय०। ४. अर्कमूर्त्तये० अर्कमूर्त्यधिपतये रुद्राय०। ५. ॐ जलमूर्त्तये० जलमूर्त्यधिपतये भवाय०। ६. ॐ वायुमूर्त्तये० वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय०। ७. ॐ सोममूर्त्तये० सोममूर्त्यधिपये महादेवाय०। ८. ॐ खमूर्त्तये० खमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः--इत्यष्टौ मूर्त्तीस्तदधिपाँश्च पूजयेत्।

विष्णु प्रतिष्ठायाम्

द्वादशारे चक्रे मध्येऽष्टदले पद्मे "ॐ विष्णवे नमः" इति मूलमन्त्रेण विष्णुं निवेश्य पूजयेत्। तद्यथा--

ॐ हुं हृदयाय नमः, इति कर्णिकायां हृदयं पूजयेत्। पूर्वपत्रे--ॐ विष्णवे नमः, इति शिरः पूजयेत्। दक्षिणे--ॐ ब्रह्मण्याय नमः, शिखांपूज०। पश्चिमे--ॐ ध्रुवाय० कवचं पूज०। उत्तरे ॐ चक्रिणे०, फट् अस्त्रं पूज०। आग्नेयदले--ॐ शम्भवाय० गायत्रीं पूज०। ईशानदले--ॐ विजयाय० सावित्रीं पूज०। नैऋत्यदले--ॐ ज्योतिरूपाय० सरस्वतीं पूज०। वायव्यदले--ॐ चक्रिरूपाय० पिङ्गलास्त्रं पूज०। इति गर्भावरणम्।

ततः पूर्वादिक्रमेण--१. ॐ केशवाय नमः। २. ॐ नारायणाय०। ३. ॐ माधवाय०। ४. ॐ गोविन्दाय०। ५. विष्णवे०। ६. ॐ मधुसूदनाय०। ७. ॐ त्रिविक्रमाय०। ८. ॐ वामनाय०। ९. श्रीधराय०। १०. ॐ--हृषीकेशाय०। ११. ॐ पद्मनाभाय०। १२. ॐ दामोदराय नमः--इति द्वादशमूर्तीः पूजयेत्। इति द्वितीयावरणम्।

पुनः पूर्वादिक्रमेण--१. ॐ खड्गाय०। २. गदायै०। ३. ॐ चक्राय०। ४. ॐ शङ्खाय०। ५. ॐ पद्माय०। ६. ॐ हलाय०। ७. ॐ मुसलाय०। ८. शार्ङ्गाय०।

वैष्णवे पञ्चैव मूर्तीशाः । तद्यथा--

पूर्वे--१. ॐ पृथिवीमूर्त्तये नमः, पृथिवीमूर्त्त्यधिपतये वासुदेवाय नमः । २. दक्षिणे-ॐ जलमूर्त्तये नमः जलमूर्त्त्यधिपतये० सङ्कर्षणाय०। ३. पश्चिमे--ॐ अग्निमूर्त्तये० अग्निमूर्त्त्यधिपतये प्रद्युम्नाय० । ४. उत्तरे-ॐ वायुमूर्त्तये० वायुमूर्त्त्यधिपतये अनिरुद्धाय० । ५. मध्ये-- ॐ खमूर्त्तये० खमूर्त्त्यधिपतये नारायणाय० ।

इन्द्रादयो दिक्पालास्तु सर्वत्र पूजनीयाः । ततः शान्तिक पौष्टिक होमः ।

शान्तिकमन्त्राः-

ॐ शन्नो व्वातः० । ॐ शं नऽइन्द्राग्नी० । ॐ शन्नोदेवीरभि० ।

पौष्टिकमन्त्राः

ॐ शिवोनामासि० । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ।

पञ्चकुण्डीपक्षेहोमक्रमः

१. पूर्वकुण्डे-ॐ अग्निमीले पुरोहितम्० ।
२. दक्षिणकुण्डे-ॐ इषेत्त्वोर्ज्जेत्त्वा० ।
३. पश्चिमकुण्डे-ॐ अग्नऽआयाहि० ।
४. उत्तरकुण्डे-ॐ शन्नोदेवी० ।

नवकुण्डीपक्षेहोमक्रमः

१. पूर्वकुण्डे-ॐअग्निमीले० ।
२. आग्नेयकुण्डे-ॐ वौषट् ।
३. दक्षिणकुण्डे-ॐ इषेत्त्वोर्ज्जेत्त्वा० ।
४. नैर्ऋत्यकुण्डे-दशप्रणवयुक्तया गायत्र्या ।
५. पश्चिकुण्डे-ॐ अग्नऽआयाहि० ।
६. वायव्यकुण्डे-ॐ जातवेदसे सुनवाम० ।
७. उत्तरकुण्डे-ॐ शन्नोदेवी० ।
८. ईशानकुण्डे-ॐ नमो ब्रह्मणे० ।

सर्वत्र कुण्डानां पूर्वदिशि स्थापितशान्तिकलशेषु होमशेषत्यागः कर्तव्यः।

तेभ्यस्तिलैराज्येन वाऽष्टाष्टसंख्यया जुहुयात्।
तद्यथा—पूर्वकुण्डे—१. पृथिवीमूर्त्तेः—ॐ स्योना पृथिवी० स्वाहा।
२. तन्मूर्त्तिपस्य (शर्वस्य) ॐ अघोरभ्योऽथ० स्वाहा।
३. इन्द्राय—ॐ सद्योषाऽइन्द्र० स्वाहा।
अग्निकुण्डे—१ ॐ अग्निन्दूतम्० स्वाहा।
(मूर्त्तिपस्य पशुपतेः) २. ॐ तेजः पशूनाᳪंहवि० स्वाहा।
(अग्नेः) ॐ अग्नऽआयाहि० स्वाहा।
दक्षिणकुण्डे—(यजमानमूर्त्तेः) १. ॐ यऽइन्द्र० स्वाहा।
(मूर्त्तिपतेः उग्रस्य) २. ॐ पुनस्त्वादित्या० स्वाहा।
(यमस्य) ३. ॐ यमाय त्वा० स्वाहा।
नैऋत्यकुण्डे—(अर्कमूर्त्तेः) १. उदुत्यम्० स्वाहा।
(तन्मूर्त्तिपतेः रुद्रस्य) २. ॐ असौ यस्ताम्रो० स्वाहा।
निऋतेः) ३. ॐ असुन्वन्तमयज० स्वाहा।

पश्चिमकुण्डे—(जलमूर्त्तेः) १. ॐ आपो हि० स्वाहा। (तन्मूर्त्ति पतेर्भवस्य) २. ॐ उग्रल्लोहितेन० स्वाहा। (वरुणस्य) ३. ॐ इमम्मे वरुण० स्वाहा :

वायुकुण्डे—(वायुमूर्त्तेः) १. ॐ आनोनियुद्भिः स्वाहा (तन्मूर्त्ति-पतेरीशानस्य) २. ॐ तमीशानम्० स्वाहा। (वायोः) ३. ॐ व्वायो येते० स्वाहा।

उत्तरकुण्डे—(सोममूर्त्तेः) १. ॐ व्वयᳬ सोम० स्वाहा। (तन्मूर्त्ति-पतेर्महादेवस्य) २. ॐ सोमो राजा० स्वाहा। (कुबेरस्य) ३. ॐ आप्यायस्व समेतु० स्वाहा।

ईशानकुण्डे—(खमूर्त्तेः) १. ॐ तमीशानम्० स्वाहा। (तन्मूर्त्ति-पतेर्भीमस्य) २. ॐ भृगोन भीमः० स्वाहा (ईशानस्य) ३. ॐ अभित्त्वाशूर० स्वाहा। एवं मूर्ति मूर्तिप लोकपालेभ्यः समित्ति-

लाज्यद्रव्यैर्यथाशक्ति जुहुयात्। ततो महाव्याहृतिहोमः। ततः स्थाप्यदेवतालिङ्गकेन मन्त्रेण अष्टोत्तरशतं हुत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यादिति।

ततः कूर्मशिला ब्रह्मशिला पिण्डिका वाहनादि परिचारकदेवान् वैदिकैर्नाममन्त्रैर्वा सम्पूज्य मुख्यप्रतिमाया वामपार्श्वेऽधिवासयेत्। तानि च मधुघृतेनाभ्यज्य प्रक्षाल्य सम्पूज्य वस्त्रेणाच्छाद्य प्रतिमायाः पिण्डिकायां स्वमन्त्रन्यासं कुर्यात्।

तद्यथा—विष्णुप्रतिष्ठायाम्—ॐ घं ढं पं भं फं लक्ष्म्यै नमः, एतानि पञ्चाक्षराणि हृच्छिरः शिखाकवचनेत्रसंज्ञकानि। एवं पिण्डिकायां पञ्चाङ्गानि न्यस्य तत्त्वत्रयमूर्तिमूर्तिपांश्च पूर्ववद्विन्यसेत्।

अधिवासनम्

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां दिव्यतेजोधारिण्यै सुभगायै नमः, इतिमन्त्राभ्यामधिवापयेत्। इत्यधिवासनम्।

प्रासादो नूतनश्चेत्तमप्यधिवासयेत्। तत्रायं क्रमः-प्रासादाग्रेऽक्षतैरेकाशीतिपदं मण्डलं कुर्यात्। तद्यथा—नवकोष्ठान् कृत्वा प्रतिकोष्ठं नवनवकलशान् जलपूर्णान् सप्तधान्यपुञ्जोपरि स्थापयेत्।

मध्यकोष्ठनवकस्य मध्यकलशे शमी, उदुम्बर, अश्वत्थ, चम्पक, अशोक, पलाश, प्लक्ष, न्यग्रोध, कदम्ब, आम्र, बिल्व, अर्जुन, इति पल्लवद्वादशकं प्रक्षिपेत्।

पूर्वदिशिकोष्ठनवकस्य मध्यकलशे

पद्मक, गोरोचन, दूर्वाङ्कुर, दर्भपिञ्जुल, श्वेतपीत-सर्षप, सितरक्तचन्दन, जातीसुमन, नद्यावर्त्त, इति पदार्थदशकं प्रक्षिपेत्।

आग्नेय कोष्ठनवक मध्यकलशे

यव, व्रीहि, तिल, सुवर्ण, रजत, गङ्गामृत्तिका, गोमय इति पदार्थसप्तकं प्रक्षिपेत्।

दक्षिणे कोष्ठनवकमध्यकलशे

सहदेवी, विष्णुक्रान्ता, भृङ्गराज, महौषधी, शमी, शतावरी, गुडूची, श्यामाकम्-इति पदार्थाष्टकं प्रक्षिपेत् ।

नैऋत्ये नवकमध्यकलशे

कदली, पूगफल, नारिकेल, बिल्व, नारिंग, मातुलिंगा (वीज पूरकः) वदर, आमलकमिति फलाष्टकं प्रक्षिपेत् ।

पश्चिमे नवकमध्यकलशे

मन्त्रसाधितं पञ्चगव्यं प्रक्षिपेत् ।

वायव्ये-नवकमध्यकलशे

शमी, उदुम्बर, अश्वत्थ, न्यग्रोध, पलाश, एतत् वृक्षपञ्चकस्य त्वचः कषायं प्रक्षिपेत् ।

उत्तरे-कोष्ठनवकमध्यकलशे

शङ्खपुष्पी, सहदेवी, बला (बलिआर) शतावरी, घृतकुमारी (घिकुवाँर) गुडूची, वच, व्याघ्री (भटकटैया) इति मूलाष्टकं क्षिपेत् ।

ईशाने-नवकमध्यकलशे

वल्मीकादिसप्तमृत्तिकाः प्रक्षिपेत् ।

शेषान् कलशान् गन्धोदकेन प्रपूर्य सर्वान् माङ्गलिकसूत्रेण नवनवकं पृथक्-पृथक् वेष्टयेत् । ततः "ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीम०" इति मन्त्रेण मध्यकलशान् अभिमन्त्र्य पञ्चगव्येन प्रासादं अन्तर्बहिः, ऊर्ध्वमधश्च संप्रोक्ष्य "ॐ मूर्द्धानन्दिवः०" इत्यादिना मन्त्रेण सप्त-मृत्तिकया विलिप्य प्रासादं स्नापयेत् ।

तद्यथा--ईशानमध्यकलशेन–१. ॐ समुद्रादूर्म्भिः० ।

वायव्यमध्यकलशेन–२. यज्ञा यज्ञावो० ।

पश्चिममध्यकलशेन–३. ॐ पयः पृथिव्याम्० ।

नैऋत्यमध्यकलशेन–४. ॐ याः फलिनीः ।

उत्तरमध्यकलशेन–५. ॐ हृंसः शुचिषत्० ।

पूर्वमध्यकलशेन—६ ॐ विष्णोरराटमसि० ।
आग्नेयमध्यकलशेन—७. ॐ व्वयठं. सोम० ।
दक्षिणमध्यकलशेन—८. ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत० ।
मध्यकलशेन—९. ॐ नमोऽस्तुसर्प्पेभ्यो० ।

ततो गन्धपूरिताष्टकलशैः पूर्वादिक्रमेण सशिखरं प्रासादं स्नापयेत् ॐ इदमापः प्रवहता० । आपोमा तस्मादेनसः० । एभिर्मन्त्रैः प्रासादं संस्नाप्य सूत्रेणावेष्ट्य देवरूपं प्रासादं चिन्तयित्वा ध्वजपताकादिभिः शोभयित्वा गन्धादिना सम्पूज्य प्रासादं अधिवासयेत् । तद्यथा——

ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्वलाकृते ।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव ॥

ततो रक्षोघ्नसूक्तेन श्वेतसर्षपान् विकीर्य वास्तुं संपूज्य प्रासादपादेषु न्यासं कुर्यात् (प्रासादं स्पृष्ट्वा ।

ॐ ह्लां पृथिवीतत्त्वायनमः, पृथिवीतत्त्वाधिपतये कूर्मायनमः । ॐ ह्लां अप्तत्त्वाय नमः, अप्तत्त्वाधिपतये जलेशाय नमः । ॐ ह्लां तेजस्तत्त्वाय नमः, तेजस्तत्त्वाधिपतये त्विषां निधिपतये नमः । ॐ ह्लां वायुतत्त्वाय नमः, वायुतत्त्वाधिपतये मातरिश्वने नमः । ॐ ह्लां आकाशतत्त्वाय नमः, आकाशतत्त्वाधिपतये सूक्ष्माय नमः ।

प्रासाद जङ्घयोः—ॐ ह्लां रूपतन्मात्राय नमः, रूपतन्मात्राधिपतये भानुमते नमः । ॐ ह्लां रसतन्मात्राय नमः, रसतन्मात्राधिपतये जलदाय नमः । ॐ ह्लां गन्धतन्मात्राय नमः, गन्धतन्मात्राधिपतये गन्धर्वाय नमः । ॐ ह्लां स्पर्शतन्मात्राय नमः, स्पर्श-तन्मात्राधिपतये वलतत्त्वाय नमः । ॐ ह्लां शब्द तन्मात्राय नमः, शब्द तन्मात्राधिपतये सूक्ष्मनादाय नमः ।

प्रासादकटिप्रदेशे—ॐ ह्लां वाक्तत्त्वाय नमः, वाक्तत्त्वाधिपतये दुन्दुभये नमः । ॐ ह्लां पाणितत्त्वाय नमः, पाणितत्त्वाधिपतये समादानाय नमः । ॐ ह्लां पादतत्त्वाय नमः, पादतत्त्वाधिपतये सङ्क्रमाय नमः । ॐ ह्लां पायुतत्त्वाय नमः, पायुतत्त्वाधिपतये

विसर्गाय नमः। ॐ उपस्थतत्त्वाय नमः, उपसस्थतत्त्वाधिपतये आनन्दाय नमः।

प्रासादनाभौ—ॐ ह्लां श्रोत्रतत्त्वाय नमः, श्रोत्रतत्त्वाधिपतये व्योमाय नमः। ॐ ह्लां त्वक्तत्त्वाय नमः, त्वक्तत्त्वाधिपतये सर्वाङ्गाय नमः। ॐ ह्लां चक्षुस्तत्त्वाय नमः, चक्षुस्तत्त्वाधिपतये आकाशाय नमः। ॐ ह्लां रसनातत्त्वाय नमः, रसनातत्त्वाधिपतये महावक्राय नमः। ॐ ह्लां घ्राणतत्त्वाय नमः, घ्राणतत्त्वाधिपतये विलुण्ठाय नमः।

प्रासादकण्ठे—ॐ ह्लां मनस्तत्त्वाय नमः, मनस्तत्त्वाधिपतये सङ्कल्पाय नमः। ॐ ह्लां बुद्धितत्त्वाय नमः, बुद्धितत्त्वाधिपतये बुद्धये नमः। ॐ ह्लां अहङ्कारतत्त्वाय नमः, अहङ्कारतत्त्वाधिपतये अहंकृतये नमः। ॐ ह्लां चित्ततत्त्वाय नमः, चित्ततत्त्वाधिपतये मनसे नमः।

प्रासादद्वारमध्ये— ॐ ह्लां प्रकृतितत्त्वाय नमः, प्रकृतितत्त्वाधिपतये पितामहाय नमः।

प्रासादमध्ये—ॐ ह्लां हृदये पुरुषतत्त्वाय नमः, पुरुषतत्त्वाधिपतये विष्णवे नमः।

प्रासादवक्त्रे—ॐ ह्लां कलातत्त्वाय नमः, कलातत्त्वाधिपतये ऋतुध्वजाय नमः। ॐ ह्लां विद्यातत्त्वाय नमः, विद्यातत्त्वाधिपतये विष्णवे नमः।

प्रासादकलशे—ॐ ह्लां सदाशिवतत्त्वाय नमः, सदाशिवतत्त्वाधिपतये अजेशाय नमः।

प्रासादकलशोपरि सम्पूजयेत्—ॐ ह्लां चक्रायुधचिह्नेभ्यो नमः। ॐ ह्लां सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ अर्कमण्डलाय नमः। ततोन्यासमन्त्रैः तत्त्वहोमं कुर्यात्।

अथ प्रासादशिखरप्रतिष्ठा

गुरुर्मुख्यमण्डपोत्तरतः स्नानमण्डपे स्वस्तिकं लिखित्वा तदुपरि शिखरकलशं संस्थाप्य पञ्चभिर्लौकिककलशैः संस्नाप्य "ॐ मनोजूतिर्जुषताम्०" इत्यादिना मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य तैलेन विलिप्य

संस्नाप्य गन्धपुष्पादिभिरभ्यर्च्य सूत्रेणावेष्टय तस्य पुरतः पुण्याह-वाचनं कारयेत्। ततः "घृतं घृतपावानः" इति मन्त्रेण शिखरकलशं घृतेनाभ्यज्य "ॐ द्रुपदादिव" इति मन्त्रेण यव-मसूर-हरिद्रापिष्टेनो-द्वर्त्य कवोष्णोदकेन प्रक्षाल्य 'ॐ मूर्द्धानन्दिवः०' इति मन्त्रेण वल्मीकमृदा उपलिप्य गन्धोदकेन संस्नाप्य स्नानवेदिचतुष्कोण-स्थितैश्चतुर्भिः कलशैः स्नापयेत्। तद्यथा—ॐ मानस्तोके० इति प्रथमेन। ॐ व्विष्णोरराटमसि० इति द्वितीयेन। ॐ व्वयठं. सोम० इति तृतीयेन। ॐ व्विश्वतश्चक्षुः० इति चतुर्थेन। ॐ पयः पृथिव्याम्० इति शुद्धोदकेन संस्नाप्य ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—इति गन्धा-दिभिः सम्पूज्य वस्त्रेणाच्छाद्य ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो० इति मन्त्रेणोत्थाय मण्डपदेवालयप्रादक्षिण्येनानीय पश्चिमद्वारेण प्रविश्य देवपार्श्वे संस्थाप्य संपूज्य ॐ व्विश्वतश्चक्षुः० इति मन्त्रेण तस्य षडङ्गानि न्यसेत्।

ततः घृत-दधि-क्षीर-मधुद्रव्यैः पृथक्-पृथक् ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०' इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतं हुत्वा शान्तिकलशे संस्रवं निक्षिपेत्। तेनोदकेन कलशस्यावयवान् स्पृशेत्। ततस्तं सम्पूज्योत्थाय ॐ आजिघ्रकलशम्० इति मन्त्रेण शिखरोपरि प्रतिष्ठाप्य तस्मिन् कलशे यथादेवं स्वर्णमयं ताम्रमयं वा त्रिशूलचक्रादिकं स्थापनीयम्।

ततः कर्त्ता प्रासादाभिमुखो भूत्वा देवरूपं प्रासादं ध्यायेत्। तथाहि—

पादौ पादशिलास्तस्य जङ्घापादोर्ध्वमुच्यते।
गर्भश्चैवोदरं ज्ञेयं कटिश्च कटिमेखला॥

स्तम्भाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टा जिह्वा प्रकीर्तिता।
दीपः प्राणोऽस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः॥
ब्रह्मस्थानं यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्तिता।
हृत्पद्मं पिण्डिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृतः॥
पादचारस्त्वहङ्कारो ज्योतिस्तच्चक्षुरुच्यते।
तदूर्ध्वं प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः॥

जलकुम्भादधो द्वारं तस्य प्रजननं स्मृतम् ।
शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्यते ।।
कपोतपालिः स्कन्धोऽस्य ग्रीवा चामलसारिका ।
कलशस्तु शिरोज्ञेयं मज्जादिप्रदसंहितम् ।।
भेदश्चैव सुधां विद्यात् प्रलेपो मांसउच्यते ।
अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नापुः कीलादयः स्मृताः ।।
चक्षुषी शिखरास्तस्य ध्वजाः केशाः प्रकीर्तिताः ।
एवं पुरुषरूपं तं ध्यात्वा च मनसा सुधीः ।।
प्रासादं पूजयेत् पश्चात् गन्धपुष्पादिभिः शुभैः ।
सूत्रेण वेष्टयेद्दैवं वासस्तत्परिकल्पयेत् ।।
प्रासादमेवमभ्यर्च्य वाहनं चाग्रमण्डपे ।।

ततो देवमन्त्रेण पिण्डिका वाहनपरिवारदेवानां तत्तन्नाममन्त्रैस्तिलाज्यद्रव्यैरष्टाष्टसङ्ख्याकं होमं कुर्यात् ।

अथ प्रासादोत्सर्गः

सङ्कल्पः—कुशयवजलान्यादाय ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं अमुं शिलेष्टकादार्वादिनिर्मितं विटङ्क वलभी जगती प्राकार परिवार गोपुर-परिवारदेवतालयोपेतं प्रासादं तत्तद्देवता लोककामः कुलद्वयानुग्रहायाऽमुक देवता प्रीत्यर्थमहं उत्सृजामि, इति कुशयवजलानि भूमौ क्षिप्त्वा देवं नत्वा ब्राह्मणान् भोजयेदिति ।

इति प्रासादोत्सर्गः

अथाचलप्रतिष्ठाविधिः

कर्त्ता आचम्य प्राणानायम्य पवित्रधारणं कृत्वा अधिवासितां देवताधारभूतां कूर्मशिलां ब्रह्मशिलां पिण्डिकां च "ॐ त्रातारमिन्द्र०" इति मन्त्रेण गृहीत्वा मङ्गलघोषैः प्रासादप्रादक्षिण्येन परिभ्राम्य प्रासादद्वारसम्मुखं कृत्वा पुष्पोदकं गृहीत्वा, ॐ अस्त्रायफट्, इति मन्त्रेण प्रासादगर्भमभ्युक्ष्य "ॐ महाँ ।। ऽइन्द्रो" इति मन्त्रेण दर्भेणोल्लिख्य, हुँ फट्, इति जलेन सम्प्रोक्ष्य देवालयमध्ये स्नानादिसंस्कृतां

कूर्मशिलां प्रासादात् प्रासादद्वारमध्याच्चयवेनयवार्धेन वा ईशानी-मुत्तरांवादिशं आश्रित्य प्रणवेन पञ्चरत्नोपरि संस्थाप्य तत्रश्वभ्रे सौवर्णं कूर्मञ्च प्रासादद्वारसम्मुखं निधाय तदुपरि पञ्चरत्नानि निधाय तदुपरि पञ्चचत्वारिंशत् गर्तयुतां ब्रह्मशिलां निदध्यात्। ततः "ॐ नमो व्यापिनि स्थिरे अचले ध्रुवे ॐ श्रीं लं स्वाहा" इति मन्त्रेण पूजयित्वा प्रार्थयेत्--

ॐ त्वमेव परमाशक्तिस्त्वमेवासनधारिका।
शिवाज्ञया त्वयादेवि स्थातव्यमिह सर्वदा॥

तत आसनशिलां पूजयेत्। तद्यथा--ॐ वर्णाध्वने नमः। ॐ पदाध्वने नमः। ॐ मन्त्राध्वने नमः। ॐ भुवनाध्वने नमः। ॐ तत्त्वाध्वने नमः। ॐ सकलाध्वने नमः। एवमासनस्थां कूर्मशिलां सम्पूज्य पुष्पाञ्जलित्रयं समर्प्य प्रणमेत्। ततः पुण्याहवाचनं कृत्वा मूलमन्त्रेण (ॐ इदंविष्णुरिति) अष्टोत्तरशतं हुत्वा पञ्चचत्वारिंशत्सु ब्रह्मशिलागर्तेषु प्रादक्षिण्येन सहेम्ना हस्तेन रत्नन्यासं कुर्यात् (रत्नानामभावे वज्रम्) श्वभ्ररहिते ब्रह्मशिलोपरिभागे सश्वभ्रां पिण्डिकां (पूर्वपश्चिमानने प्रासादे) सौम्यप्रणालीं (दक्षिणोत्तरानने प्रासादे) पूर्वप्रणालीं "ॐ ध्रुवोऽसि पृथिवीम्०" इति ध्रुवसूक्तोक्तमन्त्रेण निधाय "ॐ आयङ्गौः पृश्नि०" इति देवपत्नीलिङ्गकेन मन्त्रेण पिण्डिकामभिमन्त्रयेत् (शिवप्रतिष्ठायाम्)। विष्णुश्चेत् श्रीश्चतेति। ब्रह्माचेत्-गायत्र्या। सूर्यश्चेत् ॐ उषस्तच्चित्रमा०। ततस्तत्त्वन्यासं कुर्यात्। तद्यथा--

ॐ आत्मतत्त्वाय नमः आत्मतत्त्वाधिष्ठात्र्यै क्रियाशक्त्यै नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः, विद्यातत्त्वाधिष्ठात्र्यै ज्ञानशक्त्यै नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः, शिवतत्त्वाधिष्ठात्र्यै इच्छाशक्त्यै नमः--इति तत्त्वन्यासः।

प्रतितत्त्वं मूर्ति मूर्तिपतिं लोकपालान् विन्यसेत्। ततः पिण्डिकायाम्--ॐआधारशक्त्यै नमः--इत्येवं विन्यस्य--ॐ अनन्तासनतत्वेभ्यो नमः, ॐ आसनशक्तिभ्यो नमः--इत्येवं अभ्यर्च्य प्रार्थयेत्--

सर्वदेयमयीशाने त्रैलोक्याह्लादकारिणि ।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते ॥
यावच्चन्द्रश्वसूर्यश्च यावदेषावसुन्धरा ।
तावत्त्वं देवदेवेशि मन्दिरेऽस्मिन् स्थिराभव ॥
पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मी मचलामजरामृताम् ।
अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि भोः ॥
विजयं नृपतेः सर्वं लोकानां क्षेममेव च ।
सुभिक्षं सर्ववस्तूनां कुरु देवि नमोऽस्तु ते ॥

एवं पिण्डिकां प्रार्थ्य तदुपरिश्वभ्रे बाह्यपरिधौ—ओंकाराय नमः—तत्परितः षोडशस्वरेभ्यो नमः। तत्परितोः व्यञ्जनेभ्यो नमः। तत एषवै प्रतिष्ठेति पिण्डिकां प्रतिष्ठापयेत्। श्वभ्रे-यव-व्रीहि-निष्पाव-प्रियंगु-तिल-माष-नीवार-शालि-सिद्धार्थकान्[१] प्रक्षिपेत्। तदधः श्वभ्रे-वज्र-मौक्तिक-वैडूर्य-शङ्ख-स्फटिक-पुष्पराग-चन्द्रकान्त-इन्द्रनील-पद्मरागान्[२] प्रक्षिपेत्। ततोऽप्यधः श्वभ्रे-मनःशिला-हरिताल-श्वेताञ्जन-श्यामाञ्जन-कासीस-सौराष्ट्री-गोरोचन-गेरु-पारदान्[३] प्रक्षिपेत्। ततोऽप्यधः श्वभ्रे-सुवर्ण-रौप्य-ताम्र-आयस-त्रपु-सीस-कांस्य-आरकूट-तीक्ष्णलोहानि[४] प्रक्षिपेत।

ततोऽप्यधः श्वभ्रे-श्वेत-रक्त चन्दन-अगरु-अर्जुन-उशीर-वैष्णवीं-सहदेवी-लक्ष्मणा चेति ओषधयः[५] प्रक्षेप्तव्याः। एवं न्यस्तानां (प्रक्षिप्तानां) बीजरत्नादीनां दिक्पालमन्त्रैरालम्भनं कुर्यात्।

ततः पृथिवी-मेरु-कूर्म-वाहनानि द्वारोन्मुखानि निधाय, मध्य-श्वभ्रे पारदं च निधाय गुग्गुलादिरसेन बीजरत्नादिकं स्थिरीकृत्य मधु-पायसेन श्वभ्रमुपलिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य, कवचेनावगुंठ्य, अस्त्र-मन्त्रेण संरक्ष्य, गृहावै प्रतिष्ठेति मन्त्रेण प्रासादमभिषिच्य इन्द्रादि-दिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात्। ततः प्रसादाद्बहिरष्टदिक्षु स्थण्डिलानि

---

१. बीजानामभावे यवाः प्रयोक्तव्याः। २. रत्नानामभावे वज्रम्।
३. धातूनामभावे हरितालम्। ४. ताम्राद्यभावे सुवर्णम्।
५. ओषधीनामभावे सहदेवीं न्यसेदिति।

संपाद्य पञ्चभूसंस्कारैः संस्कृत्य स्थण्डिलानां ईशानाद्यष्टदिक्षु स्थापनविधिना कलशान् संस्थाप्य सम्पूज्य स्थण्डिलेषु अग्नीन् प्रणीय प्रतिस्थण्डिलं प्रादेशमात्रपालाशसमिधां अष्टोत्तरशतं देवस्य मूलमन्त्रेण हुत्वा, आज्येन च देवगायत्र्या (ॐ नारायणाय विद्महे०) अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टौ वा हुत्वाऽऽचार्योऽष्टदिक्संस्थेभ्यः कलशेभ्यः पात्रे जलमुद्धृत्य मूलमन्त्रेणशतकृत्वोऽभिमन्त्र्य प्रतिमा-सन्निधौ गत्वा सर्वतीर्थमयमिदं जलमिति ध्यायन् देवमूर्ध्न्यभि-षिञ्चेत् । हुंफडन्तेन नारसिंहमन्त्रेण[1] देवस्य दिग्बन्धनं कृत्वा देवं प्रार्थयेत्--

प्रबुध्यस्य महाभाग देवदेव जगत्पते ।
मेघश्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षण ।।
प्रबुद्ध भूधरानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते ।

ततो जल-क्षीर-कुशाग्र-तिल-तण्डुल-यव-सिद्धार्थक-पुष्पाणि शङ्खे कृत्था देवाय अर्घं दत्त्वा "ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते०" इति मन्त्रेण देवमुत्थाप्य प्रासादद्वारसम्मुखं लिङ्गं कृत्वा पुनरर्घं दत्वा प्रासादं प्रवेशयेदिति ।

ततः सुमुहूर्त्ते सुस्थिरे लग्ने सौवर्णं पद्मं पिण्डिकायाः श्वभ्रे निधाय पिण्डिकायां देवं स्थापयेत् । देवपिण्डिकयोरन्तरालं वालुका-सीस-कादिभिर्दृढं कृत्वा पुनर्न चालयेत् । ततः प्रार्थयेत्—

ॐ प्रधानपुरुषोयावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।
तावत्त्वमनयाशक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरो भव ।।

ॐ इहैवैधि ध्रुवाद्यौः० ।

ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवाश्च पर्वता इमे ध्रुवो राजा विशामयम्

ततो यथादेवं सूक्तं पठित्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

---

१. ॐ नृसिंह उग्रज्वल-ज्वल प्रज्वल स्वाहा फट् ।

अथ प्राणप्रतिष्ठा विधिः

सङ्कल्पः—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आंबीजम्, ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकम्, अस्यां [आसु] नूतनमूर्तौ [मूर्तिषु] प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः । ततो न्यासाः—

ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः—शिरसि । ऋग्यजुः साम-छन्दोभ्यो नमः—मुखे । प्राणाख्यदेवतायै नमः—हृदि । आं बीजाय नमः—गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः—पादयोः । क्रों कीलकाय नमः—सर्वाङ्गे । ॐ कं[1]···आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः । ॐ चं···इं शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धात्मने इं शिरसे स्वाहा । ॐ टं···उं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुजिह्वा-घ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट् । ॐ तं···एं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने ऐं कनचाय हुम् । ॐ पं··· ओं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं··· क्षं अं मनोवुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् । एवं आत्मनि देवे च न्यासान् कृत्वा देवं स्पृष्ट्वा जपेत्—

ॐ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लं वँ शँ षँ सँ हँ सः—सोऽहम् ।

स्थिरो भव, शाश्वतो भव । ततो ध्रुवसूक्तं पठेत्—

आसां नूतनमूर्तीनां प्राणाः इह प्राणाः । पुनः—ॐ आँ ह्रीँ०··· आसां नूतनमूर्तीनां जीव इह स्थितः । पुनः—ॐ आँ ह्रीँ क्रोँ०··· आसां नूतनमूर्तीनां सर्वेन्द्रियणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राण-पाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ततो देवहृद्यंगुष्ठं दत्त्वा जपेत्—

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ॐ मनोजूतिः० । ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति । सुप्रतिष्ठो भव ।

---

[1] क-च-ट-त-प-य वर्गाः क्रमेण पूर्णाः पठितव्याः ।

ॐ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
ध्रुवाश्च मे नगाः सर्वे ध्रुवाः पतिकुले स्त्रियः ।

तनो देवस्य सव्यकर्णे गायत्रीं जप्त्वा प्रणवेन संरुध्य देवं सजीवं ध्यात्वा ॐ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रं पठेत् । ततो देवमूर्ध्नि हस्तं निधाय तत्तद्देवलिङ्गकं सूक्तं प्रतिष्ठाश्लोकांश्च पठेत् ।

प्रतिष्ठाश्लोकाः--विष्णुधर्मोत्तरे

ॐ प्रतिष्ठितोऽसि भगवन् सुप्रतिष्ठा भवत्वियम् ।
सान्निध्यं प्रतिपद्यस्व यजमानाभिवृद्धये ॥ १ ॥
शन्नोऽस्तु द्विपदे नित्यं शन्नश्चास्तु चतुष्पदे ।
शन्नोऽस्तु सर्वलोकस्य शन्नोराज्ञस्तथैव च ॥ २ ॥
यजमानः सभृत्योऽयं सपुत्रपशुबान्धवः ।.
रक्ष्यो भगवता नित्यं देवश्चायं नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

तत्र विष्णोः--

अतसीपुष्पसङ्काशं शङ्खचक्रगदाधरम् ।
संस्थापयामि देवेशं देवोभूत्वा जनार्दनम् ॥

रुद्रस्य--

त्र्यक्षं च दशबाहुं च चन्द्रार्धकृतशेखरम् ।
गणेशं वृषभस्थं च स्थापयामि त्रिलोचनम् ॥

सूर्यस्य--

सहस्र किरणं शान्तमप्सरोगण सेवितम् ।
पद्महस्तं महाबाहुं स्थापयामि दिवाकरम् ॥

ततो गन्धादि पञ्चोपचारैः सम्पूज्य संस्कारसिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः [यथा--ॐ, ॐ० इत्यादिः] कुर्यात् । अनेन पञ्चदश-प्रणवावृत्तिकर्मणा आसां अमुकामुकनूतनमूर्तीनां गर्भाधानादि पञ्च-दशसंस्कारान् सम्पादयामि । ततः प्रार्थयेत्--

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥

धर्मार्थकामसिद्धचर्थं स्थिरो भव शुभाय नः ।
सान्निध्यं तु सदादेव स्वार्चायां परिकल्पय ।।
भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ।
येन रुपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् ।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि यावद्विधिरनुष्ठितः ।
स सर्वस्त्वत्प्रसादेन समग्रो भवतां मम ।।

अर्पणम्---अनेन अमुक नूतनमूर्तौ कृतेन प्राणप्रतिष्ठादि कर्मणा तेन अमुक देवता प्रीयतां न मम । ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु । ततो नूतनमूर्त्तीः षोडशोपचारैः पूजयेदिति [ततो व्यवहारार्थ कर्त्तृनामयुतं देवनाम कुर्यात् ।

अथ प्रतिष्ठाहोमः

ॐ शिवाय स्थिरोभव स्वाहा । ॐ शिवायाप्रमेयो भव स्वाहा । ॐ शिवायानादि भव स्वाहा । ॐ शिवाय नित्यो भव स्वाहा । ॐ शिवाय सर्वगो भव स्वाहा । ॐ शिवायाविनाशो भव स्वाहा । ॐ ॐ शिवाय क्लृप्तो भव स्वाहा ।

शान्त्यर्थमघोरमन्त्रेण होमः

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो० स्वाहा—१०८ आहुतयः ।

ततो ब्रह्मादिमण्डलदेवतानां होममारभ्य अग्नि० विसर्जनपर्यन्तान्युत्तरकर्माणि ग्रहशान्त्यनुसारेण कर्त्तव्यानि[1]

इति प्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ।

---
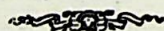
१. पूजास्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ।
श्रेयः सपाद्य दानं च अभिषेको विसर्जनम् ।।”

अथावभृथस्नान प्रयोगः

ततो यजमानो मण्डपस्थं प्रधानकलशं गृहीत्वा वृतैर्ऋत्विग्भिः सह पूजासम्भाराज्यस्थाली स्त्रुवाद्युपकरणान्यादाय गीत वादित्रनिनादैः पुरस्सरो जलाशये गत्वा तत्र स्वस्ति वाचयित्वा देशकालौ सङ्कीर्त्य सङ्कल्पं कुर्यात्—अमुकगोत्रः शर्माहं ममात्मनः तथा च मम द्विपचतुष्पदादिस्वकीयानां सर्वेषां आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थं सकलकामनासंसिद्ध्यर्थंञ्च मनोवाक्कायव्यापारैः समित्तिलचर्वाज्यादिभिर्द्रव्यैश्च सम्पादित—सनवग्रहमरवमण्डपाद्यङ्गसहितहोमात्मक अमुक यागकर्मणि सहकारिणामेतन्नगरनिवासिनां सबालवृद्धवनितानां समेषां ज्वरादिघटितविविधोपद्रवोपशमनपूर्वकोत्तरोत्तर शुभफलावाप्तये श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कृतस्य यागकर्मणः समृद्ध्येऽस्यां नद्यां वास्मिन् जलाशये सहागतैरेतन्नगरनिवासिभिर्जनैः सह यज्ञान्तावभृथस्नानमहं करिष्ये। तनो जलपूरितप्रधानकलशे जलमातॄरावाहयेत्:—१. ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः। २. ॐ भू० कूर्म्यै नमः। ३. ॐ भू० वाराह्यै नमः। ४. ॐ भू० दर्दुर्यै नमः। ५. ॐ भू० मकर्यै नमः। ६. ॐ भू० जलूक्यै नमः। ७. ॐ भू० तन्तूक्यै नमः, इत्यावाह्य पूजयेत्। ततो वरुणमावाहयेत्—

ॐ आगच्छ जलदेवेश ! जलनाथ ! पयस्पते !॥
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव॥

ॐ इमम्मे० इति मन्त्रेणावाह्य पूजयेत्। ततोऽर्घंदद्यात्

ॐ श्वेताभ्रशिखराकार ! सर्वभूतहितेरत !॥
गृहाणार्घमिमं देव ! जलनाथ ; नमोऽस्तुते॥
सां० सप० जलनाथाय नमः अर्घं समर्पयामि।

ततो निम्नाङ्कितैरष्टभिर्मन्त्रैर्वरुणं प्रार्थयेत्—

१. ॐ इमम्मे०। २. ॐ तत्त्वायामि०। ३. ॐ त्वन्नोऽअग्ने०।

४. ॐ सत्वन्नोऽअग्ने० । ५. ॐ मपोमौषधीः० । ६. ॐ उदुमत्तमम्० ।
७. ॐ मुञ्चन्तु मा० । ८. ॐ अवभृथ० ।

ततः स्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनाँ कुर्यात्--

ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्यांकुशमुद्रया ।।
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ! ।।

ततो लाजा दधिपयोभिर्द्रव्यैः तीर्थस्थजीवेभ्यो बलिं दत्वा पुरुषसूक्तेन कुण्डं परितः पतितानि द्रव्याणि जलाशये प्रक्षिपेत्[1] ।

ततो जलाशये स्रुवेण द्वादशाहुतीर्जुहुयात्--

१. ॐ अद्भ्यः स्वाहा । २. ॐ वार्भ्यः स्वाहा । ३. ॐ उदकाय स्वाहा । ४. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ५. ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ६. ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा । ७. ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा । ८. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ९. ॐ धार्य्याभ्यः स्वाहा । १०. ॐ अर्णवाय स्वाहा । ११. ॐ समुद्राय स्वाहा । १२. ॐ सरिराय स्वाहा । ततः पूजाकलशोदकेन वारुणमन्त्रैः यजमानः स्नायात् । आचार्यस्तेन जलेन तत्र समुपस्थितानां नगरनिवासिनां सम्मार्ज्जनं कुर्यात् । ततो जलाशये सर्वे स्नानं कुर्युः । यजमानः अहते वाससी परिधाय ॐ हꣳस॰ इति मन्त्रेण सूर्यमुपस्थाय ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो० । ॐ ईर्मान्ता स०० । ॐ तव शरीरम्० इति त्रिभिर्मन्त्रैः तीर्थदेवतां प्रार्थयेत् । ततो जलाशयात् यजमानो जलपूर्णं तं कलशमादाय प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविश्य जलपूर्णकलशं मण्डपे उत्तरतः संस्थाप्य कर्मशेषं समापयेत् ।

इति अवभृथस्नानप्रयोगः ।

---
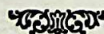
१. ऋत्विजां जुह्वतामग्नौ बहिः पतति यद्धविः ।।
यज्ञेऽसौ वरुणो भागः प्रक्षेप्यो निर्मले जले ।। इति वचनात् ।

परिशिष्टम्
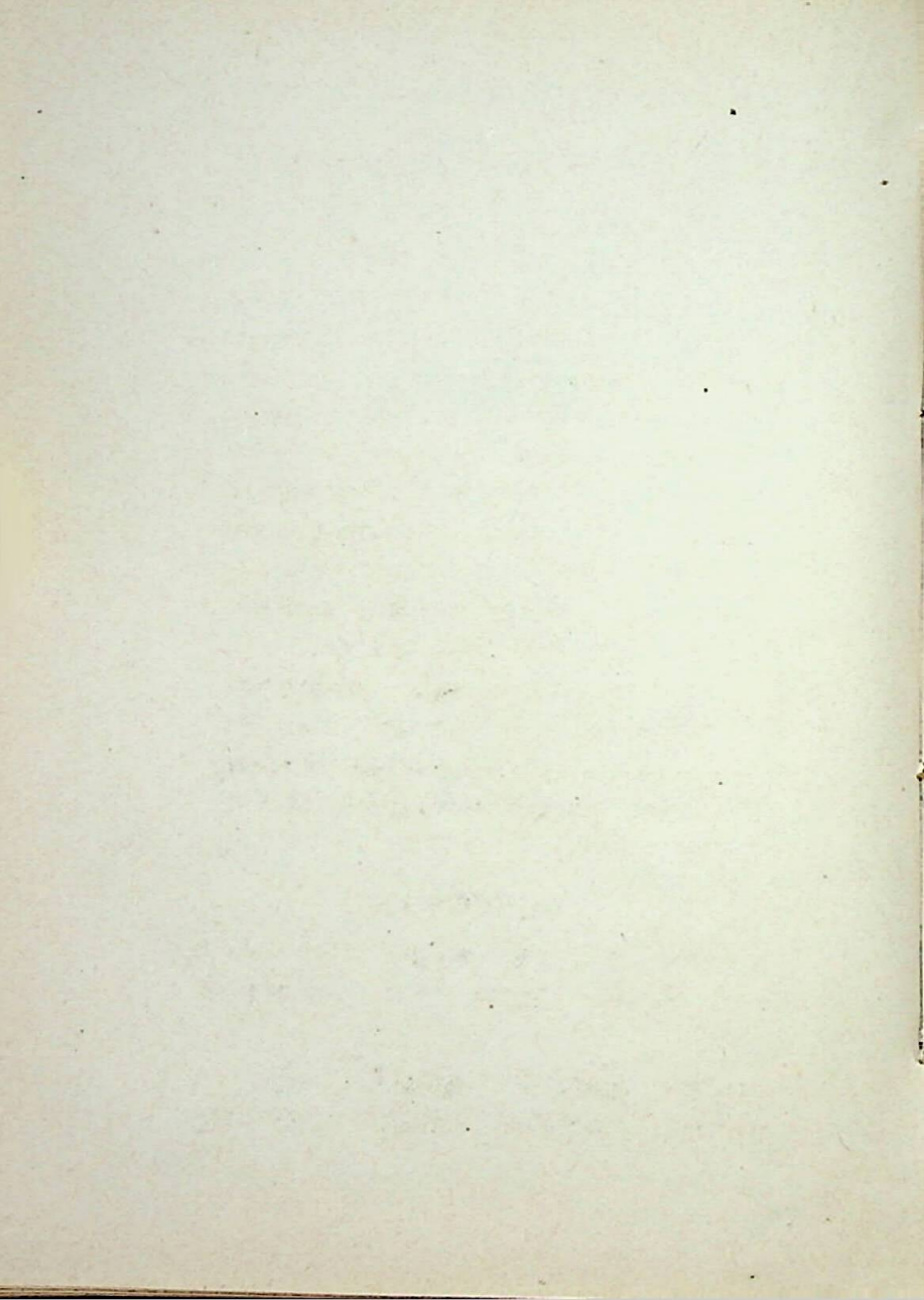
यजुर्वेदिनां पूजाहोमप्रयोगानुक्रमः

गणेशं पूजयेदादौ स्वस्तिपुण्याहवाचनम् ।
मातृणां पूजनं कार्यं नांदीश्राद्धमतः परम् ॥
आचार्यं वरयित्वाथ ब्रह्माणं गाणपत्यकम् ।
सदस्य मृत्विजश्चैव जापकान्वरयेत्ततः ।
दिग्रक्षणं ततः कार्यं पञ्चगव्यं यथाविधि ॥
भूमिं संपूज्य विधिवत् तत्र संस्कारपञ्चकम् ।
स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य कलशान् स्थापयेत् क्रमात् ॥
मूर्त्यग्न्युत्तारणं प्राण-प्रतिष्ठा स्थापनावर्चनम् ।
ग्रहादीन् स्थापयित्वाथ स्थापयेद्रुद्रकुम्भकम् ॥
ब्रह्मासनं ततो दत्वा कारयेत्कुशकण्डिकाम् ।
लिङ्गोक्तैर्नाम मन्त्रैर्वा यथाविधि यथाक्रमम् ॥
देवता ग्रहहोमं च यथा संख्यपुरः सरम् ।
पूजा स्विष्टं नवाहुत्यो बलिं पूर्णाहुतिस्तथा ॥
संस्रवादिविमोकान्तं होमशेषं समापयेत् ।
श्रेयः सम्पाद्य दानं च ह्यभिषेको विसर्जनम् ॥
विप्राशिषः प्रगृह्णीयात्तान्मिष्टान्नेन भोजयेत् ॥

(संस्कार भास्करे)

वस्त्रधारणविचारः

ब्राह्मणस्य सितं वस्त्रं माञ्जिष्ठं नृपतेः स्मृतम् ॥
पीतं वैश्यस्य, शूद्रस्य नीलं मलवदिष्यते ॥ १ ॥

(मनुः)

ईषद्धौतं स्त्रियाधौतं शूद्रधौतं तथैव च ॥
प्रसारितं यमदिशि गर्हितं सर्वकर्मसु ॥ २ ॥

(दक्षस्मृतिः)

आर्द्रवासा तु यः कुर्यात् जपहोमपरिग्रहान् ॥
सर्वं तद्राक्षसं विन्द्यात्कर्मजातं च यत्कृतम् ॥ ३ ॥
यज्जले शुष्कवस्त्रेण स्थले चैवार्द्रवाससा ॥
जपो होमस्तथा दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ४ ॥
न स्यूतेन न दग्धेन पारक्येण विशेषतः ।
मूषकोत्कीर्ण - जीर्णेन कर्मकुर्याद्विचक्षणः ॥ ५ ॥

(आपस्तम्बस्मृतिः)

होमदेवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा ।
नैकवस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाचमने जपे ॥ ६ ॥

(विष्णु पुराणे)

नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् भोजनं च सुरार्चनम् ॥

(व्याघ्रपादः)

वीर्यस्पृष्टं शवस्पृष्टं स्पृष्टं मूत्रपुरीषयोः ।
राजस्वलादि संस्पृष्टं आविकं तु सदा शुचिः ॥ ७ ॥

(धौम्यस्मृतौ)

कर्मसु वर्ज्यवस्त्राणि—संग्रहे

शयनं चार्द्रपादेन शुष्कपादेन भोजनम् ।
नोत्तरीयमधः कुर्यात् रात्रिवासस्तथा दिने ॥
कटिवेष्ट्यं तु यद्वस्त्रं पुरीषं येन वा कृतम् ।
मूत्रमैथुनकृद्वस्त्रं धर्मकार्ये विवर्जयेत् ॥

दीपस्थापनविचारः—यामले

आयुर्दः प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः ।
प्रत्यङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः ॥
न चैव स्थापयेद्दीपं साक्षाद्भूमौ कदाचन ।
न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम् ॥
दीपं दक्षिणतो दद्यात् पुरो नैव तु वामतः ।
वामतस्तु तथा धूपं अग्रे वा न तु दक्षिणे ॥

आचमनमम्—आह्निककारिकासु

स्नाने वस्त्रे च नैवेद्ये दद्यादाचमनं तथा ॥

घण्टानादः—कालिकापुराणे

स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा ।
घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेऽपि च ।
उत्तोल्य दृष्टिपर्यन्तं घण्टां वामदिशि स्थिताम् ।
वादयेत् वामहस्तेन दक्षहस्तेन चार्चयेत् ॥

पञ्चायतनदेवता-स्थापन-विचारः

गणेशपञ्चायतनम् :—

हेरम्बं तु यदा मध्ये ऐशान्यामच्युतं यजेत् ।
आग्नेय्यां पञ्चवक्त्रं तु नैऋत्यां द्युमणिं यजेत् ॥
वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः ॥ १ ॥

शिवपञ्चायतनम् :—

यदा तु शङ्करं मध्ये ऐशान्यां श्रीपतिं यजेत् ॥
आग्नेय्यां च तथा हंसं नैऋत्यां पार्वतीसुतम् ॥ २ ॥
वायव्यां च सदापूज्या भवानी भक्तवत्सला ॥

विष्णुपञ्चायतनम् :—

यदा तु मध्ये गोविन्दमीशान्यां शङ्करं यजेत् ।
आग्नेय्यां गणनाथं च नैऋत्यां तपनं तथा ॥
वायव्यामम्बिकां चैव यजेन्नित्यं समाहितः ॥

देवीपञ्चायतनम् :—

भवानीं तु यदामध्ये ऐशान्यां माधवं यजेत् ।
आग्नेय्यां पार्वतीनाथं नैऋत्यां गणनायकम् ॥
प्रद्योतनं तु वायव्यां यजमानः प्रपूजयेत् ॥

सूर्यपञ्चायतनम् :—

सहस्रांशुर्यदामध्ये ऐशान्यां पार्वती-पतिम् ।
आग्नेय्यामेकदन्तञ्च नैऋत्यामच्युतं तथा ॥
वायव्यां पूजयेद्देवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम् ॥

पञ्चायतनदेवतास्थापन प्रकारः

विष्णुः सूर्यः	शिवः गणेशः	शिवः गणेशः	विष्णुः शिवः	विष्णुः शिवः
शिवः	विष्णुः	सूर्यः	देवी	गणेशः
देवी गणेशः	देवी सूर्यः	देवी विष्णुः	सूर्यः गणेशः	देवी सूर्यः

पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारपूजामन्त्राः—भविष्यपुराणे

"आद्ययाऽऽवाहयेद्देवं ऋचा तु पुरुषोत्तमम् ।
द्वितीययाऽऽसनं दद्यात् पाद्यं चैव तृतीयया ॥
अर्घश्चतुर्थ्या दातव्यः पञ्चम्याचमनं तथा ।
षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतकम् ।
यज्ञोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गंधमेव च ॥
पुष्पं देयं दशम्या तु एकादश्या च धूपकम् ।
द्वादश्या दीपकं दद्यात् त्रयोदश्या निवेदनम् ॥
चतुर्दश्यां[1] नमस्कारं पञ्चदश्या प्रदक्षिणम् ।
षोडश्योद्[2]वासनं कुर्यात् शेषकर्माणि पूर्ववत् ॥"

[वृहत्पाराशरसंहिता]

अष्टाङ्गोऽर्घः

"आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा ।
यवाः सिद्धार्थकाश्चैव अर्घोऽष्टाङ्गः प्रकीर्तितः ॥"

---

१. "चतुर्दश्या तु ताम्बूलम् ।"

२. षोडश्यागन्धपुष्पयुक्तो नमस्कारश्च सह ।

पञ्चगव्यम्

"पञ्चगव्यं पवित्रं तु आहरेत्ताम्रभाजने ।
गायत्र्या चैव गोमूत्रं गन्धद्वारेण गोमयम् ॥
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णेति वै दधि ।
तेजोऽसिशुक्रमित्याज्यं देवस्यत्वा कुशोदकम् ॥
एभिश्च पञ्चद्रव्यैस्तु पञ्चगव्यं प्रचक्षते ।"

विष्णुधर्मे—

"गोमूत्रं भागतश्चार्द्धं शकृत्क्षीरस्य च त्रयम् ।
द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारिजः ॥"

सौभाग्यद्रव्याणि—

हरिद्रा कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् ।
कज्जलं कंठसूत्रादि सौभाग्यद्रव्यमुच्यते ॥

उद्वर्त्तनम्

रजनी सहदेवी च शिरीषं लक्ष्मणापि च ।
सहभद्रा कुशाग्राणि उद्वर्त्तनमिहोच्यते ॥

कौतुक द्रव्याणि—भविष्यपुराणे

"दूर्वा यवांकुराश्चैव वालकं चूतपल्लवाः ।
हरिद्राद्वय सिद्धार्थं शिखिपत्रोरगत्वचः ॥
कंकणौषधयश्चैताः कौतुकाख्या दश स्मृताः ॥

पूजने विशेषः

मध्यमानामिकामध्ये पुष्पं संगृह्य पूजयेत् ।
अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत् ॥

बिल्वपत्रे विशेषः

त्रिजटापत्रकैकेन हेरम्बं हरिमर्चयेत् ।
कैवल्यं तस्य तेनैव शक्तिपूजा विशेषतः ॥

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथादेयं बिल्वपत्रमधोमुखम् ॥

वर्ज्यपुष्पाणि—पाद्मे

केशकीटादिविद्धानि निशि पर्युषितानि च ।
स्वयं पतितपुष्पाणि त्यजेत्परहृतानि च ॥

प्रतिमास्नानविचारः—तत्त्वसागरे

प्रतिमापट्टयन्त्राणां नित्यं स्नानं न कारयेत् ।
कारयेत्पर्वदिवसे यथामलनिवारणम् ॥

नाममन्त्रविचारः—ब्राह्मे

ओंकारादिसमायुक्तं नमस्कारान्तसंयुतम् ।
स्वनामसर्वसत्त्वानां मन्त्र इत्यभिधीयते ॥

जपे कामनाभेदेनाङ्गुलिभेदः

अङ्गुष्ठं मोक्षदं विद्यात् तर्जनी शत्रुनाशिनी ।
मध्यमा धनदा शान्तिकरा ह्येषानामिका ॥
कनिष्ठाकर्षणे शस्ता जपकर्मणि शोभने ।
अङ्गुष्ठेन जपं जप्यमन्यैरङ्गुलिभिः सह ।
अङ्गुष्ठेन विनाकर्म कृतं तदफलं भवेत् ॥
स्वयं वामेन हस्तेन जपमालां न संस्पृशेत् ।
अदीक्षितो द्विजो वापि स्पृष्टश्चेच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥
न धारयेत्करे मूर्ध्नि कण्ठे च जपमालिकाम् ।
जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले न्यसेत् ॥
गुरुं प्रकाशयेद्धीमान् मन्त्रं नैव प्रकाशयेत् ।
अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥
कम्पनात्सिद्धिहानिः स्याद्धूननं बहुदुःखकृत् ।
छिन्नसूत्रे भवेन्मृत्युस्तस्माद्यत्नपरो भवेत् ॥

[पुरश्चरणदीपिका]

वस्त्रेणाच्छादितकरं दक्षिणं यः सदाजपेत्।
तस्य स्यात्सफलं जाप्यं तद्धीनमफलं भवेत्॥
भूतराक्षसवेतालाः सिद्धगन्धर्व चारणाः।
हरन्ति प्रकटं यस्मात्तस्माद्गुप्तं जपेत्सुधीः॥

[आचारार्थे-वृद्धमनुः]

देवभेदेनवर्ज्याक्षतादीनि–पटले

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम्।
न दूर्वया यजेद्देवीं विल्वपत्रैर्न भास्करम्॥
उन्मत्तमर्कपुष्पं च विष्णोर्वर्ज्यं सदाबुधैः।
फलं च कृमिसंयुक्तं प्रयत्नात्तद्विवर्जयेत्॥

मन्त्र महोदधौ—

"अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः।
बंधूकं केतकीं कुन्दं केशरं कुटजं जपाम्।
शङ्करे नार्पयेद्विद्वान् मालतीं यूथिकामपि॥"

देवप्रतिमा प्रतिष्ठाविचारः—स्कान्दे

शालिग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते।

भविष्यपुराणे—

वाणलिङ्गानि राजेन्द्र ख्यातानि भुवनत्रये।"
न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषामावाहनं तथा॥

षोडशोपचाराः—ज्ञानमालायाम्

नागदेवः—

"आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धामाल्यादिभिःक्रमात्॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणाम्।
उद्वासनं षोडशकं एवं देवार्चने विधिः॥"

पञ्चोपचाराः

"ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पञ्च पूजोपचारकाः॥"

अन्यच्च—

"गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यमिति पञ्चकम्।"

पञ्चरत्नानि

नीलकं वज्रकं चेति पद्मरागश्च मौक्तिकम्।
प्रवालं चेति विज्ञेयं पञ्चरत्नं मनीषिभिः॥

अन्यच्च—

सुवर्णं रजतं मुक्ता राजावर्तं प्रवालकम्।
रत्नपञ्चकमाख्यातं धर्मशास्त्रे स्फुटं बुधैः॥
कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम्।
अभावे सर्वरत्नानां हेम सर्वत्र योजयेत्॥

पञ्चपल्लवानि

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्ष चूतन्यग्रोधपल्लवाः।
पञ्चपल्लवमित्युक्तं सर्वकर्मणि शोभनम्॥

सप्तधान्यानि

यव-गोधूम-धान्यानि तिलाः-कङ्गु-कुलत्थकाः।
श्यामकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥

अष्टादशधान्यानि—हेमाद्रौ

यव-गोधूम-धान्यानि तिलाः कंगु-कुलत्थकाः।
माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्याम-सर्षपाः॥
गवेधुकाश्च नीवारा आढक्योऽथ सतीनकाः।
चणकाश्चीनकाश्चैव धान्यमष्टादशैव तु॥

समिधाप्रमाणम्—कात्यायनः

प्रादेशान्नाधिका नोना न च शाखासमायुता।
न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु तु विजानता॥

पवित्रलक्षणम्

अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च।
प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्रकुत्रचित्॥

[छन्दोगपरिशिष्टे]

पवित्रप्रयोजनम्

"इन्द्रवज्रं हरेश्चक्रं त्रिशूलं शंकरस्य च।
दर्भरूपेण ते त्रीणि पवित्रच्छेदनानि च॥

पुरा वृत्रवधे प्राप्ते रक्तपूर्णा वसुन्धरा।
द्वौ दर्भौ देवतात्रीणि पवित्रच्छेदनानि च॥

प्रोक्षणीलक्षणम्

वारणं पाणिपात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्।
पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्॥

आज्यस्थाली

आज्यस्थाली कांस्यमयी यद्वा ताम्रमयी तथा।
प्रादेशमात्रदीर्घा सा ग्रहीतव्याऽव्रणा शुभा॥

[कर्मप्रदीपे]

चरुस्थाली

दृढा प्रादेशमात्रोर्ध्वं तीर्यङ्नातिबृहन्मुखी।
मृण्मयौदुंम्बरी वापि चरुस्थाली प्रशस्यते॥

[रत्नमालायाम्]

स्रुवलक्षणम्

खादिरादेः स्रुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः।
अंगुष्ठपर्वखातं तत् त्रिभागं दीर्घपुष्करम्॥

[संस्कारभास्करे]

स्रुवधारण प्रमाणम्

अग्रान्मध्यस्तु यन्मध्यं मूलान्मध्यस्तु मध्यमम् ।
स्रुवं च धारयेत् विद्वान् आयुरारोग्यदं सदा ॥
अग्निः सूर्यश्च सोमश्च विरंचिरनिलो यमः ।
एते वै षड्देवाश्च चतुरंगुलभागिनः ॥
अग्निभागेऽर्थनाशाय सूर्ये व्याधिकरो भवेत् ।
सोमे च निष्फलो धर्मो विरिंचिः सर्वकामदः ॥
अनिले रोगमाप्नोति यमे मृत्युः प्रजायते ।

[कारिकायाम्]

प्राणायामप्रकारः

दक्षिणे रेचयेद्वायुं वामेनापूरितोदरम् ।
कुम्भकेन जपं कुर्यात् प्राणायामं भवेदिति ॥
पञ्चांगुलिभिर्नासाग्रं पीडयेत्प्रणवेन वै ।
मुद्रेयं सर्वपापघ्नी वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥
कनिष्ठानामिकांगुष्ठैर्यतेश्च ब्रह्मचारिणः ॥

[प्रयोगपारिजाते]

नवसमिधः समिल्लक्षणञ्च

"पलाशखदिराश्वत्थशम्युदुम्बरजा समित् ।
अपामार्गार्कदूर्वाश्च कुशाश्चापरे विदुः ॥
सत्वचः समिधः कार्या ऋजुश्लक्ष्णाः समास्तथा ।
शस्ता दशांगुलास्तास्तु द्वादशांगुलिकास्तु वा ॥
आर्द्राः पक्वाः समच्छेदास्तर्जन्यंगुलिवर्तुलाः ।
अपाटिताश्चाद्विशाखाः कृमिदोषविवर्जिताः ॥
ईदृशा होमयेत् प्राज्ञः प्राप्नोति विपुलां श्रियम् ॥"

कुशभेदः

अप्रसूताः स्मृतादर्भाः प्रसूतास्तु कुशाः स्मृताः ।
समूलाः कुतपाः प्रोक्ताश्छिन्नाग्रास्तृणसंज्ञिताः ॥

[स्मृत्यर्थसारे]

यज्ञीयवृक्षाः—वायुपुराणे

पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थविकङ्कताः।
उदुम्बरस्तथाबिल्वश्चन्दनो यज्ञियाश्चये॥
सरलो देवदारुश्च शालश्च खदिरस्तथा।
समिदर्थं प्रशस्ताः स्युरेते वृक्षा विशेषतः॥
ग्राह्याः कण्टकिनश्चैवं यज्ञिया एव केचन।
पूजिताः समिदर्थेषु पितॄणां वचनं यथा॥

प्रयोगरत्ने, संग्रहे च—कर्मविशेषे अग्निनामानि

"पावको लौकिके ह्यग्निः प्रथमः संप्रकीर्तितः।
अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने विधीयते॥
ततः पुंसवने ज्ञेयः पावमानस्तथैव च।
सीमंते मंगलो नाम प्रबलो जातकर्मणि॥
नाम्निवै पार्थिवो ह्यग्निः प्राशने तु शुचिः स्मृतः।
सभ्यो नाम स चौलेषु व्रतादेशे समुद्भवः॥
गोदाने सूर्यनामाग्निः विवाहे योजको मतः।
आवसथ्ये द्विजो ज्ञेयः वेश्वदेवे तु रुक्मकः॥
प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः।
देवानां हव्यवाहश्च पितॄणां कव्यवाहनः॥
शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके बलवर्द्धनः।
पूर्णाहुत्यां मृडो नाम क्रोधाग्निश्चाभिचारके॥
वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु दूषकः।
कुक्षौ तु जाठरो ज्ञेयः क्रव्यादो मृतदाहके॥
वह्निनामा लक्षहोमे कोटिहोमे हुताशनः।
वृषोत्सर्गेऽध्वरो नाम शुचये ब्राह्मणः स्मृतः॥
समुद्रे वाडवो ह्यग्निः क्षये संवर्त्तकस्तथा।
ब्रह्मा वे गार्हपत्यश्च ईश्वरो दक्षिणस्तथा॥

विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रे त्रयोऽग्नयः ।
ज्ञात्वैवमग्निनामानि गृह्यकर्म समाचरेत् ॥
[प्रयोगरत्ने संग्रहे च]

अग्निधमने साधनानि

न वस्त्रवायुना कुर्यात् पाणिशूर्पस्रुवादिभिः ।
न कुर्यादग्निधमनं न कुर्या द्व्यजनादिना ॥
मुखेनैव धमेदग्निं मुखदेशात् व्यजायत ।
अन्धो बुधः सधूमे तु जुहुयात् यो हुताशने ॥
यजमानो भवेदन्धः सपुत्र इति च श्रुतिः ॥
[वायुपुराणे]

अग्निजिह्वानामानि—स्कन्दपुराणे

याभिर्हव्यं समश्नाति हुतं सम्यग् द्विजोत्तमैः ।
काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता चैव सुधूम्रवर्णा ।
स्फुलिंगिनी विश्वरुचिस्तथाच चलायमाना इति सप्तजिह्वाः ॥
एताश्चोक्ता विशेषेण ज्ञातव्या ब्राह्मणे न तु ।
आहूय चैव होतव्यो यो यत्र विहितो विधिः ॥
अविदित्वा तु यो ह्याग्निं होमयेदविचक्षणः ।
न हुतं न च संस्कारो न तु यज्ञफलं भवेत् ॥

जिह्वैककरणम्

"जिह्वैककरणं प्रोक्तं सप्तानामेकया ऋचा ।
समुद्रादूर्मिरनया होतव्यं कर्मसिद्धये ॥"

कुण्डे जिह्वास्थानानि—वसिष्ठकल्पे

कुण्डस्य पूर्वदिग्भागे काली जिह्वा प्रकीर्तिता ।
आग्नेये तु करालाख्या दक्षिणे तु मनोजवा ॥
सुलोहिता नैऋते तु धूम्रवर्णा तु वारुणे ।
स्फुलिंगिनी तु वायव्ये सौम्ये विश्वरुचिस्तथा ॥

अग्निस्वरूपम्

अधोमुख ऊर्ध्वं पादः प्राङ्मुखो हव्यवाहनः ।
तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुतिः कुत्र दीयते ॥

सपवित्राम्बुहस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणम् ।
हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा बिभेति सम्मुखो भवेत् ॥

[कारिकायाम्]

समिद्धेऽग्नौ होतव्यम—कात्यायनः

योऽनर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गारिणि च मानवः ।
मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चैव जायते ॥
तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कथञ्चन ॥

ग्रह होमसंख्या—मात्स्ये

होमादिग्रहपूजायां शतमष्टोत्तरं स्मृतम् ।
अष्टाविंशतिरष्टौ वा यथाशक्ति विधीयते ॥

द्रव्याणां प्रतिनिधयः

दध्यलाभे पयो ग्राह्यं मध्वलाभे तथा गुडः ।
घृतप्रतिनिधिं कुर्यात् पयो वा दधि वा नृप ! ॥

[विष्णुधर्मोत्तरे]

मृगीमुद्रालक्षणम्

मिलितानामिकांगुष्ठमध्यमांगुलीर्योजयेत् ।
शेषांगुली उच्छ्रितेति मृगीमुद्रेयमीरिता ॥

ग्रन्थिविमोकेन पवित्रत्यागः

नित्ये नैमित्तिके वापि कर्मोपक्रमणे द्विजः ।
धृतं पवित्रं कर्मान्ते ग्रन्थिं मुक्त्वातु तत्यजेत् ॥

[प्रयोगपारिजाते]

स्नाने दाने जपे होमे स्वाध्याये पितृतर्पणे ।
सपवित्रौ सदर्भौ वा करौ कुर्वीत नान्यथा ॥

[हेमाद्रौ-शातातपः]

गायत्री शब्दस्यार्थः—नागदेवः

“गायन्तं त्रायते यस्मात् गायत्री तेन उच्यते ।”

जपलक्षणानि नृसिंहपुराणे

विश्वामित्रः—

त्रिविधो जपयज्ञः स्यात् तस्य भेदं निबोधत।
वाचिकश्च उपांशुश्च मानसस्त्रिविधः स्मृतः॥
यदुच्चनीचस्वरितैः शब्दैः स्पष्टपदाक्षरैः।
मन्त्रमुच्चारयेद्वाचा वाचिकोऽयं जपः स्मृतः।
शनैरुच्चारयेन्मन्त्रं ईषदोष्ठौ च चालयेत्॥
अपरैर्न श्रुतः किञ्चित्स उपांशुर्जपः स्मृतः।
धिया यदक्षरश्रेण्या वर्णाद्वर्णं पदात्पदम्॥
शब्दार्थचिन्तनं भूप! कथ्यते मानसोजपः॥

नमस्कारविषये-जमदग्निराह—

देवताप्रतिमां दृष्ट्वा यतिं दृष्ट्वा त्रिदण्डिनम्।
नमस्कारं न कुर्याच्चेत्प्रायश्चिती भवेद्द्विजः॥

निषेधः—दूरस्थं जलमध्यस्थं धावन्तं धनगर्वितम्।
स्नातं मूढं चाशुचिकं नमस्कारांस्तु वर्जयेत्॥
सभायां यज्ञशालायां देवतायतनेषु च।
प्रत्येकं तु नमस्कारो हन्ति पुण्यं पुराकृतम्॥
यदि स्नातो भवेद्विप्रो मस्तकं तिलकं विना।
नमस्कारं न कुर्यात्तं इति प्रोचुर्मनीषिणः॥

कर्मान्ते ब्राह्मणभोजन संख्या

गर्भाधानादि संस्कारे ब्राह्मणान् भोजयेद्दश।
शतं विवाहसंस्कारे पञ्चाशन्मेखलाविधौ॥
आवसथ्ये त्रयस्त्रिंशच्छ्रौताधाने शतात्परम्।
अष्टकं भोजयेद्भक्त्या तत्तत्संस्कारसिद्धये॥
आग्रयणे प्रायश्चित्ते ब्राह्मणान् दशपञ्च च॥

—००१००—
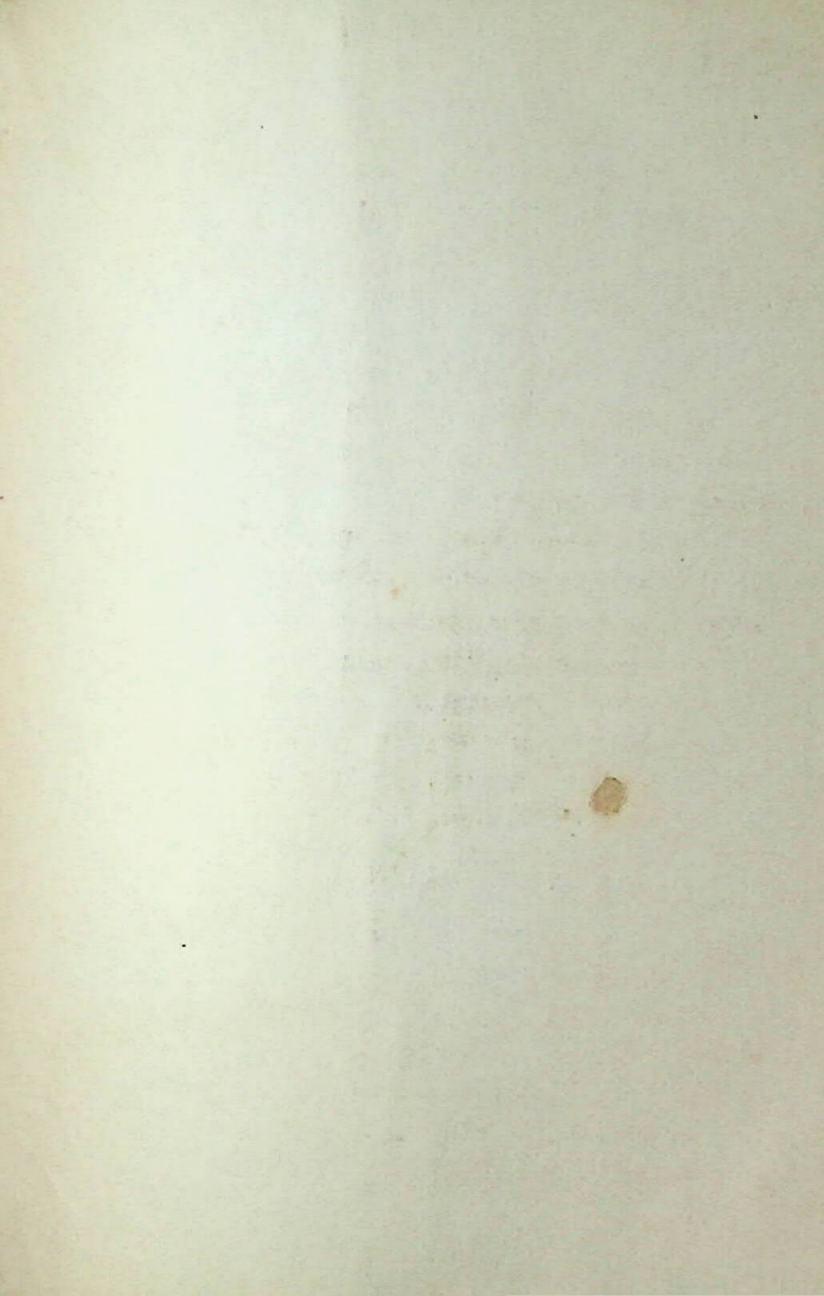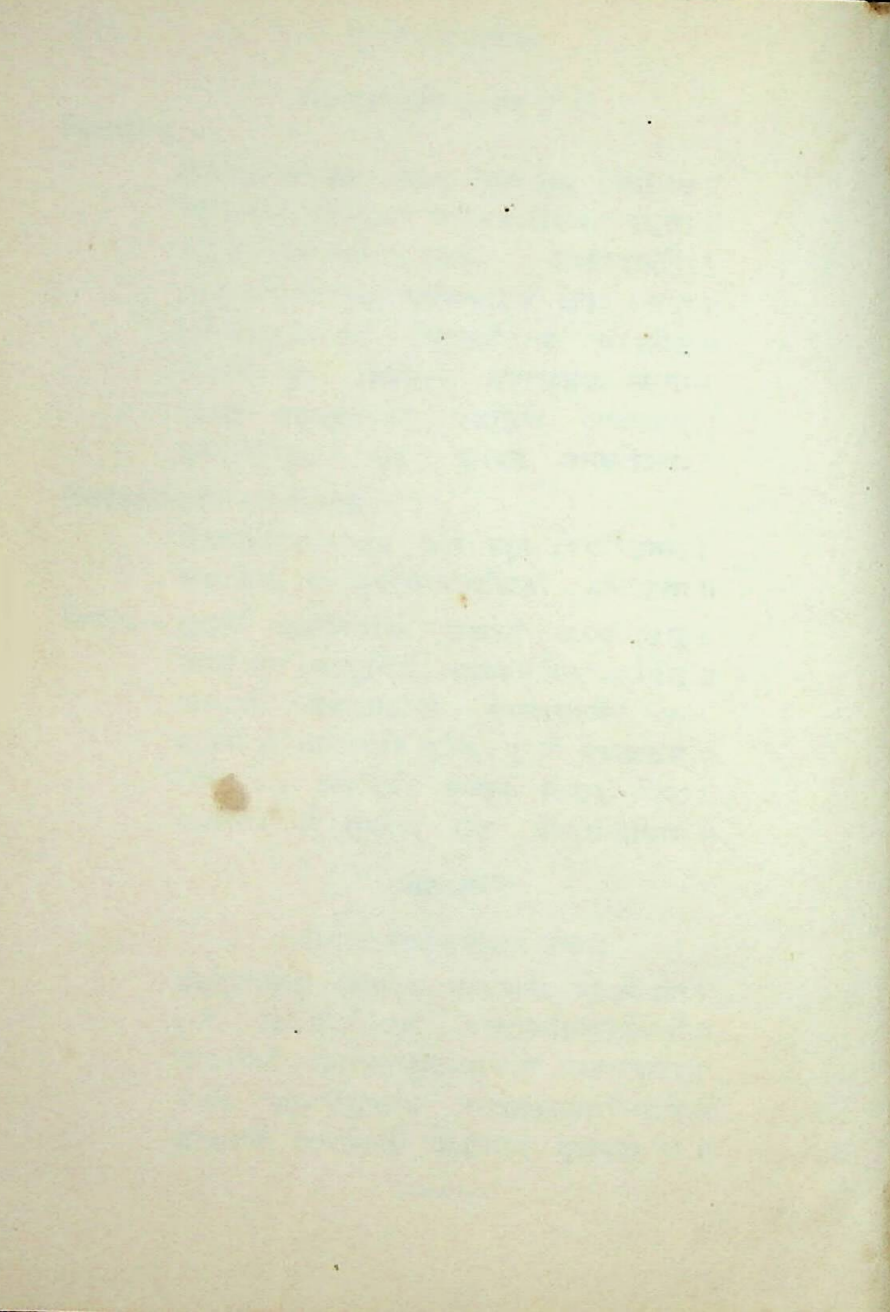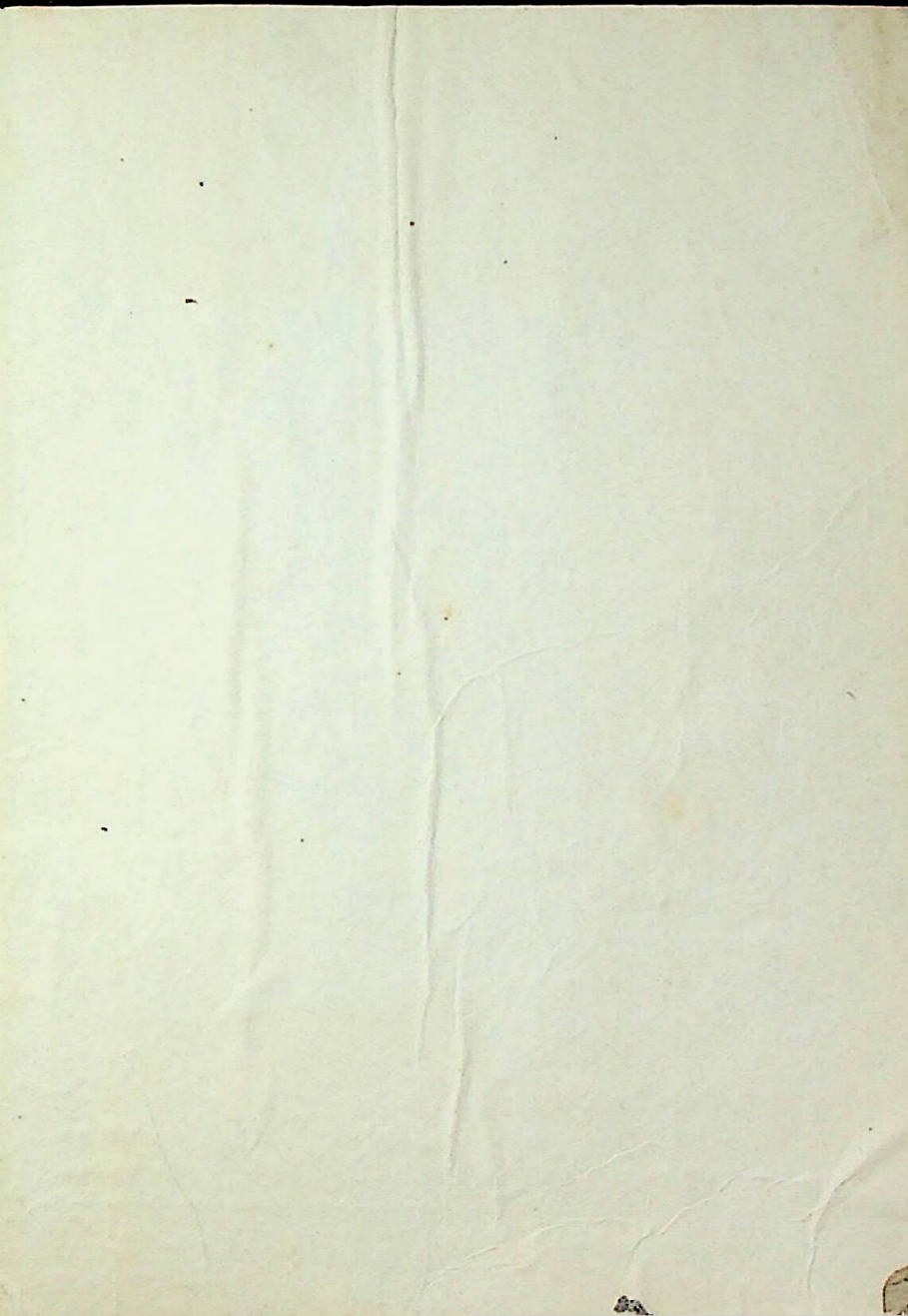
कर्मकाण्ड ग्रन्थाः

पारस्करगृह्यसूत्रं । कात्यायन सूत्रीय श्राद्ध, शौच, स्नान, भोजन तथा कल्पसूत्र । सं० पं० अनन्तराम डोगरा शास्त्री ५–००

पारस्करगृह्यसूत्रं । प्रथम दो काण्ड पर हरिहर भाष्य तथा गदाधर भाष्य एवं तृतीय कांड पर हरिहर तथा जयराम भाष्य । गोपाल शास्त्री नेने कृत भूमिका, नोट्स तथा सुधाकर मालवीय कृत हिन्दी व्याख्या प्र. सं. १५–००

कातीयेष्टिदीपकः दर्शपौर्णमासपद्धतिः । नित्यानन्दपंत पर्वतीय कृत १५–००

पौरोहित्यकर्मसारः । टिप्पणीकार तथा संकलनकर्ता रमाकान्त शर्मा तीन भाग दो जिल्द में । प्रथम ३–०० द्वितीय तृतीय ७–०० सम्पूर्ण १०–००

अन्त्यकर्मदीपकः नित्यानन्दपंत कृत अशौचकाल निर्णय, प्रेतकर्म तथा ब्रह्मीभूत यति-कर्म निरूपण । तृतीय संस्करण २५–००

संस्कारदीपकः नित्यानन्दपंत पर्वतीय कृत । १–३ भाग संपूर्ण १७५–००
प्रथम भाग ५०–०० द्वितीय भाग ५०–०० तृतीय भाग ७५–००

वर्षकृत्यदीपकः, कालनिर्णय-व्रतोद्यापन सहितः । नित्यानन्दपंत पर्वतीय कृत ४०–००

बौधायनधर्मसूत्रम् । गोविन्द स्वामी कृत 'विवरण' टीका ए० चिन्नस्वामी शास्त्री कृत भूमिका, नोट्स, वर्णानुक्रमणिका आदि उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका १००–००

गोभिलगृह्यसूत्रम् । मुकुन्द झा बक्शी कृत संस्कृत टीका डॉ० सुधाकर मालवीय कृत हिन्दी टीका यन्त्रस्थ

शुल्बसूत्रम् । कात्यायन कृत । 'कर्कभाष्य' 'महिधर वृत्ति' सम्पादक गोपाल शास्त्री नेने तथा अनन्तराम शास्त्री डोंगरे ५–००

श्राद्धविवेकः । रुद्रधर कृत । अनन्तराम शास्त्री डोंगरे कृत नोट्स आदि द्वितीय संस्करण ३०–००

कृततत्त्वसंग्रहः । विज्ञानेश्वर उपनाम तूफानी शर्मा कृत । सम्पादक रामचन्द्र झा २०–००

पितृभक्ति । दत्तोपाध्याय कृत । सं० अशोक चटर्जी शास्त्री १५–००